हिन्दी यू एस ए की त्रैमासिक पत्रिका

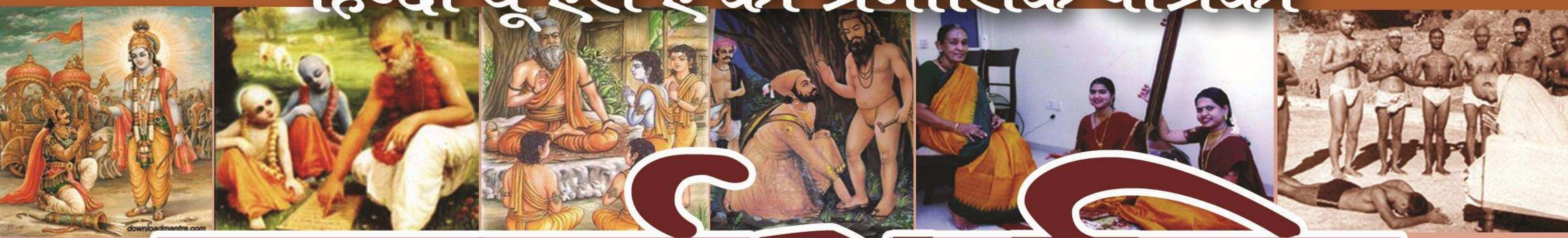

कर्मभूमि

वर्ष ६ अंक १७ मई २०१३

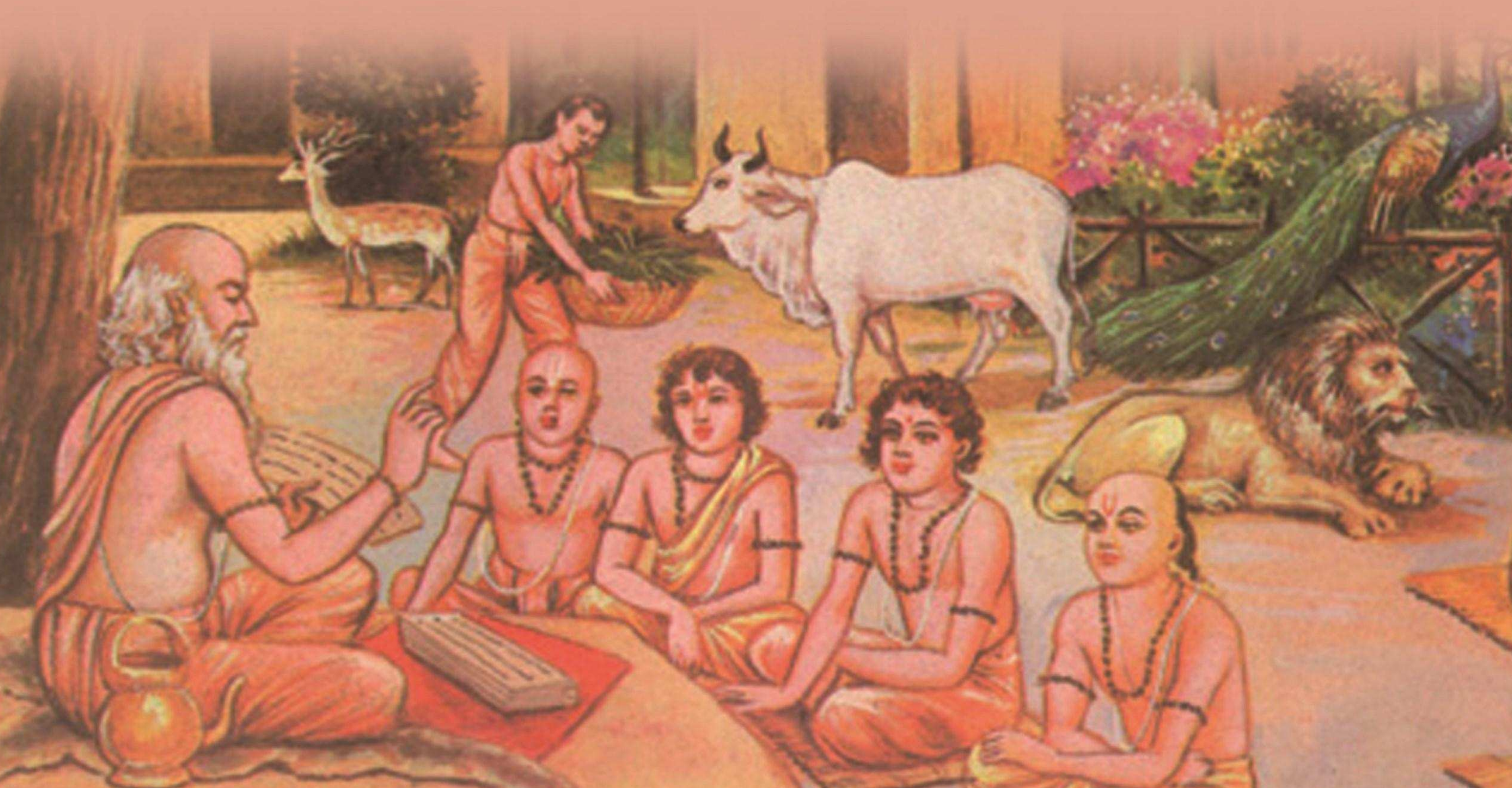

द्वादश हिन्दी महोत्सव के अवसर पर

विद्यार्थी विशेषांक

TabTor™

The World's Most Innovative Math Program

Personalized for Every Student

with

Instructor Service & Point Of Learning Analytics

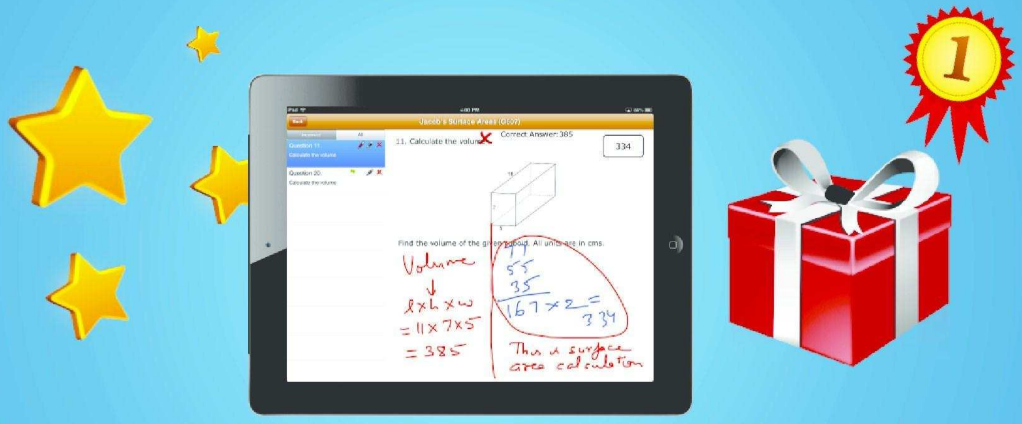

Based on the Common Core State Standard (CCSS)
With Teaching, Grading and Reward Programs

FREE TRIAL
NO CREDIT CARD REQUIRED

Available on the App Store
Requires iPad

www.tabtor.com

Only $49.99/Month
To get $10/month discount, Use referral code:

hindiusa

(919) MATH4U-6 | sales@tabtor.com

www.hindiusa.org

1-877-HINDIUSA

स्थापना: नवंबर २००१ संस्थापक: देवेन्द्र सिंह

हिन्दी यू.एस.ए. के किसी भी सदस्य ने कोई पद नहीं लिया है, किन्तु विभिन्न कार्यभार वहन करने के अनुसार उनका परिचय इस प्रकार है:

निदेशक मंडल के सदस्य

देवेन्द्र सिंह (मुख्य संयोजक) - 856-625-4335

रचिता सिंह (शिक्षण तथा प्रशिक्षण संयोजिका) - 609-248-5966

राज मित्तल (धनराशि संयोजक) - 732-423-4619

अर्चना कुमार (सांस्कृतिक कार्यक्रम संयोजिका) - 732-372-1911

माणक काबरा (प्रबंध संयोजक) - 718-414-5429

सुशील अग्रवाल (पत्रिका 'कर्मभूमि' संयोजक) - 908-361-0220

शिक्षण समिति

रचिता सिंह - कनिष्ठा १, उच्चस्तर २

धीरज बंसल - कनिष्ठा २

मोनिका गुप्ता - प्रथमा १ स्तर

अर्चना कुमार - प्रथमा २ एवं मध्यमा २

रश्मि सुधीर - मध्यमा १

सुशील अग्रवाल - उच्च स्तर १

पाठशाला संचालक/संचालिकाएँ

एडिसन: माणक काबरा (718-414-5429), शिव आर्य (908-812-1253), संजीव गुप्ता (732-216-1786)

सा. ब्रुंस्विक: उमेश महाजन (732-274-2733),

पंकज जैन (908-930-6708), प्रतीक जैन (646-389-5246)

पाठशाला संचालक/संचालिकाएँ

मॉन्टगोमरी: अद्वैत तारे (609-651-8775)

पिस्कैटवे: दीपक लाल, नूतन लाल (732-763-3608)

ई. ब्रुंस्विक: मैनो मुर्मु (732-698-0118)

वुडब्रिज: अर्चना कुमार (732-372-1911)

जर्सी सिटी: सुब्बु नटराजन (201-984-4766)

प्लेंसबोरो: गुलशन मिर्ग (609-451-0126)

लावरेंसविल: जगदीश वज़ीरानी (609-647-4906)

ब्रिजवॉटर: सुरुची नायर (908-393-5259)

चैरी हिल: देवेंद्र सिंह (609-248-5966)

चैस्टरफील्ड: शिप्रा सूद (609-920-0177)

फ्रैंक्लिन: दलवीर राजपूत (732-422-7828)

होमडेल: सुषमा कुमार (732-264-3304)

मोनरो: सुनीता गुलाटी (732-656-1962)

नॉरवॉक: बलराज सुनेजा (203-613-9257), विक्रम भंडारी (203-434-7463)

नॉर्थ ब्रुंस्विक: गीता टंडन (732-789-8036)

स्टैमफर्ड: मनीष महेश्वरी (203-522-8888)

हम को सारी भाषाओं में हिन्दी प्यारी लगती है, नारी के मस्तक पर जैसे कुमकुम बिंदी सजती है।

संपादकीय

प्रिय पाठक गण,

कर्मभूमि पत्रिका का विद्यार्थी विशेषांक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए एक बार फिर अत्यंत गर्व की अनुभूति हो रही है। सभी पाठक हिंदी यू.एस.ए. की अनवरत १२ वर्षों की पावनतम यात्रा से भलीभाँति परिचित हैं। आने वाली पीढ़ी में हिन्दी भाषा द्वारा संस्कारों का संचार व प्रसार करना ही इस संस्था का मुख्य उद्देश्य रहा है। प्रस्तुत विशेषांक इसी उद्देश्य की भलीभाँति पुष्टि करता है। चूंकि अमेरिका में पले-बड़े बच्चों को हिंदी लिखने व बोलने के लिये प्रेरित करना ही हमारा उद्देश्य रहा है, और यह विशेषांक हिंदी यू.एस.ए. के इसी उद्देश्य की पूर्णता का द्योतक है। इस पत्रिका के प्रत्येक पृष्ठ को पढ़ते हुए आप देखेंगे कि हिंदी यू.एस.ए. ने अतुलनीय कार्य कर दिखाया है। अधिकतर लेख बच्चों की लेखनी द्वारा ही प्रस्तुत किए गए हैं। हमारी सोच व व्यवहार ही है जो समाज में हमारा चरित्र व स्थान निर्धारित करती है। यदि हम भावी पीढ़ी को अपनी भाषा, संस्कृति व संस्कारों की सकारात्मक सोच दे पाएँ तभी हमारा जीवन सफल होगा। हमने इस अंक में अपने विद्यार्थियों को हिन्दी भाषा में सोचने व लिखने का एक लघु प्रयास किया है। और अच्छे उद्देश्य के लिये प्रयास कभी असफल नहीं होते।

विद्यार्थी काल तो बाल्याकाल से ही आरम्भ होकर जीवन के अंतिम क्षणों तक अनवरत अपनी यात्रा करता रहता है। परंतु यदि बाल्याकाल में बच्चों के सही दिशा प्रदान की जाए तो वे कच्चे घड़े की भाँति अपनी सुदृढ़ आकृति प्राप्त कर लेते हैं। गुरु शिष्य का स्वस्थ सम्बंध पौराणिक काल से आधुनिक काल से चला आ रहा है, भले ही आधुनिक काल तक आते-आते इस सम्बंध में पहले जैसे भाव न रह गए हों। इस अंक के कुछ लेखों में वर्तमान काल के विद्यार्थियों को इसी सम्बंध की कोमलता व भावुकता को समझाने का प्रयास किया गया है। यह अति आवश्यक है कि यह आदर भाव पौराणिक उदाहरणों द्वारा समझा जाए।

युवा लेखकों ने बहुत ही सुंदरता से विद्यार्थी शब्द को अपनी नन्हीं लेखनी द्वारा परिभाषित किया है। इसका प्रमाण “विद्यार्थी - मेरी दृष्टि में” नामक लेख में भलीभाँति देखने को मिलेगा। हिन्दी यू.एस.ए. की कक्षाओं में पढ़ रहे बच्चों ने बहुत ही सूझबूझ से हिंदी सीखने के महत्व, भारतीय संस्कृति, पढ़ाई का प्रबंध व अपनी विभिन्न यात्राओं के अनुभवों को अपने नन्हें शब्दों द्वारा प्रस्तुत किया है। नन्हें बच्चों द्वारा की गई चित्रकारी की झलकियाँ भी इस अंक में दृष्टिगोचर होती हैं। नन्हें-मुन्ने बच्चों को चित्रकारी करते हुए खेल-खेल में हिन्दी भाषा सिखाना हिंदी यू.एस.ए. की शिक्षिकाओं का ही कौशल है। शिक्षा का हिन्दू दर्शन, स्वतंत्रता बनाम स्वछंदता, आवश्यकता है आज समाज को नया दृष्टिकोण अपनाने की, दूसरों के साथ अच्छे संबंध

बनाने का रहस्य, सफलता की परिभाषा, भारतीय संस्कृति के तथ्य इत्यादि लेखों व बच्चों की कलम से संजोया यह अंक हिन्दी यू.एस.ए. का एक प्रयास है।

इस अंक की विशेषता है कि इसमें अधिकतर लेख बच्चों द्वारा ही लिखे गए हैं। आप अवश्य पढ़िएगा। सम्भव है कुछ लेखों में व्याकरण या वाक्य संरचना सही न हो, क्योंकि बच्चों ने जैसा लिखा हमने मौलिकता का ध्यान रखते हुए आपके सम्मुख प्रस्तुत कर दिया। उसके लिये हम क्षमाप्रार्थी रहेंगे। हिन्दी यू.एस.ए. आपकी आलोचनाओं व समालोचनाओं का सदैव स्वागत करता है। अपनी प्रतिक्रियाओं से हमें अवगत करवाएँ। आपकी प्रतिक्रियाएँ हमारे लिए प्रेरणा स्त्रोत हैं। आप के सराहनीय शब्द नन्हें बच्चों के उत्साहवर्धन में सहयोगी होंगे।

धन्यवाद

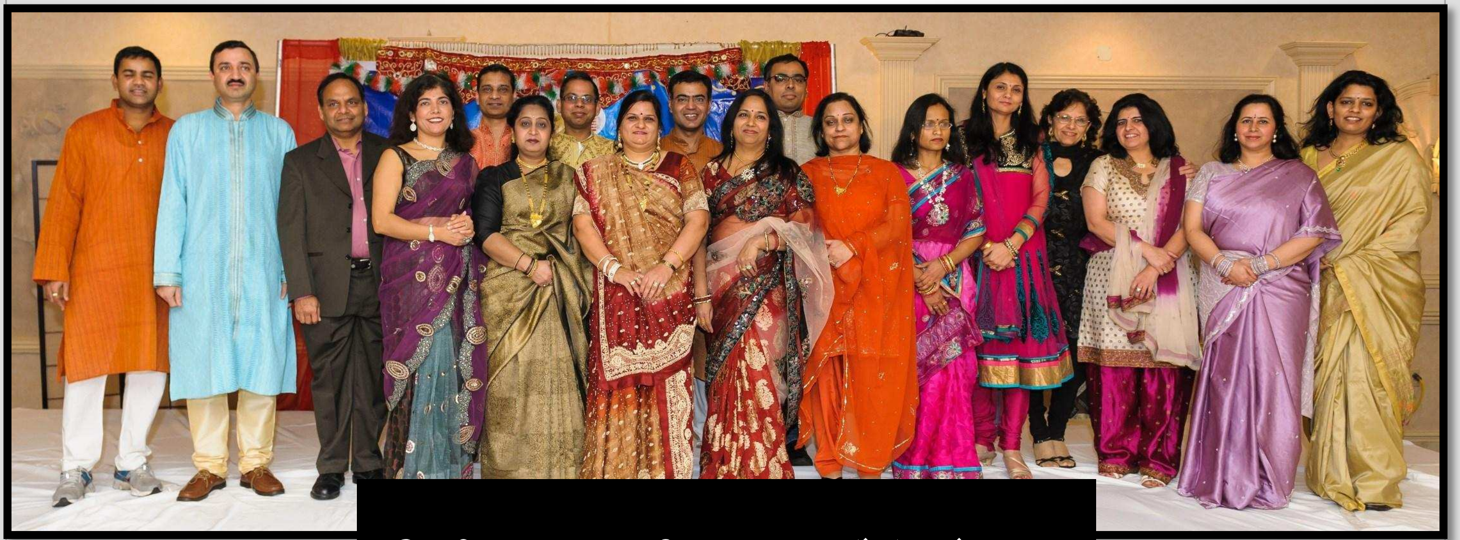

हिन्दी यू.एस.ए. की पाठशालाओं के संचालक

हिन्दी यू.एस.ए. उत्तरी अमेरिका की सबसे बड़ी स्वयंसेवी संस्था है। निरंतर १२ वर्षों से हिन्दी के प्रचार प्रसार में कार्यरत है। किसी भी संस्था को सुचारु रूप से चलाने के लिए नियमावलियों व अनुशासन के धागे में पिरोना अति आवश्यक है। इस तस्वीर में आप हिन्दी यू.एस.ए. संस्था के स्वयंसेवी कार्यकर्ता, जो संस्था के मजबूत स्तम्भ हैं, को देख सकते हैं। न्यूजर्सी में हिन्दी यू.एस.ए. की १८ पाठशालाएँ चलती हैं। पाठशाला संचालकों पर ही अपनी-अपनी पाठशाला को सुचारु रूप से नियमानुसार चलाने का कार्यभार रहता है। संस्था के सभी नियम व निर्णय सभी कार्यकर्ताओं की उपस्थिति में मासिक सभा में लिए जाते हैं। पाठशालाओं में बच्चों का पंजीकरण अप्रैल माह से ही आरम्भ हो जाता है। विभिन्न ९ स्तरों में हिन्दी की कक्षाएँ चलती हैं। नया सत्र सितम्बर माह के दूसरे सप्ताह से आरम्भ होकर जून माह के दूसरे सप्ताह तक चलता है। न्यूजर्सी से बाहर अमेरिका के विभिन्न-विभिन्न राज्यों में भी हिन्दी यू.एस.ए. के विद्यालय हैं। हिन्दी यू.एस.ए. के कार्यकर्ता बहुत ही तीव्र गति से अपने उद्देश्य की ओर अग्रसर होते हुए अपना सहयोग दे रहे हैं। यदि आप भी अपनी भाषा, अपनी संस्कृति को संजोय रखने में सहभागी बनना चाहते हैं तो हिन्दी यू.एस.ए. परिवार का सदस्य बनें।

कर्मभूमि

लेख–सूची

०७ - हिन्दी यू.एस.ए. के स्तम्भ

१० - सफलता की परिभाषा

११ - शिक्षक और शिष्य - "विद्यार्थी"

१२ - शिक्षा का हिन्दू दर्शन

१३ - मेरी कलम

१४ - स्वतंत्रता बनाम स्वछंदता

१७ - भारत के चिरस्थायी भविष्य के लिए हरे न कि गुलाबी परिवर्तन की आवश्यकता

१९ - आज यूँ अपनी होली मनाएँगे हम

२० - दीवाली की रौनक

२२ - मेरे अनुभव और विचार,२३ - वार्ली कला

२६ - हमारी शक्ति

३१ - विद्यार्थी ३२ - काव्य-पाठ दिवस

३४ - विद्यार्थी मेरी दृष्टि में

३६ - दूसरों के साथ अच्छे सम्बन्ध बनाने का रहस्य

३७ - उच्च स्तर-२ के विद्यार्थियों के संस्मरण

४९ - स्वामी विवेकानन्द ५० - नीम हकीम खतरा ए जान

५१ - कमल, हमारा राष्ट्रीय फूल

५२ - मेरी भारत यात्रा और भारत की रानी

५३ - शिवाजी

५४ - मेरी हिन्दी यात्रा, मेरी सैन फ्रांसिस्को यात्रा

५५ - होली ५६ - मैं हूँ वहाँ से

५७ - मोर ५८ - दीवाली

५९ - भगत सिंह ६० - वीर सावरकर

६१ - बाजार- एक प्रयास

६२ - प्रथमा दो की यात्रा ६४ - मेरी हिंदी यात्रा

६५ - सीखी हिन्दी, होली का त्यौहार

संरक्षक

देवेंद्र सिंह

रूपरेखा एवं रचना

सुशील अग्रवाल

सम्पादकीय मंडल

देवेंद्र सिंह

रचिता सिंह

माणक काबरा

अर्चना कुमार

राज मित्तल

६८ - समाज में कंप्युटर का बढ़ता उपयोग

६९ - मेला

७० - मेरे जीवन में हिन्दी का महत्व

७२ - मुंडेर की कहानी

७४ - जब मैं बड़ा हो जाऊँगा तथा यही सच है

७५ - पहेलियाँ

७८-९६ - बच्चों के लेख तथा कक्षाओं की रिपोर्ट

अपनी प्रतिक्रियाएँ एवं सुझाव हमें अवश्य भेजें

हमें विपत्र निम्न पते पर लिखें

karmbhoomi@hindiusa.org

या डाक द्वारा निम्न पते पर भेजें:

Hindi USA
70 Homestead Drive
Pemberton, NJ 08068

आपके पत्र

श्री देवेन्द्र जी
अंक को `बच्चों की कलम से' ने विशिष्ट बना दिया है।
बच्चों व बच्चों की कलम को प्रोत्साहन व अवसर देने के इस ढंग के लिए पत्रिका परिवार को बधाई व शुभकामनाएँ।
(डॉ.) कविता वाचक्नवी

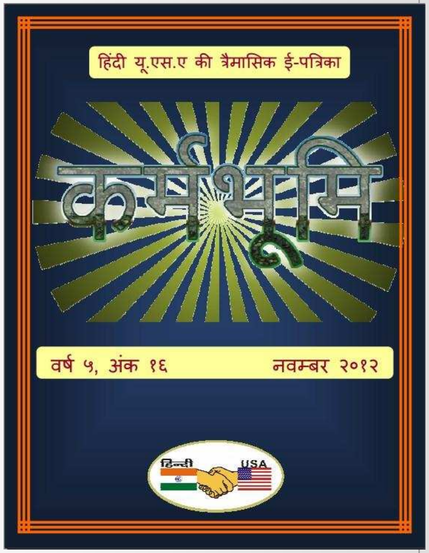

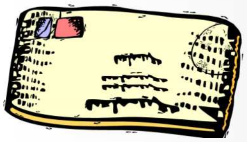

संपादक महोदय,
कर्मभूमि का नया अंक पठनीय, अनुकरणीय और सराहनीय है। युवा पीढ़ी की सेवा में रत हिन्दी यू.एस.ए. का काम ऐतिहासिक महत्व का है। बहुत बहुत बधाई!
सुरेन्द्र गंभीर

संपादक महोदय
बहुत ही अच्छा अंक है। बधाई। बच्चों की कलम से महत्वपूर्ण है, जारी रखें।
दिविक रमेश

संपादक महोदय
कर्मभूमि का नवीन अंक देखकर अत्यंत प्रसन्नता हुई। विशेषकर बच्चों ने अपनी कलम से हिन्दी में लिखकर/टंकण कर जो कमाल किया है, वह आपके समर्पण एवं टीम वर्क का सुखद परिणाम है। मेरी हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ स्वीकार करें।
सादर, जवाहर कर्नावट

हिन्दी यू.एस.ए. के स्तम्भ

सम्पादक मंडल

हिंदी यू.एस.ए. उत्तरी अमेरिका की सबसे बड़ी स्वयंसेवी संस्था है जो अमेरिका में हिन्दी के प्रचार व प्रसार के उद्‌देश्य से पिछले १२ वर्षों से अविरत सफल प्रयास कर रही है। किसी भी स्वयंसेवी संस्था के सुचारु रूप से कार्य करने का श्रेय उसके कर्मठ व निश्छल भाव से समर्पित कार्यकर्ताओं को जाता है।
१२ वर्षों में हिन्दी यू.एस.ए. में बहुत से कार्यकर्ता जुड़ते गए और बहुत से कार्यकर्ताओं ने अपनी क्षमतानुसार संस्था को अपना योगदान देकर उसे सुदृढ़ किया। परंतु बहुत से कार्यकर्ता ऐसे भी हैं जो हिन्दी यू.एस.ए. के नामकरण से आज तक की यात्रा में सम्मिलित रहे। स्वयंसेवी कार्यकर्ता केवल अमेरिका में ही नहीं बल्कि भारत में भी संस्था के लिए कार्य करते हैं, जिनके सहयोग से समय-समय पर हिन्दी यू.एस.ए. को बहुत लाभ मिलता रहता है।

तन्मयता से अपना योगदान व सहयोग देने वाले कार्यकर्ता संस्था के अडिग स्तम्भ हैं। संस्था सभी स्वयंसेवकों की हृदय से आभारी है। शिखर पर पहुँचने में बहुत कठिनाइयाँ आती हैं, परंतु इस संस्था के स्वयंसेवियों ने असम्भव से दिखने वाले कार्य को भी संभव कर दिखाया है।

आज हिन्दी यू.एस.ए. सफलता के १२ वर्ष पूरे करने जा रहा है और उसकी यात्रा में मैं दो विशेष लोगों का धन्यवाद देना चाहती हूँ। हिन्दी यू.एस.ए. के संस्थापक श्री देवेंद्र सिंह जी और श्रीमती रचिता सिंह जी जिन्होंने १२ वर्ष पहले केवल अपने दोनों बच्चों को हिन्दी पढ़ाते हुए इस संस्था की स्थापना की। संस्था की स्थापना के आरम्भिक दिनों में हिन्दी भाषा की कक्षाएँ कहीं किसी कार्यकर्ता के घर या कहीं किसी मन्दिर में चलती थीं। परंतु धीरे-धीरे समय के साथ-साथ संस्था का विस्तार होता गया। कुछ वर्षों बाद संस्था ने तय किया कि न्यू जर्सी के विभिन्न शहरों के स्कूलों में कक्षाएँ किराए पर लेकर हिन्दी पढ़ाने का कार्य प्रारंभ किया।

इस दम्पति के जीवन का लक्ष्य ही जैसे हिन्दी भाषा व भारतीय संस्कृति का प्रचार व प्रसार करना है। इन्होंने तन, मन व धन से पूर्णतः समर्पित होते हुए इस कार्य की सम्पूर्णता में सर्वस्व न्यौछावर कर दिया।

हिन्दी यू.एस.ए. में चलने वाले विभिन्न ९ स्तरों के पाठ्यक्रम बनाना, शिक्षण सामग्री तैयार करना, बच्चों को पुस्तकों के साथ-साथ फ्लैश कार्ड्स उपलब्ध करवाना, ये सब कार्य मुख्य रूप से रचिता जी ही

देखती हैं। हिन्दी यू.एस.ए. के सभी स्तरों की पुस्तकें रचिता जी द्वारा ही लिखी गई हैं। यह कार्य रचिता जी स्वयंसेविका के रूप में ही करती हैं। स्वयंसेवी भावना ही इस संस्था को शक्ति प्रदान करती है। वार्षिक कविता प्रतियोगिता, शिक्षक अभिनंदन दिवस व वार्षिक हिन्दी महोत्सव का सफलता पूर्वक आयोजन रचिता जी व देवेंद्र जी की देखरेख व सुदृढ़ मार्गदर्शन का ही परिणाम है।

देवेंद्र जी ने भारतीय संस्कृति की रक्षा हेतु “Being Different” पुस्तक का हिन्दी अनुवाद भी किया है। आप सभी पाठक इस पुस्तक को अवश्य पढ़ें।

किसी भी शिखर पर पहुँचना सरल नहीं होता। इसी प्रकार संस्था की स्थापना से शिखर तक की यात्रा में पति-पत्नी की सूझबूझ की अनेक बार परीक्षाएँ भी हुईं। परंतु इस दम्पति ने अडिग शिला की भाँति सभी परिस्थितियों का धैर्यपूर्वक सामना किया और हिन्दी यू.एस.ए. परिवार को निरंतर बढ़ाने का कार्य किया। इस समय न्यू जर्सी और कनैक्टिकट में 18 हिन्दी यू.एस.ए. की पाठशालाएँ चलती हैं एवं अमेरिका के दूसरे राज्यों में 20 संलग्न पाठशालाएँ चलती हैं। यह कार्य इस दम्पति के अटूट समर्पण का ही परिणाम है। बहुत ही परिपक्वता से अपनी ऊर्जस्विता कर्मशक्ति से यह युगल लगभग कुल 400 शिक्षिकाओं एवं कार्यकर्ताओं के रथ को मझे हुए सारथी की भाँति चला रहे हैं।

रचिता जी देवेंद्र जी दोनों का अभिनंदन है, इस दिव्य युगल का वंदन है।

भाषा को समर्पित भावों को तन-मन-धन से वरदान दिया।

हिंदी संस्कृति की बही गंगा भागीरथ सम संकल्प लिया।

सहज सरल सद्भाव लिए प्रेरत मन का अभिनंदन है। इस दिव्य युगल का वंदन है।

तिनका-तिनका चुन-चुनकर नित पंछी ज्यों नीड़ बनाता है,

हिंदी भाषा और संस्कृति के इनका मन गीत सुनाता है।

भारत वंशी मन में महका हिंदी यू.एस.ए. चंदन है। इस दिव्य युगल का वंदन है।

सभी कार्यकर्ताओं को कोटि-कोटि धन्यवाद, क्योंकि उनके अथक् प्रयासों के कारण संस्था यहाँ तक पहुँची है। कोई अकेला पहाड़ तोड़ने जैसा कार्य नहीं कर सकता। हिन्दी यू.एस.ए. सभी कार्यकर्ताओं का ऋणी है। आशा है भविष्य में भी इसी प्रकार नए उत्साही कार्यकर्ता आते रहेंगे और संस्था को सम्भालते रहेंगे। आपसे अनुरोध है कि आप भी इस भागीरथी कार्य में अपनी क्षमतानुसार सहयोग दें।

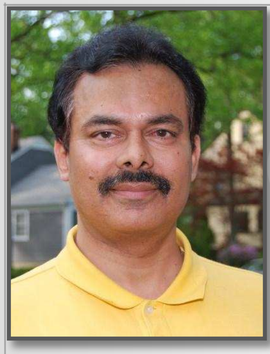

सफलता की परिभाषा

हिन्दी यू.एस.ए. की शैली में

देवेंद्र सिंह

यह विद्यार्थी विशेषांक है, इसलिए मैं विद्यार्थियों के साथ उच्च स्तर की सफलता प्राप्त करने के अपने कुछ सुझाव बाँटना चाहता हूँ। सफलता रातोंरात नहीं मिलती। किसी भी बड़ी और महत्वपूर्ण वस्तु और स्थान को प्राप्त करने या परियोजना को सफल बनाने के लिए संकल्पित तैयारी, उत्साहपूर्ण कार्यांवयन और परिणाम की चिंता किए बिना दृढ़तापूर्वक आगे बढ़ते रहना पड़ता है। ये पूर्वापेक्षाएँ हैं जिनके बिना क्षणिक सफलता तो मिल सकती है, लेकिन चिरस्थायी और टिकाऊ सफलता संभव नहीं है।

ऊपर उल्लिखित सुझावों के अतिरिक्त जो बात महत्वपूर्ण है, वह यह है कि एक ही स्थान पर कार्य करते हुए ही लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है। पानी वहीं निकलता है जहाँ मज़दूर एक ही जगह पर यथायोग्य उपकरण लेकर मेहनत से कार्य करते हैं। बार-बार जगह बदलने से वे चाहे कितनी भी मेहनत करते रहें, परंतु पानी नहीं निकलेगा, हाँ छोटे-छोटे गड्ढे अवश्य बन जाएँगे। यदि उद्देश्य पानी निकालना है तो स्थान बदलने से कोई लाभ नहीं है। यदि उद्देश्य केवल गड्ढे बनाना ही है तो बात और है। चींटी और टिड्डे की कहानी से भी यही शिक्षा मिलती है। चींटी दिन-रात एक करके कड़ी मेहनत से अपनी बाँबी बनाती है जिसमें वह अपने परिवार के साथ तूफानी मौसम से अपना बचाव कर सके। परंतु टिड्डा दिन भर इधर-उधर फुदकता रहता है और कोई भी रचनात्मक उपलब्धि प्राप्त नहीं कर पाता। इसलिए जब तक हमारा उद्देश्य पूरा नहीं हो जाता, हमें अपना कार्य अधूरा नहीं छोड़ना चाहिए। हमें अपनी पढ़ाई में भी दूसरे विद्यार्थियों से अधिक मेहनत करनी चाहिए, जिससे हम सदैव श्रेष्ठ बने रहें।

आप हमेशा कुछ नया करने की सोचें। कभी भी भेड़चाल में न पड़ें, क्योंकि कुछ नया या असाधारण करके ही समाज को कुछ सार्थक दिया जा सकता है। जिस कार्य में मेहनत की कुछ खास आवश्यकता नहीं है, उसे न करें। क्योंकि एक तो उससे कुछ विशेष लाभ नहीं होगा और दूसरे उसे कोई और कर ही लेगा।

हिन्दी यू.एस.ए. की सफलता की कहानी भी ऊपर दिए हुए सुझावों की नींव पर स्थापित है। कार्यकर्ताओं की कड़ी मेहनत और त्याग के परिणामस्वरूप ही हिन्दी यू.एस.ए. आज एक सम्माननीय स्थिति पर विराजमान है, जहाँ दूसरे लोग भी पहुँचने की कामना करते हैं। इस बारहवें हिन्दी महोत्सव की नींव सन् २००२ में डाली गई थी, जब हमारे पास उचित साधनों, पूँजी और पर्याप्त कर्मठ कार्यकर्ताओं का अभाव था। परंतु कुछ चुनिंदा कार्यकर्ताओं ने अपने अथक परिश्रम और लगन के बल पर समाज के हित के लिए एक ऐसी संस्था का निर्माण करके उसे पोषित किया जो आप लोगों को संरचित रूप से हिन्दी शिक्षा उपलब्ध करवाती है। बाद में आने वाले कार्यकर्ताओं ने इस हवन में अपनी समर्पित सेवाओं का घी डालकर इस हवन की ज्वाला को नयी शक्ति देते हुए जलाए रखा है। हिन्दी यू.एस.ए. आपसे भी यही आशा करता है कि अपनी पढ़ाई पूरी हो जाने के बाद आप भी इस हवन में एक जिम्मेदार कार्यकर्ता के रूप में सम्मिलित होंगे और भारत की भाषा एवं संस्कृति की मशाल को जलाए रखेंगे।

कृष्णा नारंग, अपने बच्चों के साथ फ्लोरिडा मे रहती हैं। आप एक होम्योपैथी की चिकित्सिका हैं। आपकी विशेष रुचि रामायण और महाभारत पढ़ना, सुनना और बच्चों को कहानियों के रूप में सुनाना है।

शिक्षक और शिष्य – "विद्यार्थी"

शिक्षक त्यागी हों - शिक्षक अर्थात् गुरु के व्यक्तिगत जीवन के बिना कोई शिक्षा नहीं हो सकती। शिष्य अर्थात् विद्यार्थी को बाल्यावस्था से ही ऐसे व्यक्ति के साथ रहना चाहिए जिन का चरित्र अग्नि के समान उज्ज्वल हो, उच्चतम शिक्षा का सजीव आदर्श विद्यार्थी के सामने रहे। हमारे देश में ज्ञान दान का भार पुनः त्यागियों के कंधों पर पड़ना चाहिए।

प्राचीन प्रथा - भारतवर्ष की पुरानी शिक्षा प्रणाली वर्तमान प्रणाली से बिल्कुल अलग थी कि ज्ञान इतना पवित्र है कि उसे किसी मनुष्य को बेचना नहीं चाहिए। विद्यार्थियों को शुल्क नहीं देना पड़ता था। शिक्षक गण विद्यार्थियों को उनसे शुल्क लिए बिना ही अपने पास रखते थे। बहुत से गुरु अपने शिष्यों को अन्न वस्त्र भी देते थे। इन शिक्षकों के निर्वाह के लिए धनी लोग उन्हें दान दिया करते थे। पुराने जमाने में विद्यार्थी गुरु के आश्रम में हाथ में समिधा (लकड़ी) लेकर जाता था और गुरु उसकी योग्यता का निश्चय करने के पश्चात् उसकी कमर के तीन लड़ वाली मुंज में खला बाँधकर वेदों की शिक्षा देते थे। यह मेखला तन, मन और वचन को वश में रखने की उसकी प्रतिज्ञा के चिन्ह के रूप में थी।

विद्यार्थी के गुण - गुरु-शिष्य दोनों के लिए कुछ आवश्यक नियम - शिष्य के लिए आवश्यक है शुद्धता, ज्ञान प्राप्त करने की सच्ची लग्न। विचार, वाणी और कार्य की पवित्रता अति आवश्यक है। ज्ञान पिपासा के सम्बन्ध में पुराना नियम यह है कि हम जो कुछ भी चाहते हैं वही पाते हैं। जिस वस्तु की हम अंतःकरण से चाह नहीं करते, वह हमें प्राप्त नहीं होती। जब तक हमारे हृदय में उच्चतर आदर्श के लिए सच्ची व्याकुलता उत्पन्न नहीं होगी, तब तक विजयश्री हमारे हाथ नहीं लगेगी। जो शिष्य इस प्रकार कठिन परिश्रम के साथ लग जाता है, उसकी अंत में सफलता निश्चित है। जैसे अर्जुन अपने गुरु द्रोणाचार्य जी के प्रिय शिष्य थे, वे हर समय कुछ न कुछ गुरु से पूछते व करते रहते थे और सभी राजकुमारों से वे अधिक निपुण थे। द्रोणाचार्य जी कहते थे, अर्जुन तुम मेरे पास कुछ भी नहीं रहने दोगे। यह कहकर वह प्रसन्न होते थे।

वास्तव में गुरु का कार्य ही यह है कि वह शिष्य में शक्ति का संचार कर दे। यह स्पष्ट अनुभव किया जा सकता है कि गुरु से शिष्य में सचमुच एक शक्ति आ रही है। अतः गुरु का शुद्ध चित होना आवश्यक है। शिष्य को अपनी अन्तर इंद्रियों और बाहरी इंद्रियों को नियंत्रित करने में भी समर्थ होना चाहिए। कठिन अभ्यास के द्वारा शिष्य को ऐसी अवस्था में पहुँच जाना चाहिए जहाँ वह अपने मन द्वारा इंद्रियों का, प्रकृति के आदेशों का सफलता पूर्वक विरोध कर सके। मन इधर-उधर भटकता है, जब तक मन चंचल है और वश से बाहर है तब तक ज्ञान संभव नहीं है।

शिक्षा का हिन्दू दर्शन

रचिता सिंह

आज का आधुनिक भारत जिन बुराइयों का शिकार होकर आहत पड़ा कराह रहा है उसके उत्तरदायी उसके नागरिक, उनकी शिक्षा, उनकी सोच और उनकी निष्क्रियता है।

किसी भी देश के नागरिकों के चरित्र निर्माण में उस देश की शिक्षा-प्रणाली का बहुत बड़ा योगदान रहता है। जब भारत विश्व गुरु था उस समय भारत में जो शिक्षा-प्रणाली प्रचलित थी वह "तैत्रियोपनिषद" की 'शिक्षावली' पर आधारित थी। यह एक ऐसी गुरु और शिष्य परम्परा वाली शिक्षा प्रणाली थी जिसमें एक विद्वान, चरित्रवान तथा आदर्श पुरुष बिना किसी धनार्जन की भावना के अपने ज्ञान को अपने शिष्यों में उनके कल्याण के लिए, समाज के उत्थान के लिए तथा अपने आने वाली पीढ़ियों के हित के लिए निःस्वार्थ भावना से सहर्ष बाँटता था और स्वयं गुरु बनकर एक गुरुकुल की स्थापना करता था।

"किसी भी देश के नागरिकों के चरित्र निर्माण में उस देश की शिक्षा-प्रणाली का बहुत बड़ा योगदान रहता है।"

यह शिक्षा प्रणाली एक शिष्य के मानसिक, शारीरिक, व्यावसायिक (आत्मनिर्भरता के ज्ञान) विकास के साथ-साथ व्यक्ति का आध्यात्मिक विकास करने में पूर्ण सफल थी। इस शिक्षा का परिणाम यह था कि व्यक्ति बुद्धिमान और ज्ञानवान होने के साथ -साथ शरीर से बलवान तथा स्वस्थ भी रहते थे। समाज में बेरोजगारी जैसी समस्या नहीं थी। प्रत्येक व्यक्ति को जीवन जीने की कला तथा समाज में दूसरों के साथ मिल-जुलकर रहने की कला सिखाई जाती थी। प्रत्येक व्यक्ति शिक्षा पूर्ण होने तक इतना समर्थ होता था कि वह अपना और अपने परिवार का भरण-पोषण कर सके।

यह शिक्षा व्यक्ति को स्वार्थ से दूर करके प्रकृति और समाज के हित में सोचते हुए कार्य करने की प्रेरणा देती थी। ऐसे समाज में पर्यावरण की समस्या दूर-दूर तक दिखायी नहीं देती थी। भ्रष्टाचार को पाप की श्रेणी में रखा जाता था क्योंकि लोगों की सोच आध्यात्मिक होती थी।

भारतीय शिक्षा-प्रणाली में गुरु कभी भी अपने ज्ञान को शिष्यों पर नहीं थोपते थे अपितु वे उन्हें सही और गलत, धर्म और अधर्म को पहचानने की क्षमता अपने शिक्षा के "सूत्रों" द्वारा प्रदान करते थे। इस शिक्षा-प्रणाली की एक और विशेषता थी कि यह उसी को उपलब्ध थी जो इसे पाने के लिए लालायित और प्रयत्नशील था। इस शिक्षा में शिष्य की रुचि तथा विशेषताओं का विशेष ध्यान रखा जाता था।

हमारे "हिन्दू शिक्षा दर्शन" में 'परा' और 'अपरा' दोनों विद्याओं का विशेष ध्यान रखा गया है, अर्थात् हमारी शिक्षा पद्धति व्यक्ति को केवल धनोपर्जन करके जीना ही नहीं सिखाती अपितु आध्यात्म द्वारा मोक्ष का मार्ग भी दिखलाती है।

शिक्षा का हिन्दू दर्शन

स्वामी विवेकानंद ने हिन्दू शिक्षा पद्धति को एक व्यक्ति के संपूर्ण चरित्र निर्माण की कुंजी कहा है। आधुनिक शिक्षा को स्वामी जी ने असफल शिक्षा पद्धति माना है क्योंकि यह व्यक्ति को केवल भौतिकवाद की ओर ले जाती है। यह केवल व्यक्ति के जीवन को एक प्रकार की शून्यता से भर देती है। जिस प्रकार शून्य बिना गणित अधूरा है।

संक्षेप में हम कह सकते हैं कि वही शिक्षा सही शिक्षा है जो व्यक्ति का शारीरिक, मानसिक और नैतिक विकास करते हुए उसे अनुशासन के साथ जीना सिखाती है। अनुशासित जीवन जीते हुए उसी समय में व्यक्ति आत्म-बोध और आत्मिक उत्थान के लिए प्रार्थना, प्राणायाम, योग, साधना, जप तथा स्वाध्याय द्वारा आत्म-ज्ञान प्राप्त कर सकता है। इसके लिए आवश्यक है कि देश में चरित्रवान, प्रशिक्षित तथा आदर्श शिक्षक तैयार किए जाएँ तथा समाज में शिक्षकों को उच्च स्थान प्राप्त हो।

काश! यदि भारत में आज अंग्रेजी शिक्षा-पद्धति न होती तो शायद आज भी हमारा भारत सोने की चिड़िया ही कहलाता। आज हम आज़ाद हैं पर स्वतंत्र नहीं। स्वतंत्र हम उस दिन होंगे जिस दिन हमारा स्वयं का तंत्र क्रियाशील होगा। आइए हम सब मिलकर विवेकानंद की १५० वीं वर्षगाँठ पर एक नया भारत स्वतंत्र भारत जहाँ हमारी संस्कृति हो, वेशभूषा हो, भाषा हो, शिक्षा हो, आध्यात्म हो, धर्म हो, न्याय व्यवस्था हो, बनाएँ।

दीपाली जैन अंग्रेजी होनोर्स में स्नातक हैं। आप चैरी हिल हिंदी पाठशाला से पिछले दो वर्षों से जुड़ी हैं। इस वर्ष से मध्यमा-१ की अध्यापिका के रूप में कार्यरत हैं। हिंदी में कविताएँ लिखने में मेरी बचपन से रुचि रही है।

मेरी कलम

अनुभवों को उतारा जो कागज़ पर,
सब चिंताएँ कलम में समाने लगीं,
दिल आज़ाद हुआ फालतु ख्यालों से,
और खुशी बस चेहरे पर आने लगी।
अनुभवों को उतारा जो कागज़ पर,
सब चिंताएँ कलम में समाने लगीं।
हर कशमकश सुलझती चली गई,
धुँधले ख्वाब हकीकत लगने लगे,
अंधेरी रात के बाद हुआ जब सवेरा,
सूरज के सामने से, बादल सब घटने लगे,
अनुभवों को उतारा जो कागज़ पर,
सब चिंताएँ कलम में समाने लगीं॥

स्वतंत्रता बनाम स्वछंदता

अर्चना कुमार

आज हम अत्यंत गर्व के साथ कहते हैं कि हम स्वतंत्र हैं व पिछले ६६ वर्षों से स्वतंत्रता का उपभोग कर रहे हैं। और स्वतंत्रता के मधुर झूलों में झूलते हुए सर्वांग विकास, विशेषकर पिछले २० वर्षों में तकनीकी में तीव्र उन्नति करने के बावजूद भी नैतिकता की दिशा में सहस्त्रों वर्ष पीछे चले गए हैं और एक दूषित वातावरण और ओछी मानसिकता का विकास किया है। मेरी समझ में इसका एक ही कारण है, कि हमने स्वतंत्रता को अत्यंत ही कुशलता व निपुणता से स्वछंदता का रूप दे दिया है। स्वतंत्रता के नाम पर अपने समाज में गलत मूल्य स्थापित कर घोर पतन कर लिया है, और भारत को पाताल की गर्त में ले जा रहे हैं। जिसका परिणाम हम प्रत्यक्ष देख रहे हैं।

हमें १९४७ में स्वतंत्रता कुछ मनचलों व मनमौजियों के अनगिनत त्यागों व बलिदानों के कारण मिली। जी हाँ! "कुछ मनचलों व मनमौजियों के कारण"! जो सुनने में बहुत ही अटपटा लगता है किंतु यह एक सही कड़वा सत्य ही तो है। केवल २२ वर्ष की आयु में ही देश के लिए फाँसी पर चढ़ने वालों को व शहीद होने वालों को आज मनचला व सिरफिरा ही कहा जाएगा, क्योंकि आज युवा वर्ग में समाज व देश के लिए समर्पित कार्य करने की वह भावना ही नहीं रही। आज तो केवल १६-१७ वर्ष की आयु में ही अत्यंत पाशविक व अमानवीय रूप से भ्रष्टाचार व कुकृत्य करते हुए नए-नए कीर्तिमान स्थापित किए जा रहे हैं। आज की युवा पीढ़ी स्वतंत्रता के नाम पर स्वछंदता की ओर मुड़ रही है। नैतिकता को जैसे अपने शब्दकोश से लुप्त ही कर दिया है। ये नवीन मूल्य वे उदाहरण नहीं जो हमारे पूर्वजों ने स्थापित किए थे।

स्वछंदता हमारे मन की एक अमर्यादित अवस्था है। महत्वाकांक्षाओं की इच्छा पूर्ति की अवस्था। आज के युवा वर्ग में मर्यादा कहीं दिखाई नहीं देती चाहे वस्त्र हो, भाषा हो या व्यवसाय की तरक्की के लिए उठाए गए कदम।

क्या हम स्वछंदता और स्वतंत्रता में भेद करने योग्य रह गए हैं? क्या आज हमारी मानसिकता व हमारी सोच इन दो शब्दों में महीन से अंतर को समझ पा रही है कि स्वतंत्रता का अर्थ है समाज के उत्थान के लिए स्थापित किया गया एक सुनियोजित तंत्र। और स्वछंदता का अर्थ है बेलगाम व स्वार्थी बहकापन। स्वछंदता केवल स्वार्थी ही हो सकती है क्योंकि इससे समाज का उत्थान नहीं अपितु व्यक्तिगत उत्थान व क्षणिक सुख के लिए उठाया गया एक कदम है जो हमारे निजी हितों तक ही सीमित है। परंतु हम इन उद्देश्यों को पूरा करते हुए

अपने ही पतन को नहीं देख पाते।

स्वेच्छाओं की पूर्ति कहें या महत्वकांक्षाओं की पूर्ति, लेकिन इस तीव्र दौड़ में अपने ही उत्तरदायित्वों से विमुख होते जा रहे हैं; चाहे वह परिवार के प्रति हो या समाज के प्रति। स्वतंत्रता के नाम पर अपनी मर्यादाओं का उल्लंघन करना तो जैसे आज की युवा पीढ़ी का मनपसंद खेल बन गया है।

भारतीय समाज पाश्चात्यता की चकाचौंध में अपना अस्तित्व खोता जा रहा है। हम अत्यंत गर्व से कहते हैं कि भारत तकनीकी विकास में विश्व के विकसित देशों से कहीं पीछे नहीं व हम पाश्चात्य संगीत, वेशभूषा, खान-पान को अपने जीवन में प्रथम स्थान देना चाहते हैं व दे रहे हैं और गर्व से ऐसा करने से स्वयं को आधुनिक बताते हैं। क्या आधुनिक होने का अर्थ केवल भौतिकता की दौड़ में सम्मिलित होना ही है? हमारी नैतिकता और विचारधारा तो दिन -प्रतिदिन निम्नस्थ व अशिष्ट होती जा रही है। हम अपनी ही जड़ों से उखड़ कर स्वच्छंदता की उड़ान तो भर पाएँगे परंतु क्या अपना अस्तित्व स्थापित कर पाएँगे? आज हम पाश्चात्यता की दौड़ कहें या तथाकथित आधुनिकता की दौड़ में हम स्वच्छंद होते हैं जा रहे हैं। हम तकनीकीकरण को अपना तो रहे हैं, परंतु मनमाने ढंग से। इस प्रकार अपने ही समाज का कोई उत्थान न करते हुए हम अपने ही समाज व पीढ़ी को निरंतर कभी न समाप्त होने वाले अंधकार में ढकेल रहे हैं। क्या सरकार द्वारा एक कानून बना देना ही पर्याप्त है? यह बात समझ से परे है कि सरकार को आज ऐसे कानून बनाने की आवश्यकता क्यों पड़ी कि बलात्कार जैसे कुकर्म के लिए आयु सीमा निर्धारित की जाए। ऐसी परिस्थितियाँ उत्पन्न होने का उत्तरदायित्व केवल आज के युवा वर्ग पर ही है। क्या ऐसे में हमें यह नहीं कहना चाहिए " मेरा भारत महान, जहाँ ऐसे हैं जवान""। धिक्कार है ऐसे समाज पर जिसके युवाओं की सोच इतनी गिरी हुई व अश्लील है। आखिर युवाओं की ऐसी सोच का जिम्मेदार कौन?

मैं स्त्रियों के कामकाजी होने के विरुद्ध नहीं परंतु क्या हमने स्त्रियों को आत्मनिर्भरता का अधिकार देते समय ऐसे समाज की कल्पना कभी की थी कि आत्मनिर्भरता के साथ-साथ स्त्रियाँ अपने ही समाज में अपने ही लोगों द्वारा पल-पल प्रतिपल छली जाएँगी, अपमानित होती रहेंगी और असुरक्षित रहेंगी। आखिर हम इसका उत्तरदायी किसे ठहराएँगे; भारतीय समाज का तथाकथित आधुनिकीकरण अथवा प्रतिदिन गिरती नैतिकता व निम्न स्तर की मानसिकता। समस्या है कि हम तकनीकी में आधुनिक होते चले गए परंतु मानसिक रूप से गिरते गए। अपनी स्वतंत्रता व अधिकारों को स्वयं ही गलत दिशा की ओर मोड़ हम स्वछंद होते गए व परिणाम सामने है। स्वछंदता स्वतंत्रता की अपभ्रंश रूप ही तो है।

सैल फोन, इंटरनैट देश के कोने-कोने में चला तो गया और बखूबी ऐसी सुविधाओं को हमने बहुत ही सरलता से अपनी बुद्धिमता का परिचय देते हुए नकारात्मक रूप में परिवर्तित कर दिया। यदि युवा वर्ग ही इसी प्रकार स्वछंद होता गया तो वह दिन दूर नहीं जब हम अपनी उत्कृष्ट संस्कृति पर गर्व करने वाले भारतीय अपने ही समाज को निकृष्ट करने का

कारण होंगे।

हमें आने वाली पीढ़ी में बचपन से ही विद्यार्थी काल से ही नैतिक मूल्यों की पहचान करवाना आवश्यक है। परंतु उससे पहले युवा वर्ग स्वछंदता के नि:कृष्ट भाव से स्वयं को मुक्त करे। कहीं ऐसा न हो कि उन्मुक्त गगन में अपनी स्वछंद उड़ान भरने की चाह में कटी पतंग की भाँति औंधे मुँह धरा की ओर गिरें व अपना अस्तित्व समाप्त कर बैठें। अपनी जड़ों से विमुख होकर हम अपना अस्तित्व कतई स्थापित नहीं कर सकते।

स्वछंदता चाहे वह पुरुष का भाव या नारी के मनःस्थिति हो, समाज की विखंडता व क्षीणता के लिए पूर्णतः उतरदायी है। हमारी व्यक्तिगत महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति व इच्छापूर्ति के लिए किए गए कार्य समाज को मान्य नहीं हो सकते व इससे संस्कृति की रक्षा कतई सम्भव नहीं न ही समाज का उत्थान और अंततः देश का सुदृढ़ व उज्ज्वल भविष्य। हमें समाज के उत्थान के लिए बनाए गए नियमों, मानदंडों और जीवन मूल्यों को पूर्णतः सम्मान देते हुए अपने सभी कार्यों को सुचारु रूप से करना होगा व अपने अधिकारों को सही दिशा में नैतिकता से प्रयोग करना होगा।

हम समाज में संविधान में स्त्री-पुरुष के समानाधिकारों की बात करते हैं, परंतु यदि हम स्वयं से प्रश्न करें कि क्या ऐसा हो रहा है और इस कार्य के निष्पादन या सफलता या पूर्णता की ओर हमारा क्या सहयोग है?

समानाधिकारों का प्रयोग करते हुए आज हमारे समाज में पुरुष जिस प्रकार बाहर घूम सकता है, क्या स्त्री भी? चाहे ऑफिस, बस, सब्ज़ी मण्डी, रेलवे स्टेशन या कोई भी सार्वजनिक स्थान क्या स्त्री उतनी ही सुरक्षित है, जितना पुरुष? स्त्री को सदा ही भोग की दृष्टि से देखा जाता है, क्या इसके पीछे पुरुष वर्ग की घटिया सोच नहीं? नित्य निरंतर गिरते हुए नैतिक मूल्यों व निम्न सोच / मानसिकता से हम समय चक्र में अपनी कैसी छवि छोड़कर जा रहे हैं?

यदि हम सच्चाई व ईमानदारी से अवलोकन करें तो हमारी संकीर्ण, गन्दी मानसिकता, महत्वांकाक्षाएँ, उन्मुक्तता की भावना ही पूर्ण रूप से प्रकृति व समाज के विरुद्ध है व अपनी मर्यादाओं की सीमा का उल्लंघन करना ही इसके लिए उत्तरदायी है।

हमें अपनी सोच व मानसिकता को सकारात्मक करना होगा। हमें मानसिक रूप से व नैतिक रूप से सशक्त, सबल होने की आवश्यकता है। तभी हम स्त्री को सम्मान दे पाएँगे, इसी में हमारे समाज व देश का उज्ज्वल भविष्य निहित है। हमें आवश्यकता है एक बार फिर से युवा शक्ति को संगठित करने की व सही दिशा में उपयुक्त कदम उठाने की ताकि भविष्य में कभी भी ऐसा न हो कि किसी पाश्चात्य देश को किसी भारतीय यौन शोषित दिवंगत नारी को सम्मान देने की परिस्थिति उत्पन्न हो। दूसरों में परिवर्तन करने से पहले हमें स्वयं की सोच को उचित दिशा में परिवर्तित करना होगा व युवा वर्ग के साथ-साथ आने वाली पीढ़ी को मानसिक सबल करने के लिए बाल्यावस्था से ही अपने पौराणिक संस्कारों के नैतिक मूल्य समझाने होंगे।

भारत के चिरस्थायी भविष्य के लिए हरे न कि गुलाबी परिवर्तन की आवश्यकता

पार्थ सिंह परिहार

भारत ने सदियों से नैतिक शाकाहारी सिद्धान्तों को सनातन धर्म की 'अहिंसा' नीति के अनुसार बढ़ावा दिया है। इस परम्परा को श्री प्रभुपाद के इन शब्दों में समझाया जा सकता है: "जानवरों को जीभ के स्वाद के लिए मारना इस दुनिया का सबसे बड़ा अज्ञान है।" (भगवद गीता १४.६ - अनुवाद) इस परम्परा में गाय को विशेष रूप से आदर और सम्मान की दृष्टि से देखा गया है क्योंकि वह भारत के कृषिकर्म एवं दूध उत्पादन के लिए अनिवार्य है। किन्तु बस पिछले ही वर्ष भारत गाय के माँस का सबसे बड़ा उत्पादक बन गया।

२००९ में यूपीए सरकार ने आहार प्रसंकरण मंत्रालय बनाने का निर्णय लिया, और इस मंत्रालय ने एक "गुलाबी परिवर्तन" की घोषणा की। यह नीति इस तथ्य पर आधारित थी कि भारत दुनिया के माँस के बाजार में केवल २% का भागीदार है। उस समय से लेकर भारत ने गाय के माँस के उत्पादन को दुनिया के ८% हिस्से से २५% हिस्से तक बढ़ा लिया है। इस नीति से भारत जैसे गंभीर प्राकृतिक समस्याओं से पीड़ित एवं अनेकानेक धार्मिक समुदायों से भरे देश को हानि होने की अतितीव्र संभावना है।

इस नीति के हित में सबसे सामान्य तर्क है कि सरकार केवल मध्यम वर्ग के लोगों में माँस की बढ़ती हुई माँग को पूरे करने का प्रयास कर रही है। २००६ में पहली बार भारत के शाकाहारियों की संख्या ४०% से कम हो गयी। इस प्रवृत्ति को देखते हुए सरकार को जनता के आगे झुकने के लिए उसकी आलोचना क्यों करें? भारतवर्ष के शाकाहारियों के लिए प्रोटीन का प्रमुख साधन दाल होता है, जो अधिकाँश भोजन के साथ खाया जाता है। किन्तु सूखे और सरकार के फलियों के खेती को प्रोत्साहित न करने की भूल के कारण भारत ने फलियों को आयात करना शुरू कर दिया है, जिससे मुद्राप्रसार और बढ़ गया है। एक रिपोर्ट ने कहा, "अब आम आदमी के लिए सादा भोजन (दाल, रोटी) भी दुर्लभ है।"

इसके विपरीत आहार मंत्रालय ने गाय के माँस के प्रसंकरण करने वालों को टैक्स माफ़ करने की घोषणा करा दी है, जिसके कारण 'एशिया टाईम्स' के अनुसार गाय का माँस अब प्रोटीन का सबसे उचित लगने वाला साधन बन चुका है। बढ़ते हुए दामों के कारण मध्यम वर्ग ने गाय के माँस को दाल की जगह खाना आरम्भ कर दिया है। यह भी कहा गया है कि मुसलमान एवं ईसाई समुदायों, जिनके पंथ में गाय के माँस खाने पर कोई पाबंदी नहीं है, को गाय का माँस इस नीति के लागू होने के बाद और आसानी से मिल जाएगा। लेकिन यह तर्क सही नहीं है, क्योंकि भारत में जितना गाय का मॉस है, उससे अमेरिका की जनता की माँगों को पूरा किया जा सकता है, और यह माँग भारतीय माँगों से ६ गुना अधिक है। परन्तु इस "गुलाबी परिवर्तन" के कारण अंतर्धार्मिक सम्बन्ध बिगाड़े हैं क्योंकि शाकाहारी हिन्दू, मुसलमानों को कसाईखानों को चलाने के लिए जिम्मेदार ठहराते हैं।

लेकिन हम और क्या कर सकते हैं? मेरी सोच

है कि "गुलाबी परिवर्तन" की जगह यदि भारत एक "हरे परिवर्तन" पर ध्यान दे तो अच्छा होगा। क्योंकि कोई भी धर्म आपको प्रकृति की रक्षा करने से नहीं रोकेगा, और इससे धार्मिक समुदायों के बीच रिश्ते और मजबूत हो जाएँगे। जैसे की डॉ बी. ए. बायर्स ने खोज की है, धार्मिक एवं आध्यात्मिक परम्पराओं से प्रकृति का अत्याधिक लाभ होता है। क्योंकि ये परम्पराएँ भारत में कई सदियों से -- वेदों के समय से -- रहीं हैं, और क्योंकि भारत के ६०% कृषक संख्या को अपनी परम्पराओं से बहुत लगाव है, इसलिए इस प्राकृतिक परम्परा के पुनर्जन्म से भारत की प्रकृति को बहुत लाभ हो सकता है। नीचे मैं इस बारे में कुछ विचार देता हूँ कि आगे रास्ता क्या होना चाहिए?

हरा और गुलाबी परिवर्तन अपने आप में विरोधी क्यों हैं? हिन्दू धर्म एक उत्तर देता है कि किसी भी जानवर (गौ माता) को मारने से आप अपने ही दुष्कर्मों की बेड़ियों में बँध जाते हो, हालांकि प्रकृति की रक्षा करने से आप उस प्रकृति के साथ एक अटूट बंधन में बँध जाते हो, जो आपको भगवान के और निकट ले जाता है। जिस देश में मानसून अनियमित रूप से आता है, और सिंचाई केवल ४५% कृषियों को ही उपलब्ध है, १५ किलोलीटर पानी गाय के माँस के हर पाउंड में लग जाता है। वन्दना शिवा, जो हिन्दू धर्म से प्रेरित भारत की प्रमुख पर्यावरणविद् हैं, कहती हैं कि भारतीय कृषिकर्म का भविष्य छोटे खेतों में है न कि 'एग्रिबिज्निस' में । जो माँग एनडीए की सरकार ने २००१ में की थी–कि ट्रैक्टर को खरीदने के लिए जो प्रोत्साहन मिलता है उसे रोक दिया जाए और गायों को वापस कृषिकर्म में एक अहम् भूमिका निभाने का अवसर मिले, उसे इस तर्क को ध्यान में रखते हुए अब लागू कर देना चाहिए।

समापन में मैं इतना ही कहूँगा कि "गुलाबी परिवर्तन" भारत के उज्जवल भविष्य के लिए हानिकारक साबित होगा। न केवल नैतिक, बल्कि धार्मिक एवं प्राकृतिक तर्क भी सरकारों की इस नीति के विरुद्ध हैं। जिस समय पश्चिमी देशों में शाकाहारियों की संख्या बढ़ रही है, दूसरी और भारत में "गुलाबी परिवर्तन" अंतर्धार्मिक एवं प्राकृतिक रूप से पूर्णतः असफल रहा है और रहेगा, परन्तु इसके साथ भारत के शाकाहारी नैतिक सिद्धांत के समाप्त होने की भी संभावना है।

“आदर्श विद्यार्थी वह है जो ज्ञान या विद्या की प्राप्ति को जीवन का पहला आदर्श मानता है”

आज यूँ अपनी होली मनाएँगे हम

डा. सुषमा राठौर का जन्म उत्तर प्रदेश के नजीबाबाद शहर में हुआ। इन्होंने जवाहर लाल नेहरु विश्वविद्यालय से हिंदी में पी.एच.डी. तथा एम.फिल. की उपाधि प्राप्त की। बी. बी. सी. लन्दन की हिंदी प्रसारण सेवा में काम किया तथा आल इंडिया रेडियो पर अनेकों कार्यक्रम प्रस्तुत किये। आजकल raipidprotect .com एवं mobipixie .com कंपनी में वी. पी. ऑफ़ बिज़नेस ऑपरेशनस के पद पर कार्यरत हैं।

प्यार की सारी रस्में निभाएँगे हम,
आज यूँ अपनी होली मनाएँगे हम ।

आज खिड़की के कोने से मत झाँकना,
बाग में मेरा रस्ता भी मत देखना ,
आना छत पर, के मिलने को आयेंगे हम,
चाँद की चाँदनी में नहायेंगे हम।   आज यूँ अपनी ...

काली बदली में चन्दा था ओझल खड़ा,
चाँदनी को भी कुछ सब्र करना पड़ा,
प्यास नज़रों की तेरी बुझाएँगे हम,
आज चेहरे से जुल्फें हटायेंगे हम।   आज यूँ अपनी .....

शर्म से मेरी आँखें थीं नीचे झुकीं,
मत समझना इसे तुम मेरी बेरुखी,
बात नज़रों की तुम तक पहुंचाएँगे हम,
आज पलकों की चिलमन उठाएँगे हम ।   आज यूँ अपनी ...

आज होली पे तुम रंग मत फेंकना,
एक नज़र प्यार से बस मुझे देखना,
अपनी साँसों से ही, पिघल जायेंगे हम,
लाज के रंग से ही, रंग जायेंगे हम।   आज यूँ अपनी ...

आज पूनम की इस चाँदनी रात में ,
ले के हम हाथ एकदूजे का हाथ में,
प्यार की सच्ची कसमें खाएँगे हम,
उम्रभर अब अलग ना हो पाएँगे हम।   आज यूँ अपनी ...
क्या हुआ जो ये दुनिया बैरी हुई ,
यूँ ही बदनाम अपनी कहानी हुई,
देखना दिल की दुनिया सजायेंगे हम,
चाँद तारों में घर अब बसायेंगे हम।   आज यूँ अपनी ....

“जिसे विद्या की चाह नहीं वह आदर्श विद्यार्थी नहीं हो सकता”

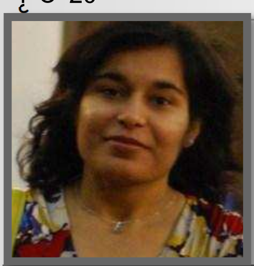

मेरा नाम रेनू सिंह है। मैं अपने पति और दो बच्चों के साथ प्लेंसबोरो में रहती हूँ। मैं मुंबई में पली-बढ़ी हूँ। मुंबई यूनिवर्सिटी से मैंने सॉफ्टवेर इंजीनियरिंग की शिक्षा प्राप्त की है।

दिवाली की रौनक

"ॐ जय जगदीश हरे", "स्वामी जय जगदीश हरे" के बोल चारों ओर सुनाई दे रहे हैं। रंग-बिरंगी झिलमिलाती पोशाकों में लोग घूम रहे हैं। किसी के हाथ में लड्डुओं से भरी परात है, तो किसी के हाथ में जगमगाते दीपों की थाली। कहीं हँसी के ठहाके तो कहीं दिवाली की शुभकामनाएँ सुनाई दे रहीं हैं।

नहीं नहीं! न ये किसी बॉलीवुड़ मूवी का सीन है न यह कोई भारतीय बाज़ार का नज़ारा है। यह हमारी हिंदी यू.एस.ए. वेस्ट विंडसर-प्लेंसबोरो हिंदी पाठशाला की दिवाली रौनक है। जी हाँ! हिंदी यू.एस.ए. वेस्ट विंडसर-प्लेंसबोरो हिंदी पाठशाला का एक और प्रयास - हमारी प्रथा और संस्कृति की आने वाली पीढ़ी को भेंट। १६ अक्टूबर २०१२ को इस प्रयास के सारे भागीदार - छोटे-बड़े, बच्चे-अध्यापक, स्वंसेवक-अभिभावक, सभी रंग-बिरंगे भारतीय परिधानों में रंगे हुए थे। प्रत्येक कक्षा में दिवाली आरती का गुंजन हो रहा था। चाहे वह म्यूजिक प्लेयर पर बजती आरती के साथ ताल मिला कर हो या पन्ने पर लिखी आरती को पढ़ कर, प्रयास और उसके पीछे की भावना हर कोने में गूंज रही थी।

सभी बच्चों ने अपने-अपने तरीके से दिवाली का महत्व बताया। सभी को एक दूसरे से भारत के विभिन्न प्रान्तों में दिवाली मनाने के तरीकों को जानने-समझने का अवसर मिला। बच्चों ने सुंदर-सुंदर मिट्टी के दिये बनाए, व दिवाली ग्रीटिंग कार्ड्स बनाकर अपने रचनात्मक कौशल का परिचय दिया। सभी अध्यापिकाओं ने बच्चों को अधिक से अधिक बोलने और अपने विचार प्रकट करने के लिए प्रोत्साहित किया।

अध्यापिकाओं के साथ-साथ अभिभावक भी बढ़-चढ़ कर भाग ले रहे थे। अपने बच्चों को तैयार कर, अपने-अपने बच्चों की कक्षाओं की आरती में भाग ले कर, इस उत्साह को अपने-अपने कैमरे में कैद कर इस दिवाली महोत्सव में सहभागी बने। तत्पश्चात् सभी बच्चों को दिवाली की शुभ कामनाओं के साथ लड्डू बाँटे गए।

भारत के विभिन्न प्रान्तों की दिवाली प्रथा, पहनावा, खानपान की विविधता के पीछे छिपी भारतीयता की भावना १६ अक्टूबर को हिंदी-यू.एस.ए वेस्ट विंडसर-प्लेंसबोरो हिंदी पाठशाला में स्पष्ट देखने को मिली। इसी प्रयास को जारी रखते हुए यदि प्रत्येक सप्ताह बच्चे किसी भी विषय पर पाँच पंक्तियाँ हिंदी में तैयार कर कक्षा में बोलें तो ये बच्चे हिंदी बहुत ही शीघ्रता से सीख पाएँगे|

दीपावली के शुभ अवसर पर एडिसन हिंदी पाठशाला के कनिष्ठा-२ कक्षा के विद्यार्थियों ने रंग-बिरंगी कंदीले बनाईं और फिर उस पर विभिन्न रंगों से चित्र बनाये और अपने-अपने नाम लिखे, इस कक्षा परियोजना के द्वारा इन बच्चों ने हिंदी में अपना नाम लिखना सीखा और रंगों के नाम सीखे।

मेरे अनुभव और विचार

नमस्ते,

मेरा नाम विद्या उमाशंकर है। मैं ईस्ट ब्रंस्विक हिंदी पाठशाला में कनिष्ठा-२ की शिक्षिका के रूप में पिछले चार साल से स्वयंसेविका का कार्य कर रही हूँ। बच्चों को हिन्दी सिखाने का मौका मायनो जी ने मुझे दिया तो मेरी प्रसन्नता का ठिकाना नहीं रहा, और मैं पूरी लगन से इस कार्य में जुट गई। यहाँ पर जितना बच्चों को पढ़ाती हूँ उतना खुद नया सीखती हूँ। बच्चों के साथ गीत गाना, स्वरों की सी. डी. की धुन पर गाना, कहानियाँ, उनके साथ हिन्दी में बातें करना, नए-नए तरीकों व खेलों से बच्चों को हिंदी सिखाने में समय का पता ही नहीं चलता। मेरे साथ स्वयं सेवक का कार्य करने वाली स्वागता माने भी उतनी ही उत्साहित होकर नए तरीके सोचकर आती हैं।

हमारा क्लास प्रोजेक्ट बड़ी अच्छी तरह से काम कर गया। बच्चों ने "रंग", "जानवर" खुद की विचारधारा से बनाकर अपनी होशियारी की झलक दिखाई। हम बच्चों को एक दूसरे के साथ हिंदी में बोलने के लिए प्रेरित करते रहते हैं। शायद हमारी भाँति बच्चे भी शुक्रवार की राह देखते हैं। प्रत्येक शुक्रवार हमारे लिए नया अनुभव होता है। हमारी कक्षा की परीक्षा भी हँसी मजाक में होती है। मैं कभी-कभी कविता लिखने का प्रयास करती हूँ। इसके साथ -साथ अपने तथा सहेलियों के बच्चों को भजन सिखाती हूँ। बहुत उतार-चढ़ाव देखने के बाद यहाँ पर छोटे बच्चों के साथ जो मेरा समय बीतता है उस प्रसन्नता का अनुमान किसी को भी नहीं होगा। मन को बहुत शांति मिलती है। रचिता जी और देवेन्द्र जी आप को बहुत धन्यवाद, आप दोनों ने हमें बहुत अच्छी दिशा दिखाई है। आप के साथ रहने से हम भटक नहीं सकते ।

धन्यवाद

भारत माँ के बच्चे

भारत माँ तुझे सलाम,
मैं छोड़ आई तुझे परदेसी,
पर ले आई तेरी याद और संस्कृति।
लोग पूछते हैं मुझे,
आई तू कहाँ से?
गर्व से बताती हूँ,
भारत माँ की बच्ची हूँ मैं।
और भी आये दो महान भारत से,
जानते हैं उन्हें रचिता जी और देवेन्द्र जी के नाम से।
शुरू किया उन्होंने हिंदी यू.एस.ए.,
अभी सिखाते हैं हम, हमारे बच्चों को--
बात करना, पढ़ना, लिखना, और कविता हिंदी में।
इससे पता चलता है कि,
हम उत्तर में रहें या दक्षिण,
पूरब में या पश्चिम,
हम तो सदा रहेंगे,
भारत माँ के अच्छे बच्चे।

माँ की ममता

धरती के बिना लोग अधूरे हैं।
लोगों के बिना संसार अधूरा है।
शब्द के बिना बोल अधूरा है।
गाने के बिना संगीत अधूरा है।
जल के बिना प्यास अधूरी है।
खाने के बिना भूख अधूरी है।
जीने के बिना मरना अधूरा है।
दिल के बिना प्यार अधूरा है।
दोस्त के बिना खुशियाँ अधूरी हैं।
खुशियों के बिना हँसना अधूरा है।
उजाले के बिना अँधेरा अधूरा है।
जीत के बिना हारना अधूरा है।
दुःख के बिना सुख अधूरा है।
लड़के के बिना लड़की अधूरी है।
माँ के बिना बच्चा अधूरा है और माँ की ममता और
आशीर्वाद के बिना हर काम अधूरा है।

"वार्ली" कला

मेरा नाम शिखा मित्तल है। मैं ललित कला में गहरी रुचि रखती हूँ। मैं हमेशा प्रकृति से प्रेरित होती हूँ और किसी भी प्रकार की कला के बारे में पढ़ना अच्छा लगता है। मैं अमेरिका १० साल पहले आयी थी। मैं अपने दो बच्चों और पति के साथ प्लेंसबोरो में रहती हूँ। भारत की सभ्यता बहुत ही गहरी और भिन्न है। मैंने मुंबई, महाराष्ट्र के पास पनपने वाली "वार्ली" कला के बारे में कुछ लिखा है। आशा है आपको रुचिमय लगेगा।

आज की प्रगति कल का इतिहास है, अर्थात् मानव जाति का सम्बन्ध शैशव काल से है। यह माना जाता है कि मानव की जागरूकता उसकी आदिकालीन दृष्टि और ध्वनि से आई है। हम सब दुनिया में अपनी अमिट छाप छोड़ना चाहतें हैं, परन्तु आदि मानव ने कुछ ज्यादा किया। उसने अपने निशान इस जग में छोड़े।

वार्ली चित्रों की कहानी शुरू हुई एक नए कैनवास अर्थात् झोपड़ी की दीवारों पर। यह चित्र उनके जीवन का प्रतिबिम्ब दर्शाते हैं, जैसे शिकार, सामूहिक भोजन बनाना, खेत जोतना, दूध निकालना। 'जीवन काल का पेड़' और 'तारपा नृत्य' वार्ली चित्र महत्वपूर्ण हैं, और अक्सर देखे जाते हैं। वार्ली शब्द का अर्थ है भूमि का टुकड़ा। बाकि समूह की तरह वार्ली किसी धार्मिक छवि का प्रयोग नहीं करता है, इसलिए यह एक धर्म निरपेक्ष कला है।

इतिहास

इसकी जड़ें १० वीं सदी से निकली हैं। वार्ली चित्र गाँव के घरों की दीवारों पर अलंकृत किए जाते हैं। लोग उन्हें वार्ली जनजाति की दैनिक और सामाजिक घटनाओं की एक अभिव्यक्ति के रूप में जानते हैं।

वार्ली एक भारतीय अनुसूचित जनजाति है और मुंबई के उत्तरी सरहद पर रहती है। मुंबई के इतने निकट होने के बावजूद वार्ली आदिवासी आधुनिक शहरीकरण के सभी प्रभावों से दूर हैं। वे अपने विश्वासों, जीवन और रीतिरिवाजों को मानते हैं। ये चित्र लोकगीत संचारण के भी साधन हैं।

चिह्न और उनके महत्व

ये चित्र बहुत ही सरल लगते हैं, लेकिन प्रकृति में प्रतीकात्मक हैं। इन अत्यंत मौलिक चित्रों में एक बहुत ही बुनियादी ग्राफिक शब्दावली का उपयोग है:

एक चक्र, एक त्रिकोण और एक वर्ग

चक्र - सूर्य और चन्द्रमा को दर्शाया गया है

त्रिकोण - पहाड़ों और चोंचनुमा पेड़ों को दर्शाया गया है

वर्ग - जमीन का एक टुकड़ा

वर्ग का आविष्कार मानव ने किया। यह एक पवित्र बाड़े या जमीन के एक टुकड़े का संकेत है, इसलिए प्रत्येक अनुष्ठान चित्र में केंद्रीय मकसद वर्ग है, यह "चौक" है, इसके अंदर पलघट, जो देवी माँ की प्रजनन क्षमता का प्रतीक है। ध्यान देने योग्य है कि पुरुष देवता वार्ली के बीच असामान्य हैं। इन अनुष्ठान चित्रों

“वार्ली” कला

में केंद्रीय आकृति शिकार, मछली पकड़ना, खेती, त्यौहार, नृत्य, पेड़ और जानवर हैं।

संतुलन और सामंजस्य

इन चित्रों की ताल और एकता ब्रह्मांड के संतुलन और सद्भाव का प्रतीक मानी जाती है। पुरुषों और महिलाओं का गोल चित्रों में गाढ़ा डिजाइन जीवन के चक्र का प्रतीक है। मानव और पशुओं के शरीर में दो नोक पर शामिल त्रिकोण हैं, ऊपरी त्रिकोण ट्रंक और कम त्रिकोण श्रोणि दर्शाता है।

वार्ली पेंटिंग की विधि

वार्ली चित्रों के पृष्ठभूमि रंग

हिना, नील, गेरू, काला, मिट्टी का रंग, लाल ईंट जैसा, किन्हीं दो रंगों का गठबंधन प्रयोग करके पृष्ठभूमि बना सकते हैं। जैसे आधे लाल और आधे काले रंग का प्रयोग कर पृष्ठभूमि बना सकते हैं।

वार्ली चित्रों की सामग्री

आमतौर पर वार्ली में सफ़ेद रंग का प्रयोग करते हैं जो चावल के लेप से चित्रित किया जाता है। बहरहाल, समय के साथ कई नई वार्ली पेंटिंग अलग-अलग तरीकों से विकसित की जा रही है। लोगों ने वार्ली और मधुबनी चित्रकारी का संयोजन शुरू कर दिया है।

विधि

वार्ली कला करने का एक आधुनिक तरीका निम्न है:

चरण 1: एक डिजाइन चुनें
चरण 2: आधार के रूप में उपयोग करने के लिए सामग्री को चुनें। यह कागज, कपड़ा, बर्तन, घर की दीवार, लकड़ी का टुकड़ा, लकड़ी की छाल आदि हो सकते हैं।
चरण 3: पहले एक कागज पर डिजाइन बना लें, फिर उसकी आधार सामग्री पर नकल कर लें।
चरण 4: फिर जिस भी रंग का आप उपयोग कर रहे हैं , उसे बना लें।
चरण 5: इस पर रूपरेखा सफेद रंग का उपयोग कर के बनायें और फिर इसे 24 घंटे के लिए सूखने दें।

युक्तियाँ और चालें

- विभिन्न प्रकार की सामग्री के साथ परीक्षण करें। आप इसे अपनी चादरें, साड़ियाँ, कपड़े, कुशन कवर और पर्दे पर भी कर सकते हैं।
- एक स्टाइलिश बर्तन, नैपकिन होल्डर, लैंप शेड्स बनाने का प्रयास या केवल एक बुकमार्क के साथ आरम्भ कर सकते हैं।
- अतिरिक्त चमक के लिए दर्पण या रंगीन धागे जोड़े जा सकते हैं।
- इसे और अधिक आकर्षित बनाने के लिए, बॉर्डर का प्रयोग भी कर सकते हैं।
- ♦ यदि "गेरू" का उपयोग कर रहे हैं, तो अलसी के तेल के साथ मिश्रण करें, ताकि लंबे समय तक रहे।

अगले पृष्ठ पर बने चित्र मेरी सहेली वंदना द्वारा बनाए गए हैं। इनकी भी ललित कला में गहरी रुचि है। ये महाराष्ट्र की रहने वाली हैं और इस कला को बहुत बारीकी से समझती हैं।

“वार्ली” कला

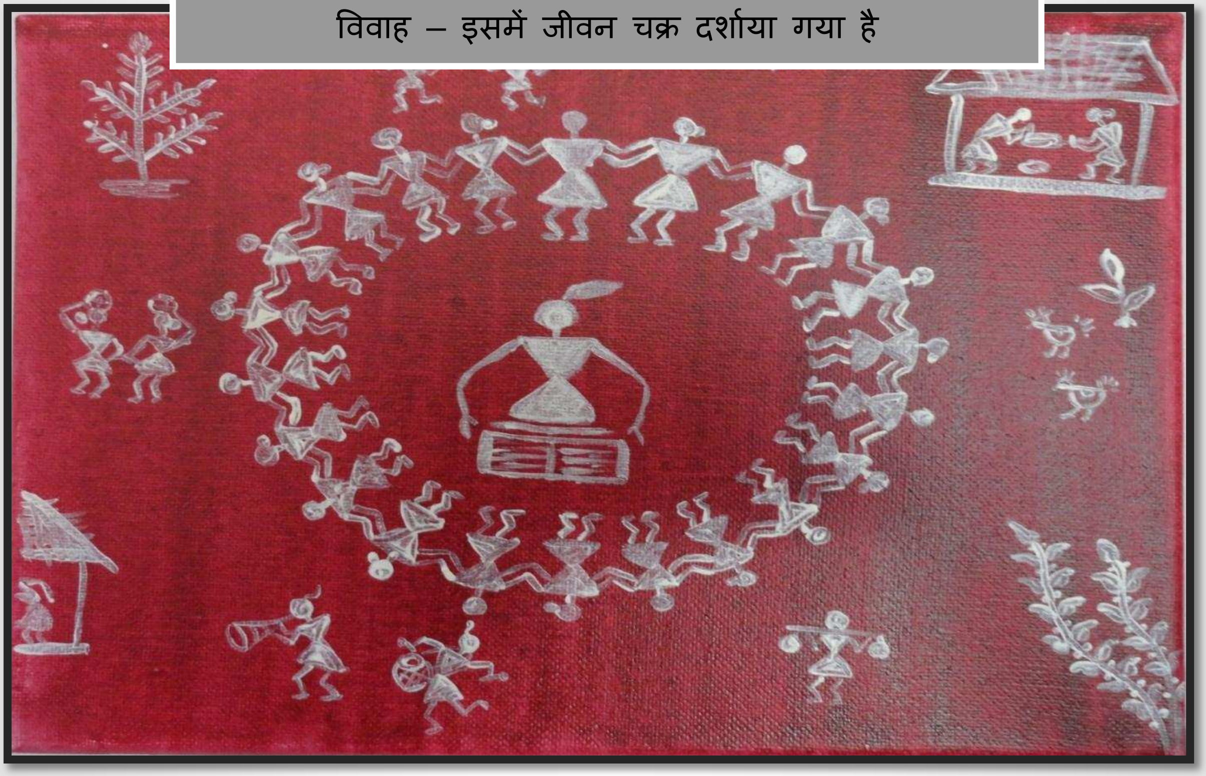

विवाह – इसमें जीवन चक्र दर्शाया गया है

मंदिर – इसमें नृत्य और पूजन दर्शाया गया है

हमारी शक्ति

श्वेता सीकरी

सुश्री श्वेता सीकरी एडिसन, न्यू-जर्सी में रहती हैं तथा भारत में हरियाणा प्रान्त की रहने वाली हैं। उनके दो बच्चे हैं। बड़ा बेटा ९ वर्ष का है तथा एडिसन हिंदी पाठशाला का विद्यार्थी भी है। श्वेता जी, मर्क फारमेसुएटीकल, औषध निर्माण करने वाले बहुराष्ट्रीय संस्थान में कंप्यूटर विश्लेषक के पद पर कार्यरत हैं। कार्य में व्यस्त होने के उपरांत भी लेखन कार्यों में काफी रूचि रखती हैं। कर्मभूमि के पूर्वांकों में भी इनकी सुन्दर कहानियाँ प्रकाशित हो चुकी हैं।

हम सबके पास बहुत शक्तियाँ होती हैं। लेकिन उन्हें प्रयोग करने की समझ नहीं होती और यह भी नहीं पता होता कि हमारे पास कौन सी शक्ति है। बहुत आश्चर्य की बात है कि जब हम छोटे होते हैं तो ये शक्तियाँ अधिक होती हैं, पर समय के साथ-साथ जैसे-जैसे बड़े होते जाते हैं, हम उन शक्तियों को खो देते हैं। इसलिए नहीं कि बड़े होने पर वे चली जाती हैं, परंतु इसलिए क्योंकि हम उन्हें संजो कर नहीं रख पाते।

ऐसी ही एक कहानी मारिया की है। मारिया बचपन से ही बहुत शर्मीली, कम बोलने वाली और सबकी सहायता करने वाली लड़की थी। कदाचित् अपनी इसी विशेषता के कारण उसमें एक अजीब सी शक्ति थी। उसे किसी भी अच्छी या बुरी घटना के घटित होने से पूर्व ही पूर्वाभास हो जाता था। किसी भी विषय को ले कर उसका पूर्वानुमान सदा सही होता था। बचपन से ही उसमें यह शक्ति थी। बचपन में जब कभी वह बहुत रोती थी तो कोई बुरी घटना हो जाती थी। इससे मारिया की माँ ने निष्कर्ष निकाला कि हो न हो मारिया के पास एक अद्भुत शक्ति है। मारिया के माँ-बाप उससे बहुत प्रेम करते थे। वह पढ़ाई में भी अच्छी थी। उसके अध्यापक और सहपाठी सभी को वह अच्छी लगती थी। छुटपन में किसी अनचाही घटना के आभास से वह डर जाती थी और अपनी माँ के साथ चिपक कर बैठ जाती थी। मारिया की माँ उसे समझाती थी कि जो होगा अच्छा होगा और सब कुछ ईश्वर पर छोड़ दो। उसे यह भी समझाती कि जो उसकी घटनाओं को भाँप जाने की शक्ति है, अंदाजा लगाने की वह एक अद्भुत शक्ति है उसे कभी खोने नहीं देना। छोटी सी आयु में ही मारिया बहुत समझदार हो गयी थी। कैसे छोटी-छोटी बातों से नहीं डरना, कैसे छोटी-छोटी बातों में अपनी ख़ुशी को नियंत्रण में रखना है।

जैसे-जैसे मारिया बड़ी हुई, उसकी शक्ति भी उसके साथ बढ़ने लगी। अब तो घर में या स्कूल में सब लोग उससे पूछते थे कि उसे कैसा लग रहा है? उसके मित्र उससे पूछते थे कि परीक्षा सरल आएगी या कठिन। हर दम इन प्रश्नों से घिरी रहती थी मारिया। इसके साथ-साथ मारिया अपने दोस्तों की पढ़ाई में भी सहायता करती थी। अचानक मारिया को लगने लगा कि वह सबसे अलग है जो उसे आभास होता है वह बाकियों को नहीं होता। ऐसा सोच कर उसने अपने आस-पास एक अहंकार की दीवार खड़ी करनी आरम्भ कर दी। अब लोगों के पूछने पर कि हमारा काम ठीक हो जायेगा या परीक्षा में सरल प्रश्न आयेंगे या कठिन, मारिया ने जवाब देना बंद कर दिया था। सबको यही कहना शुरू कर दिया कि मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा। सबने यही सोचा कि मारिया सच ही कह रही है। उसको कोई आभास नहीं हो रहा होगा, पर असल में मारिया जान जाती थी कि क्या होने वाला है।

उसकी माँ ने भी यही सोचा कि वह सच कह रही है। पर उसकी माँ ने यह बात भाँप ली थी कि मारिया झूठ बोल रही है। हुआ यूं कि परीक्षाओं में मारिया को पता चल गया कि परीक्षा कठिन आएगी और इस बात को उसने उल्टा कर के अपने दोस्तों को बताया ताकि वे लोग कम पढ़ें। उसकी इस बात को सच मान कर सब बच्चों ने कम पढ़ाई की। चूँकि मारिया ने अच्छे से पढ़ाई की थी इसलिए उसके अंक सबसे ज्यादा आये थे। यह बात उसने खुद अपनी माँ को बताई। कक्षा में सबसे ज्यादा अंक पाने के कारण अध्यापक उसको और ज्यादा चाहने लगे। यह देख कर मारिया को बहुत अच्छा लगा। उसे लगा कि ऐसा करना उसके लिए बहुत अच्छा है। अतः उसने तय कर लिया कि वह अगली परीक्षा में भी ऐसा ही करेगी।

मारिया अब स्वार्थी बन चुकी थी, जो उसकी अपनी शक्ति के लिए ठीक नहीं था। और बिल्कुल यही हुआ, मारिया की यह शक्ति धीरे-धीरे कम होने लगी। अगली परीक्षा में मारिया ने फिर से यही करना चाहा। सारे मित्रों से कहा कि परीक्षा सरल आएगी, किन्तु खुद जी जान से पढ़ाई की। लेकिन इस बार मारिया को कोई आभास नहीं हुआ। उसने बस पिछली बार की तरह इस बार भी अपने सहपाठियों को जाल में फ़साना चाहा। जब असल परीक्षा आयी तो वह बहुत ही सरल थी। मारिया के सारे मित्र बहुत प्रसन्न थे लेकिन मारिया नहीं। इस बार मारिया ने क्लास में सबसे ज्यादा अंक प्राप्त नहीं किए थे। इस बार सबसे ज्यादा अंक प्राप्त किए मारिया की सबसे अच्छी मित्र ने। मारिया और उसकी यह मित्र इकट्ठे पढ़ते थे। पर जब से मारिया के दिमाग में अलग बातें आनी प्रारम्भ हुईं, तबसे मारिया ने उसके साथ पढ़ाई करनी बंद कर दी थी। मारिया को इस बात से बहुत गुस्सा आया। गुस्से में दनदनाती हुई मारिया घर के अन्दर घुसी। उसकी माँ ने उसे खाने के लिए बुलाया तो मारिया ने गुस्से में मना कर दिया। उसकी माँ ने कभी भी उसे ऐसे नहीं देखा था। माँ ने प्यार से मारिया को अपने पास बुलाया और किसी तरह खाना खिलाया। माँ के पूछने पर कि क्या हो गया, मारिया ने बताया कि इस बार उसके नहीं परन्तु उसके मित्रों के अधिक अंक आए हैं। उसकी माँ ने उसे समझाया कि कोई बात नहीं, तुम थोड़ी और पढ़ाई करना और अगली परीक्षा में तुम और अधिक अंक ले लेना। उसकी माँ ने उसे यह भी समझाया कि हमें अपने मित्रों की सफलता पर उनसे ईर्ष्या नहीं करनी चाहिए। अपने अन्दर स्पर्धा रखो, लेकिन कभी मित्रों से ईर्ष्या मत करो। मारिया ने माँ की बात बहुत ध्यान से सुनी। लेकिन उसने अपने अन्दर क्रोध और ईर्ष्या का जाल भी बिछा लिया था, जिस कारण माँ की बातों का उसपर बहुत ज्यादा प्रभाव नहीं हुआ। धीरे-धीरे मारिया अपनी शक्ति से हाथ धो बैठी थी। मारिया अब एक साधारण लड़की बन चुकी थी। और इस बात का आभास मारिया को भी हो चुका था। इस बात से मारिया को और गुस्सा आने लगा। मारिया के माता-पिता इस बात से बहुत चिंतित थे। उन्होंने मारिया को बहुत बार समझाने की कोशिश की, लेकिन मारिया ने क्रोध को अपना साथी बना लिया था।

अपनी बेटी को सही राह पर लाने के लिए मारिया की माँ को एक युक्ति सूझी। मारिया के जन्मदिन पर उसकी माँ ने मारिया के सारे सहपाठियों को घर पर बुला लिया। मारिया इस बात से अनजान थी। जन्मदिन वाले दिन मारिया बहुत खुश थी। मारिया को जन्मदिन की बधाई देने के लिए मारिया के रिश्तेदारों के फ़ोन आने लगे। सब मारिया से यही पूछने लगे कि क्या उसे अभी भी किसी घटना के होने का आभास हो जाता है? यह प्रश्न सुन कर मारिया फिर परेशान हो गयी और सुबकने लगी। तभी दरवाज़े पर घंटी बजी। मारिया की माँ ने उसे दरवाज़ा खोलने को कहा। जब मारिया

ने दरवाज़ा खोला तो अपने सारे सहपाठियों को खड़ा पाया। मारिया एकदम सकपका गयी। उसे लगा कि कहीं उसके मित्र उसकी शिकायत करने तो नहीं आये। ख्यालों में डूबी मारिया को उसकी मित्र ने 'हैप्पी बर्थडे" कह कर बधाई दी। एकदम से सकपका कर मारिया ने उन्हें अन्दर आने को कहा। जल्दी से मारिया अपनी माँ के पास पहुँची और उन्हें बताया कि उसके सहपाठी उसे जन्मदिन की बधाई देने आये हैं। माँ ने हँसते हुए कहा कि वह जानती है और उसने सब बच्चों के स्वागत की तैयारी कर रखी है। "तो यह मेरे लिए सरप्राइज था" मारिया ने पूछा। हँसते हुए माँ ने कहा "हाँ"! हँसते हुए मारिया अपने मित्रों के पास चली गयी। पीछे-पीछे उसकी माँ सबके खाने के लिए तरह-तरह के पदार्थ ले कर आईं। सब बच्चों ने जम कर खाया। मारिया पूरे समय सहमी हुई बैठी रही।

सबके खाने के बाद माँ ने सब बच्चों से एक खेल खिलाया। इस खेल में सभी बच्चों को अपनी मनपसंद चीज़, मनपसंद दोस्त, मनपसंद वाक्यात बताने थे। सबसे पहले बारी आयी उस बच्चे कि जिसके अंक मारिया से ज्यादा आये थे। "मेरी मनपसंद मित्र मारिया है क्योंकि वह एक बहुत समझदार और बुद्धिमान लड़की है। मारिया ने सदा मेरी सहायता की है। आज अगर मेरे अंक ज्यादा आए हैं तो केवल मारिया के कारण। मुझे कभी भी किसी बात को समझने में तकलीफ होती है तो मैं मारिया से ही पूछती हूँ। उसने मुझे कभी मना नहीं किया। ऐसी मित्र मिलना बहुत मुश्किल है।" यह कह कर वह बैठ गयी। मारिया ने उसको देखा और धन्यवाद दिया। लेकिन सोचने पर मजबूर हो गयी कि उसने उसके साथ बुरा व्यवहार किया और उसके ज्यादा अंक आने पर उसे बहुत गुस्सा आया था। अब बारी आयी दूसरे बच्चे की उसने भी मारिया से जुड़े हुए वाक्यात को अपना सबसे अच्छा वाक्यात बताया। इस तरह से सभी ने मारिया के बारे में अच्छा कहा। मारिया सब कुछ सुनती रही और सोचती रही। अब बारी आयी मारिया की। मारिया खड़ी हुई और बोलना शुरू किया ' मैं ......मेरा ...' उसे समझ नहीं आ रहा था की वह क्या बोले। उसकी माँ ने उससे कहा कि यदि वह कुछ और बोलना चाहती है या फिर अपने मित्रों को धन्यवाद देना चाहती है आज के लिए तो वह कर सकती है। "हाँ, मैं आप सब का धन्यवाद करना चाहती हूँ कि आप सब लोगों ने आ कर मेरा जन्मदिन विशेष बना दिया। मैं बहुत अच्छी लड़की नहीं हूँ। मैंने तुम लोगों के साथ अच्छा नहीं किया। मैंने तुम्हें बहुत बार गलत बताया कि परीक्षा सरल होगी या मुश्किल। मैं नहीं चाहती थी कि कोई मुझसे आगे निकले। मैं केवल अपने बारे में सोचने लगी थी। मेरे बारे में अभी आप सब ने जो कहा वह अब सच नहीं है। मैं ऐसी होती थी, पर अब नहीं। मुझे क्षमा कर दो। किसी को बिना बताए मैंने आप सब को कष्ट देने का प्रबंध किया था"। यह कह कर मारिया जोर-जोर से रोने लगी। मारिया की माँ ने मारिया को संभाला और उससे कहा "जो भी तुम्हारे मित्रों ने कहा है वह गलत नहीं है। तुम ही वह लड़की हो जो किसी को परेशानी में देख कर उसकी सहायता के लिए तत्पर रहती थी, तुम ही वह लड़की हो जो अपने मित्रों की परीक्षा के समय सहायता करती थी। तुम्हारे मित्र तुम्हें बहुत पसंद करते हैं और मुझे पता है कि तुम भी उन्हें चाहती हो। तुमने अपने आस-पास जो दीवारें खड़ी कर ली हैं, उस कारण तुम्हें तकलीफ हो रही है। अपने आस-पास की दीवारें गिराओ और फिर देखो तुम वही हो, तुम्हारे मित्र वही हैं।" माँ की यह बात सुन कर मारिया को समझ आया कि वह क्या कर रही थी। उसने सबसे क्षमा माँगी। सब मित्रों ने मिलकर बहुत हंगामा किया।

मारिया को इस तरह से इतने दिनों बाद

हँसते हुए देख कर मारिया के माता-पिता को बहुत अच्छा लगा।

असल में हम सभी ने भी अपने आस-पास बहुत सारी दीवारें खड़ी कर रखी हैं। हमारी शक्तियाँ भी लुप्त हो चुकी हैं। जब तक हमें पता चले कि हमारे पास कोई शक्ति है, वह हम से छिन जाती है और उसका कारण हम स्वयं हैं। अगर हम अपने जीवन से अहंकार, क्रोध, ईर्ष्या जैसी दीवारों को गिरा दें तो हमें भी हमारी शक्तियाँ वापिस मिल जायेंगी।

मारिया अब फिर से एक अच्छी, सबकी सहायता करने वाली लड़की बन चुकी थी। मारिया का यही प्रयास रहता था कि वह किसी को दुखी न करे। कक्षा में भी अपने सहपाठियों से उसका व्यवहार पहले जैसा हो गया था। धीरे-धीरे मारिया को उसकी शक्ति वापिस मिलने लगी और फिर से उसे घटनाओं का पूर्वाभास होना आरम्भ हो गया। अब मारिया ने अपने आस-पास कोई दीवार नहीं बनाई और अपनी इस शक्ति को संजो कर रखने का निर्णय किया।

ज्योति काबरा एडिसन हिन्दी पाठशाला में उच्च स्तर – १ की छात्रा है। ज्योति को भारतीय संस्कृति से जुड़ी बच्चों की कहानियाँ पढ़ने व सुनने का शौक है। संगीत एवं चित्रकारी में ज्योति की विशेष रुचि है।

मेरी रुचि - चित्रकला

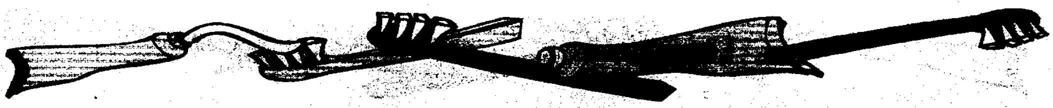

PERFECT SMILES DENTISTRY

101 S White Horse Pike / Rte. 30
Lindenwold, NJ 08021

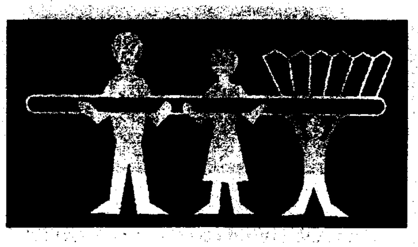

- Modern Computerized Dental office for **Adults & Children**
- Provide **Comprehensive Dental Care** to Patients of All Ages
- Use Digital X-Ray Technology
- **Bi-Lingual** Staff (Spanish, Hindi)
- Most Insurances Accepted Including **HORIZION NJ HEALTH & AMERICHOICE State Insurance**
- Payment Plans Available Thru Care Credit
- Offer **Discounted Packages** for Adults & Children With No Insurance
- Immediate Appointments Available
- Emergency Appointments Available Daily
- **Evenings And Weekend Hours** Available

WALK-INS WELCOME
CALL FOR APPOINTMENT
856-566-7466

Our Bi-lingual (English/Spanish/Hindi) Administrative Staff Can Assist you in Making your Appointment
Mon. – Weds. (9am-5:30pm) Thurs. (10am-7pm) & Fri. (9am-4:30pm)

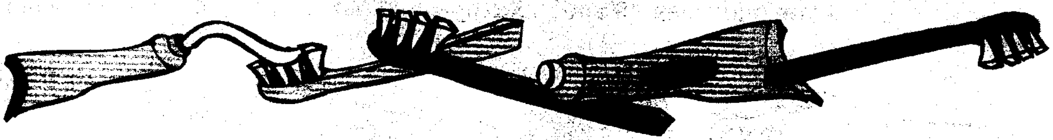

CONVIENTENTLY LOCATED ON THE CORNER OF EAST ELM AVE ACROSS FROM RICHIE'S TAVERN & WATER ICE FACTORY.

विद्यार्थी

हरप्रीत कलसी

आज आप से अपना परिचय अध्यापिका के रूप में करवाते हुए मुझे बहुत गर्व महसूस हो रहा है। मेरा नाम हरप्रीत कलसी है और मैं पिछले १५ वर्षों से विद्यार्थियों से शिक्षिका के रूप में जुड़ी हुई हूँ। सौभाग्य वश मुझे संगीत और भाषा की शिक्षा प्राप्त कर उसे बाँटने का अवसर मिला है। यह सिलसिला १५ वर्षों से जारी है और मैं आशा करती हूँ कि आने वाले वर्षों में भी यह सिलसिला ऐसे ही चलता रहेगा।

विद्यार्थी यानी एक विशेष रथ पर सवार वह व्यक्ति जो अपने रथ को संसार के हर ज्ञान से भर लेना चाहता है। चाहे हम कलियुग के विद्यार्थी की बात करें या सतयुग के विद्यार्थी की। विद्या ग्रहण करने वाले को हर युग में विद्यार्थी के नाम से ही जाना गया है। हर युग में विद्या ग्रहण करने का तरीका भले ही भिन्न रहा हो परंतु इसके आदान-प्रदान के स्रोत शिक्षक और विद्यार्थी ही रहे हैं।

आज यानी कलियुग का विद्यार्थी स्वतंत्र है। उसकी शिक्षा का स्रोत शिक्षक तक ही सीमित न रह कर कई दिशाओं में फैला है। जिस के द्वारा वह चाहे जितनी चाहे ज्ञानवृद्धि कर सकता है।

इतिहास हमें अच्छे-बुरे विद्यार्थियों के उदाहरण समय -समय पर देता आया है। एक ओर अर्जुन जैसे विद्यार्थी जिसने जीवन भर भरपूर ज्ञान प्राप्त किया और सदा ज्ञान का सदुपयोग किया। दूसरी ओर रावण जैसे विद्यार्थी जिसने अपनी बुद्धि और बल पर ज्ञान प्राप्त करने में कोई कमी नहीं छोड़ी, परंतु एक हठ के कारण ज्ञान का सदुपयोग ना करते हुए ज्ञान को विनाशकारी स्रोतों में लगाया और इतिहास में एक बुरा नाम कमाया।

युग चाहे कोई भी हो वही विद्यार्थी सफलता की चरमसीमा पर पहुँचता है जो अपने जीवन को अनुशासन से जीता है; सही समय पर सही ज्ञान ग्रहण करे और जीवन में अपने लक्ष्य को पाने में उसका सदुपयोग करे। अपने जीवन की एक दिशा निश्चित कर के सही मार्ग पर चले। अपने आस-पास के आक्रमणों में फँस कर समय व्यर्थ ना करे। सुनने और पढ़ने में यह बात जितनी सरल लगती है; अपने जीवन में इसे उतारना उतना ही कठिन है। अर्जुन और एकलव्य जैसे महान विद्यार्थियों ने इसी सरलता और अनुशासन को अपने जीवन में अपनाया और सफलता प्राप्त कर दूसरों के लिए इतिहास में मार्गदर्शक बने।

आदर्श विद्यार्थी

आदर्श विद्यार्थी मात्र अपनी कक्षा की पुस्तकों से संतुष्ट नहीं होता बल्कि वह अन्य पुस्तकों, पत्र और पत्रिकाओं का भी समान रुप से अध्ययन करता है।

काव्य-पाठ दिवस

वेस्ट विंडसर प्लेंसबोरो हिंदी स्कूल २०१३

किसको खबर थी, किसको यकीन था, ऐसे भी दिन आएँगे, हाय! जिनसे हम दूर भागा करते थे, जिसको रट-रट कर रोया करते थे, हाय!! ये दिनकर, ये हरिवंश राय, वो शिव मंगल सिंह सुमन, और महादेवी वर्मा, उफ़!!

खड़ा हिमालय बता रहा है, पुष्प की अभिलाषा सुनो, सतपुरा के घने जंगल की अँधेरी रात में दीपक जलाये कौन बैठा है! लघु सरिता का बहता जल कल-कल करता कह रहा है, मछली जल की रानी है!!

ये बच्चों का मंच है, माँ बाप की परीक्षा नहीं, ये कविता-पाठ है, कोई जीवन मरण का लेखा जोखा नहीं !!!

१९ जनवरी २०१३ को वेस्ट विंडसर प्लेंसबोरो हिंदी स्कूल का काव्य-पाठ दिवस था। इस दिन हर स्तर के प्रत्येक बच्चे को मंच पर जा कर कविता पाठ करने का अवसर मिलता है।

प्रशंसनीय बात यह है कि चार साल के बच्चे से लेकर किशोर उम्र के बच्चे इसके सहभागी हैं। हर बच्चा अपने अंदाज में मौखिक और दृष्टिगत रूप से कवि की कल्पना को व्यक्त करता है। ये प्रयत्न, इन बच्चों का आत्मविश्वास, इनकी स्मरण शक्ति, इनके रचनात्मक रसों का मिला जुला संगम है, जिसकी जितनी प्रशंसा की जाए कम है। बच्चों का भरसक प्रयास ही इसका आधार है।

अब बच्चे अभिमन्यु तो हैं नहीं, कोई तो इन बच्चों के साथ मेहनत कर रहा है, इन्हें प्रोत्साहित कर रहा है। कौन हैं वे लोग? वे कोई और नहीं, हम माँ-बाप और अध्यापक गण ही हैं। हमारे और हमारे बच्चों के प्रयास का प्रत्यक्षीकरण बच्चे प्रस्तुत करते हैं। बस! प्रयास तक ही है हमारी सीमा, उस मंच पर जो कुछ है वह इन बच्चों का है, इनका साहस, इनका आत्मविश्वास है, इनका प्रयास है। हमारी तुम्हारी किसी भी माँ बाप की परीक्षा नहीं है ये मंच।

हमारी काव्य परीक्षा तो हो चुकी है, जब हम अपने बचपन के दिनों में दिनकर और महेश्वरी को याद करते थे। सतपुरा के जंगल में कबीर के दोहे रटा करते थे। हम पास हों या फ़ेल, तब हम निःसंकोच परीक्षा पत्र लिख आते थे। तो आज जब हमारे बच्चों के द्वारा इन कवियों की कल्पना का प्रस्तुतीकरण का आनंद लेने के दिन हैं, तो हम अपनी परीक्षा के दिनों से ज्यादा उत्तेजित और व्याकुल हैं.

शांत गदाधारी भीम शांत!!! अब ये मत समझ लेना की ये बच्चों की परीक्षा है। ये बच्चों की परीक्षा नहीं है, ये तो जीवन में आने वाली अनेक परीक्षाओं का सामना करने का प्रशिक्षण मंच है। अपने बच्चों का आत्मविश्वास, इनकी लगन, इनकी सृजनात्मक

योग्यता को उभारने और तराशने का मंच है।

तो अपने बच्चों को अर्जुन की तरह निपुण कैसे बनाएं। क्या इनका प्रशिक्षण इस एक दिन में समाप्त। नहीं, मैं नहीं मानती। इसलिये मेरा आयोजकों से निवेदन है कि अध्यापकों द्वारा बच्चों को निर्णायक गण की प्रतिक्रिया दें, किस श्रेणी में और कितनी मेहनत की आवश्यकता है और कैसे उनमें बढ़ोतरी लायें। तभी होगा इस मंच, हर माँ-बाप, हर गुरु का उद्देश्य पूरा।

काश मैं बब्बर शेर होता

रेनू सिंह

कविता प्रतियोगिता का दिन नजदीक आ रहा था और मेरे बेटे ने कोई कविता नहीं चुनी थी। मैं रोज़ हिंदी कविता की साइट्स को छान-छान कर थक गयी थी। जो कविता बताओ उसके लिए, “नहीं, ये नहीं, मुझे ये पसंद नहीं” सुन कर मैं थक गयी। आखिर में मैंने पूछा “तो भई, क्या पसंद है तुम्हें?” बेटा तपाक से बोला, “बब्बर शेर”। तो जी, मैं बब्बर शेर पर कविता ढूँढने लगी, पर कुछ नहीं मिला। थक हार कर मैंने कागज़ कलम उठाई, और ये कविता लिखी। बेटे को सुनाई तो बेटे को बेहद पसंद आई। आशा है और बब्बर शेर के चहेतों को ये बाल कविता पसंद आएगी।

काश मैं बब्बर शेर होता
जंगल का राजा कहलाता

न होती सुबह उठने की बेचनी
न होती रात सोने की जल्दी
चौबीस में से बीस घंटे
पैर पसार कर मैं सोता

न होती खाने की फिक्र
न होती काम की चिंता
शिकार का पहला निवाला
मैं ही दांतों ताले दबाता

न अपना कुछ बांटना पड़ता
न किसी का हुक्म मानना पड़ता
मेरे अधिकार क्षेत्र में
सबसे पहला हक मेरा ही होता

काश मैं बब्बर शेर होता

मेरी मतलबी अंधी चाहत ने है दिया
बब्बर शेर को विलुप्त प्रजाति का खिताब

काश मैं ऐसा कुछ कर जाऊं
जंगल के राजा को दे जाऊं
जो उसका हक है
जो प्रकृति का नियम है

काश मैं बब्बर शेर होता
जंगल का राजा कहलाता

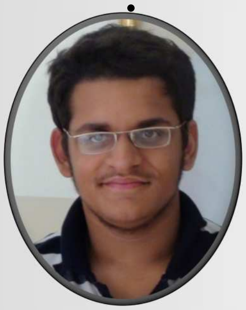

विद्यार्थी – मेरी दृष्टि में

आदित्य कुमार

आदित्य कुमार हिंदी यू.एस.ए. के स्नातक उत्तीर्ण छात्र होने के साथ-साथ हिंदी यू.एस.ए. के युवा कार्यकर्ता भी हैं। एडिसन हाई स्कूल में ११वीं कक्षा के मेधावी छात्र हैं व एडिसन हाई स्कूल में हिंदी ऑनर के विद्यार्थी हैं। शांत स्वभाव के आदित्य को भारतीय कथा-कहानी सुनने में विशेष रुचि है।

काग चेष्टा, वको ध्यानम्, स्वान निद्रा तथैव च।
अल्पहारी, गृह त्यागी, विद्यार्थी पंच लक्षणं॥

जब माँ से यह सुना और समझा था, तो बहुत ज्यादा समझ नहीं आया था, परंतु अभी समय के साथ-साथ इन पंक्तियों का अर्थ समझ में आ रहा है। हमारी भारतीय संस्कृति में हर बात को बहुत अच्छे से समझाया गया है।

काग चेष्टा अर्थात् हमारे निरंतर होने वाले प्रयास। जैसे कि हमने बचपन में कौए की कहानी भी सुनी है कि किस प्रकार घड़े में पत्थर डाल कर उसने पानी का स्तर ऊपर किया व पानी पी लिया। हमें कठिनाइयों से घबराकर अपना प्रयास नहीं छोड़ना चाहिए। यदि समस्या है तो उसका समाधान भी अवश्य ही होगा।

वको ध्यानम् अर्थात् बगुले जैसा ध्यान। जिस प्रकार बगुला नदी किनारे ध्यान लगाकर चुपचाप खड़ा हो जाता है अपने शिकार की खोज में उसी प्रकार हमें भी अपने ध्यान में अर्थात् पूरी Concentration से अपनी पढ़ाई की ओर ध्यान लगाना चाहिए।

स्वान निद्रा यानि कुत्ते की भाँति हमारी कच्ची नींद हो, तात्पर्य सतर्क होकर सोना, खटक की आवाज में भी नींद खुल जाए। कम खाना खाना भी एक विद्यार्थी का कर्तव्य है।

इस दोहे में कहा गया है, गृह त्यागी अर्थात् अपने घर से दूर रह कर शिक्षा प्राप्त करना। भारत

में प्राचीन शिक्षा प्रणाली में ऐसा ही होता था। सभी विद्यार्थी अपने घर व माता-पिता से दूर अपने गुरु जी के आश्रम में जाकर शिक्षा ग्रहण करते थे। परंतु यह शिक्षा वे अपने बचपन से ही आरम्भ कर देते थे। आजकल ऐसा नहीं होता। हम अपने माता-पिता के साथ रह कर ही बारहवीं कक्षा तक की शिक्षा प्राप्त करते हैं उसके बाद गृहत्यागी अर्थात् होस्टल में चले जाते हैं। बहुत से लोग पहले से ही होस्टल में चले जाते हैं।

लेकिन मैं यहाँ पर गृह त्यागी का अर्थ होस्टल जाने से नहीं लेना चाहता, मैं इसे इस प्रकार लेता हूँ कि हमें केवल अपनी पढ़ाई व माता-पिता पर ध्यान देना है। हमें बहुत ज्यादा सुविधाओं पर ध्यान नहीं देना। बाकि परिवार में क्या हो रहा है, उसमें हमें बहुत ज्यादा रुचि नहीं लेनी तभी तो हम ध्यान से पढ़ पाएँगे। हमारा उद्देश्य पढ़ाई करना व माता-पिता के स्वप्नों को साकार करना है।

“अच्छा या आदर्श विद्यार्थी वही है, जो हर पल सीखने की बात करता है।”

अच्छा या आदर्श विद्यार्थी वही है, जो हर पल सीखने की बात करता है। लेकिन अच्छा विद्यार्थी होने के साथ-साथ हमें पहले एक अच्छा इंसान बनना होगा। और अच्छा मनुष्य बनने के लिए हमारे पास ज्ञान या विद्या होनी चाहिए। तो अच्छा मनुष्य बनना व ज्ञानी होना एक दूसरे के पूरक हुए। विद्यार्थी तो हम जीवन भर रहते हैं क्योंकि हम सदा ही कुछ न कुछ सीखते रहते हैं। यदि हम कुछ सीखना ही नहीं चाहते तो हम अच्छे विद्यार्थी व भविष्य में अच्छे मनुष्य नहीं हो सकते। ज्ञान लेना केवल हमारे विद्यालय की पाठशाला तक ही सीमित नहीं है, कभी-कभी हम मान लेते हैं हमने कॉलेज कर लिया तो और हम जॉब कर रहे हैं, अब हम विद्यार्थी नहीं रहे। सीखना या ज्ञान अर्जित करना तो पाठशाला और कॉलेज से पहले व बाद में भी चलता रहता है। ज्ञान ही हमें विनम्र, विमल, सहनशील, दूसरों के प्रति दया का भाव रखने वाला बनाता है। इन्हीं गुणों के होने से हम अच्छे इंसान व योग्य नागरिक बन सकते हैं।

यह ज्ञान हमें सर्वप्रथम अपने माता-पिता व परिवार से प्राप्त होता है। फिर हम पुस्तकों से व अपने गुरुजनों से अर्थात् शिक्षकों से ज्ञान प्राप्त करते हैं। अच्छी पुस्तकें हमारी सबसे अच्छी गुरु हैं।

अच्छा मनुष्य व अच्छा विद्यार्थी बनने के लिए सबसे पहले हमें अपने अहम् को समाप्त करना होगा। बहुत बार ऐसा होता है, हमें कोई कुछ समझाने लगता है तो हम अपना धैर्य खो देते हैं, और बोलते हैं हमें पता है, पता है ---- इसका अर्थ है, हमारा अहम् सामने आ रहा है जो हमें अच्छे से बात सुनने नहीं दे रहा। यदि हम अपने विद्यार्थी काल में बहुत अच्छे विद्यार्थी रहे, सदा सर्वोतम अंक प्राप्त करते रहे और बहुत ऊँचे पद पर कार्यरत हैं, परंतु दूसरों के प्रति हमारे मन में दया नहीं, हम विनम्र नहीं न ही सहनशील हैं तो हमारी विद्या अधूरी ना हुई? हमें ऊँचे पद पर कार्य करते हुए इन सदगुणों को सीखना होगा तभी हम अच्छे विद्यार्थी के साथ-साथ अच्छे इंसान व एक जिम्मेदार नागरिक बन पाएँगे और अपने परिवार, समाज व देश के प्रति अपने कर्तव्य पूरे कर पाएँगे। धन्यवाद

दूसरों के साथ अच्छे सम्बन्ध बनाने का रहस्य

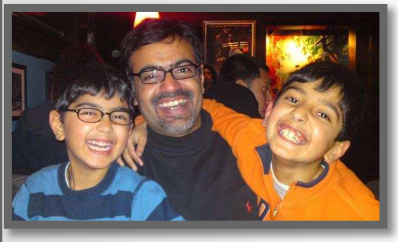

गुलशन मिर्ग वेस्ट विंडसर प्लेंस्बोरो पाठशाला के संचालक हैं। यह लेख उनके बेटों - कृतिक मिर्ग (१३ वर्ष) और यश मिर्ग (१० वर्ष) ने मिल कर अंग्रेजी में लिखा था और एक धार्मिक संस्था में इस पर भाषण दिया था, जिसे लोगों ने बहुत पसंद किया था। गुलशन जी ने अपने बेटों के साथ मिल कर इस लेख/भाषण का अनुवाद हिन्दी में कर्मभूमि पत्रिका के लिए किया है।

महाभारत का यह किस्सा तो आप सब को याद ही होगा जब दुर्योधन पांडवों के नए महल में घूमते हुए फिसल कर गिर गए। दुर्योधन को गिरता देख कर उनकी भाभी द्रौपदी जोर से हँसीं और बोलीं, "अँधे का पुत्र अँधा"। दुर्योधन इस अपमानजनक बात को सुनकर क्रोध से आग बबूला हो गए। उन्होंने द्रौपदी से इस अपमान का बदला भरी सभा में उनका वस्त्र हरण कर के लिया। द्रौपदी ना तो अपना अपमान कभी भूलीं और ना ही दूसरों को भूलने दिया। भीम ने द्रौपदी के अपमान का बदला दुर्योधन और दुशासन को जान से मार कर लिया। महाभारत के युद्ध में हजारों निर्दोष लोग मारे गए और कौरवों के वंश से भी सभी की मृत्यु हो गई। इसके बहुत से कारण थे लेकिन एक बहुत बड़ा कारण द्रौपदी का दुर्योधन पर हँसना और उसे "अँधे का पुत्र अँधा" बुलाना था।

इस कहानी से तीन बातें स्पष्ट होती हैं।

१. अपमान

२. क्रोध

३. बदला

यदि ऐसा होता कि अगर द्रौपदी दुर्योधन का अपमान नहीं करतीं, तो दुर्योधन को क्रोध नहीं आता और वह द्रौपदी से बदला नहीं लेता। चलो यह तो इतिहास है जिसे हम बदल नहीं सकते, लेकिन हमारे इतिहास से हम यह सीख तो ले ही सकते हैं।

आइए कुछ प्रसिद्ध उदाहरण दोहराते हैं ।

१. गाँधी जी कहते थे - "बुरा मत बोलो", किसी की "बुराई मत करो" न ही "बुरा देखो", और न ही "बुरा सुनो"। ।

२. डेल कारनेगी ने अपनी पुस्तक "How to win friends and influence people" में लिखा है हमें कभी किसी का अपमान, आलोचना या निंदा नहीं करनी चाहिए।

३. बेंजामिन फ्रेंकलिन ने कहा था -"मूर्ख व्यक्ति सदा दूसरों का अपमान व आलोचना करते हैं।

महाभारत की इस कहानी से भी तो हमें यही शिक्षा मिलती है कि हमें किसी का अपमान, आलोचना या निंदा नहीं करनी चाहिए, अन्यथा उसके परिणाम बहुत ही बुरे होते हैं।

यह एक मानव प्रवृत्ति है कि जब हम किसी व्यक्ति का अपमान या आलोचना करते हैं तो उस व्यक्ति को हम पर क्रोध आता है, और वह हमारा शत्रु बन जाता है, और समय आने पर वह हमसे बदला लेने का प्रयास करता है।

अगर आप दूसरों के साथ अच्छे सम्बंध बना कर रखना चाहते हैं तो आप स्वयं को वचनबद्ध करें कि आज के बाद आप किसी का अपमान, आलोचना या निंदा नहीं करेंगे।

नमस्ते। मेरा नाम अनुजा काबरा है। मैं एडिसन हिंदी पाठशाला में उच्च स्तर-२ की शिक्षिका हूँ। मेरी कक्षा के विद्यार्थियों ने स्वेच्छा से हिन्दी पत्रिका "कर्मभूमि" के लिए अपनी कहानियाँ, कविताएँ और लेख भेजे हैं। उनका यह योगदान सराहनीय है। उनकी सरल एवं रोचक रचनाओं को पढ़कर गर्व महसूस होता है कि उन्हें हिन्दी भाषा में रुचि है और वे अच्छी हिन्दी सीखने को महत्व देते हैं।

चाणक्य

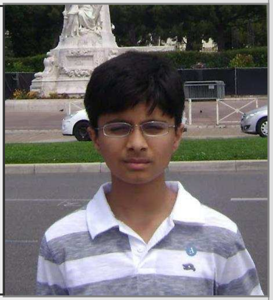

मेरा नाम है ययाति तंवर है। मुझे गणित, सॉकर और दूरदर्शन अच्छा लगता है। मुझे हिंदी भाषा, हिन्दू संस्कार और हिन्दू धर्म में बहुत रुचि है।

क्या आपने चाणक्य का नाम सुना है? वे बहुत बड़े व्यक्ति थे। उन्होंने राजनीति, अर्थशास्त्र और धर्म में बहुत परिवर्तन लाया। मौर्या साम्राज्य उन्होनें ने ही शुरू किया। उन्होंने चाणक्य नीति बनायी थी जो आम आदमी और सरकार को बताती है क्या करना है और क्या नहीं करना? आज इस नीति की पी.एच.डी. की जाती है। इस लेख में मैं चाणक्य के जीवन के बारे में बताऊँगा।

चाणक्य का जन्म तक्षशिला में हुआ था। उनके पिता ऋषि चनक एक शिक्षक थे। शुरू से ही चाणक्य बहुत तेज थे। चाणक्य ने वेद बचपन में ही पढ़ लिए थे। सोलह वर्ष की आयु में वह तक्षशिला विश्व विद्यालय में आये। तक्षशिला इस समय का सबसे बड़ा विश्व विद्यालय था और कई जगह से लोग यहाँ पर आ रहे थे। यूरोपियन इस समय ज्ञान में इतने विद्वान नहीं थे। चाणक्य यहीं पढ़े और फिर वे एक शिक्षक बन गए। उनके शिक्षक उन्हें एक आदर्श व्यक्ति मानते थे।

लेकिन भारत में समस्या शुरू हो चुकी थी और चाणक्य को कुछ करना था।

शिक्षक को कभी कमजोर न समझना क्योंकि प्रलय और निर्माण उसी की गोद में खेलते हैं।

चाणक्य ने बहुत कुछ उपलब्धियाँ प्राप्त कीं। वे पाटलीपुत्र की ओर चल दिए। वहाँ पर जो धनानंद राजा था भ्रष्ट हो चुका था और जनता को लूट रहा था। उसने लकड़ी और पत्थर पर कर लगा दिया था। धनानंद ने चाणक्य का अपमान किया था, धनानंद था बहुत घमंडी और राज्य के लिए अयोग्य था। अपमान के बाद चाणक्य ने कहा *शिक्षक को कभी कमजोर न समझना क्योंकि प्रलय और निर्माण उसकी गोद में खेलते हैं।* और तभी शुरू हुआ एक ऐसा अभियान जो सारे भारत को हिलाने वाला था। नंद के खिलाफ एक और साथी मिल गया, चन्द्रगुप्त। जो था तो एक गरीब और छोटा आदमी लेकिन बनने वाला था एक राजा। एलेग्जेंडर, ग्रीक राजा हिन्दुस्तान पर कब्ज़ा करने वाला था। कुछ समय के लिए एलेग्जेंडर ने शासन किया। लेकिन चन्द्रगुप्त एक सेना अधिकारी बन चुका था। एलेग्जेंडर के दो पुत्र मर चुके थे और बाद में एलेग्जेंडर भी मर गया। चाणक्य और चन्द्रगुप्त के कारण देश मुक्त हो गया। नंद को भी हराना था। बहुत प्रयास के बाद चाणक्य ने नंद और

उसके बच्चों को मार दिया और मगध को ले लिया। लेकिन व्यक्तिगत प्रतिशोध उसके दिमाग में नहीं था। उसे एक ऐसा भारत बनाना था जो मजबूत हो। वे भारत को एक ही झंडे के नीचे लाए और चन्द्रगुप्त एक राजा बना।

चाणक्य से हम क्या सीख सकते हैं? आज जो नीति चाणक्य ने बनाई थी, उसका इस्तेमाल अभी भी होता है। चाणक्य नीति बहुत गुणवान है। उसमें राज्य पर कैसे अधिकार रखना है बताया जाता है। वे बताते हैं कि कैसे नैतिक व्यवहार हो और कैसे जीना है? चाणक्य अर्थशास्त्र बहुत कुछ बता सकता है। वह बताता है कैसे कर लगाने चाहिए, कैसे राजा को अपने कर्तव्य का पालन करना चाहिए और कैसे अर्थव्यवस्था चलानी चाहिए। चाणक्य ने हमें सिखाया है कि देश का महत्व क्या है? हम सीख सकते हैं कि कैसे देश, धर्म, शिक्षा और अपने आप को कैसे चलाना है। हमने सीखा राजनीति में हम कैसे सफल हो सकते हैं।

चाणक्य दो हजार साल पहले रहे हैं। लेकिन वह उन लोगों में से हैं जिनकी राजनीति दोनों पूर्व और पश्चिम के विद्वान पढ़ते हैं। हमारे समाज को चाणक्य जैसे महापुरुष की बहुत जरूरत है। जो समस्या आज आ रही है, वह चाणक्य जैसे लोग सम्भाल सकते हैं। हर व्यक्ति के लिए चाणक्य की भूमिका एक आदर्श है। चाणक्य के बारे में और पढ़ें और दूसरों को पढ़ने के लिए प्रेरित करें।

मेरा नाम श्रुति टंडन है। मैं एडीसन हिंदी स्कूल में पढ़ती हूँ। मैं छठी कक्षा में हूँ और वुडरो विल्सन स्कूल में जाती हूँ। मुझे ड्रम बजाना और खेलना पसन्द है।

मेरा नाम शुभी टंडन है। मैं एडीसन हिंदी स्कूल में पढ़ती हूँ। मैं जे.पी.स्टीवंस में दसवीं कक्षा की छात्रा हूँ। मुझे पढ़ना और अपने मित्रों बातें करना अच्छा लगता है।

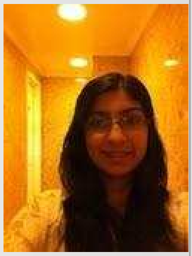

मित्र

हमारा मित्र सब से प्यारा है, बहुत न्यारा है।

हमारी परवाह करता है, और कभी न लड़ता है।

हम हर रोज साथ में रहते हैं, और हर रोज एक दूसरे से कहते हैं।

हम खाना साथ में खाते हैं, और करते हैं हम खूब सारी बातें।

इसलिए मित्र का होना ज़रूरी है, इस के बिना जिंदगी अधूरी है।

"जो मुसीबत में काम आए वही सच्चा मित्र होता है।"

क्षणिकाएँ

सुमेधा दुबे

मेरा नाम सुमेधा दुबे है। मैं बारहवीं कक्षा में पढ़ती हूँ। जब मैं चार साल की थी तभी अमरीका आई थी। मैं चार सालों से एडिसन हिंदी पाठशाला में हिंदी सीख रही हूँ। कविता भावनाओं को लय के साथ प्रस्तुत करना है। कविता वार्तालाप का एक तरीका है। ये कविताएँ मैंने लिखीं हैं। आशा है कि आपको पसंद आयेंगी।

समय

समय, एक नदी की तरह
बहता जाता,
एक बार निकल गया
तो वापस न आता।

मैं

मैं हूँ लड़की कभी न डरती
बाधाओं से सदा ही लड़ती।
अपने आप को चुनौतियाँ देती जाती
अपनी सीमाओं की परीक्षा लेने।

मित्र

सुख-दुख में जो आता काम
वह ही सच्चा मित्र कहलाता।

परीक्षा

परीक्षा आई, परीक्षा आई
बच्चों की थी नींद उड़ाई
ताबड़ तोड़ करते पढ़ाई
फिर भी लगता शामत आई।

मेरी पाठशाला

यह स्कूल बड़ा समुन्दर है
पार कर, जिसको जाना है
बरामदों की है लाइन लगी
कक्षाओं से निकलते बच्चे
भीड़ में टकराते बच्चे
कुछ उलझे, कुछ सुलझे बच्चे।

मेरा सपना

एक संसार मेरे मन का,
कवच सांसारिक सच्चाइयों से,
भविष्य के लक्ष्य,
को पाना है।
बिना दुखों का संसार
एक स्थान जहाँ तुम जो बनना चाहो वो बन सकते हो,
कोई तुम्हें नहीं आंकेगा,
कोई भेदभाव नहीं,
बिना किसी हिचकिचाहट के जहाँ
तुम्हें मुखौटों की जरूरत नहीं।

मेरा नाम अर्नव गुप्ता है। मैं छठवीं कक्षा में पढ़ता हूँ। मैं एडिसन में रहता हूँ और पिछले चार साल से हिन्दी सीख रहा हूँ। अभी मैं उच्च स्तर - २ में पढ़ रहा हूँ। मुझे किताब पढ़ना, फुटबॉल खेलना, तथा तैरने का बहुत शौक है।

मेरा अनुभव

मैंने हिंदी में बहुत सारी चीज़ें सीखी हैं जैसे कि मुहावरे, लोकोक्तियाँ, व्याकरण, शब्दकोश आदि। ये सब मैंने अपने अध्यापिकाओं, अध्यापकों, और माता-पिता की मदद से सीखी हैं। मैंने हिंदी सीखने का फैसला किया क्योंकि जब हम भारत जाते हैं तो मैं अपने रिश्तेदारों के साथ हिंदी में बात कर सकता हूँ और उनकी बात आसानी से समझ भी सकता हूँ। अब मैं सब रिश्तेदारों के साथ हिंदी में बात कर सकता हूँ और हर कोई मुझे आसानी से समझ सकता है। अब मेरे दादा-दादी जी और नाना-नानी जी बहुत खुश रहते हैं। मैं अपने ज्ञान से मेरी बहन को हिंदी सिखा सकता हूँ। जब मैं और बड़ा बनूँगा, मैं अपने बच्चों को भी हिंदी सिखाऊँगा।

हिन्दी

हिंदी भाषा है अलबेली
स्वर और व्यंजन बनाए वर्णमाला
बारह खड़ी की रंग अलबेली
मात्रा बदल दे व्यंजन की वाणी

व्याकरण ने दिया शब्दों को स्थान
मुहावरे और लोकोक्तियों ने दिया और भी ज्ञान
वाक्यों ने दिया कहानी को रूप
अब मजा आता है त्योहार में खूब

नानी और दादी की प्यार भरी बातें भातीं मुझको
मम्मी और पापा की षड्यंत्र भी समझ आती मुझको
भारत भ्रमण हो जाता साकार
हिंदी ने दिया हमें ज्ञान अपार

सत्य कथा

मेरा नाम अलीशा भाटिया है। मैं एडिसन हिंदी पाठशाला की उच्चस्तर-२ कक्षा में पढ़ती हूँ। मुझे नाच और कला में रुचि है। हिंदी यू.एस.ए. की वजह से मैं हिंदी पढ़ लिख और बोल सकती हूँ।

एक बार एक बच्चा अपने माता-पिता के साथ बाजार जा रहा था। बाजार जाते समय रास्ते में उसके माता-पिता को उनके कुछ मित्र मिल गए। माता-पिता और उनके मित्र बातें करने लगे। बच्चे के पास कुछ करने के लिए नहीं था। वह अपने माता-पिता और उनके मित्रों की बातें सुन कर बोर होने लगा। बच्चा इधर-उधर देखने लगा। पास में उसे एक बगीचा दिखाई दिया। उसने सोचा कि चलो मैं कुछ देर बगीचे में खेल लेता हूँ और वह बगीचे की तरफ निकल पड़ा। कुछ समय के बाद बच्चे की माँ ने देखा कि बच्चा आस-पास नहीं था। वह बहुत व्याकुल हो गयी और बच्चे को ढूँढने लगी। बच्चा कहीं दिखाई नहीं दिया। कुछ ही समय में सब बच्चे को ढूँढने लगे। बच्चे की माँ की नजर पास में एक छोटे से तालाब पर पड़ी। तालाब में बच्चे की टोपी तैरती हुई दिखाई दी और वे तुरंत समझ गयी कि बच्चे ने तालाब के ऊपर की काई को बगीचा समझा होगा। माँ ने तालाब में छलाँग लगाई और पानी के अंदर से बच्चे को ढूँढ निकाला। बच्चा रो रहा था। माँ ने उसे अपनी शाल में लपेटा और उसे घर ले गयी। बच्चे को नहला-धुलाकर माँ ने बच्चे को काई के बारे में बताया कि तालाब की काई बगीचे के जैसे लगती है और उसे कभी भी अपने माता-पिता को छोड़ कर इधर-उधर नहीं जाना चाहिए। वह बच्चा आज भी जब काई देखता है, उसे अपनी गलती याद आती है। यह एक सत्य कहानी है।

मेरी भारत की यादगार यात्रा

मेरा नाम ऋषि मसंद है। मैं एडिसन, न्यू जर्सी में रहता हूँ और आठवीं कक्षा का छात्र हूँ। मैं वुडरो विल्सन माध्यमिक विद्यालय में पढ़ता हूँ। मैं "हिंदी यू.एस.ए." की उच्च स्तर-२ में हूँ। कुछ गर्मियों की छुट्टियाँ पहले, मैं अपने परिवार के साथ मेरी मौसी की शादी के लिए भारत गया। हमारे प्रवास के दौरान हम एक महल में ठहरे थे। यह एक बहुत ही अनूठा अनुभव था। जिस कमरे में हम ठहरे थे वह बहुत ही बड़ा था। माहौल राजाओं के हिसाब से था। शादी में ढेर सारे लोग थे। कुछ चेहरे जाने पहचाने थे और कुछ नए। वातावरण बहुत रंगीन था। वहाँ हर जगह उत्साह था। मेरे दादाजी मुझे एक हाथी सवार के पास ले गए और मैंने हाथी सवारी करी। मुझे हाथी पर बहुत मज़ा आया। जब शादी ख़त्म हो गयी तब हम हमारे रिश्तेदारों के घर गए। हम बहुत समय से मिले नहीं थे। हमने बहुत सारी बातें कीं। मुझे मेरे चचेरे भाई और बहन के साथ खेलने में बहुत मज़ा आया। उसके बाद हम सब हमारे दूसरे रिश्तेदारों के घर गए। हम उनके वहाँ रेलगाड़ी से गए। इसमें हम सब को बहुत मज़ा आया। रेलगाड़ी में बहुत सारी जगह थी। रेल गाड़ी में हमने गरम चाय का मज़ा लिया। हम अंत में जब पहुँचे, तब मेरी और रिश्तेदारों से मुलाकात हुई, जो दूसरे शहर से खास हमसे मिलने के लिए आये थे। खुशियों और आनंद के पल बिताने के बाद मैं और मेरा परिवार वापिस अमेरिका लौटे। घर पहुँच कर मेरी जेब मेरे रिश्तेदारों द्वारा दी गयी खर्ची से भरी थी और मन हर्षित यादों से भरा था।

भारत के त्योहार

करन मेनन

करन मेनन सात साल से हिन्दी सीख रहा है। हिन्दी उसे भारत में कई लोगों के साथ बातचीत करने की और अपनी संस्कृति का आनंद लेने की क्षमता देती है। उसे हिन्दी फिल्में देखना का भी बहुत अच्छा लगता है। और उसके पसंदीदा अभिनेता श्री अमिताभ बच्चन हैं।

भारत में अनेक त्योहार होते हैं। नवरात्री, नौ दिन का त्योहार है। इन दिनों हम दुर्गा माता की पूजा करते हैं। कई राज्यों में गरबा रास भी होता है। नवरात्री के दसवें दिन दशहरा होता है। इस दिन रामजी ने रावण को मार दिया था और बुराई पर अच्छाई की जीत हुई थी।

दशहरे के 20 दिन बाद दिवाली या दीपावली का त्योहार होता है। रामजी, सीताजी और लक्ष्मणजी वनवास से चौदह वर्षों के बाद अयोध्या लौट रहे थे। इसलिए लोगों ने उनके स्वागत में और उनको राह दिखाने के लिए दिये और पटाखे जलाये थे। दिवाली भारत का सबसे बड़ा त्योहार है।

भारत में और भी बहुत सारे त्योहार होते हैं, जैसे भाई-दूज, रंगबिरंगी होली, रक्षाबंधन, रमजान, ईद, गणेश चतुर्थी, मकर संक्रांति, बैसाखी, क्रिसमस, गुरु नानक जयंती, महावीर जयंती, बुद्ध जयंती इत्यादि...

भारत में कई राष्ट्रीय त्योहार भी होते हैं, जैसे १५ अगस्त को स्वतंत्रता दिवस, २६ जनवरी को गणतंत्र दिवस, २ अक्टूबर को गाँधी जयंती, १४ नवम्बर को बाल दिवस, इत्यादि...

त्योहार के दिन पाठशाला और दफ्तर में छुट्टी होती है। हम अपने घर को साफ़ करके सजाते हैं और अच्छे-अच्छे पकवान बनाते हैं और नए कपड़े पहनते हैं। हम अपने दोस्त और रिश्तेदारों से मिलकर साथ खाना खाते हैं, और खूब मौज मनाते हैं।

मुझे भारत के त्योहार बहुत अच्छे लगते हैं। हिन्दी यू.एस.ए. में रह कर भी हम भारत के कई त्योहार मानते हैं, पर ये त्योहार भारत में मनाने का मजा अनोखा है।

मेरी हिन्दी पाठशाला

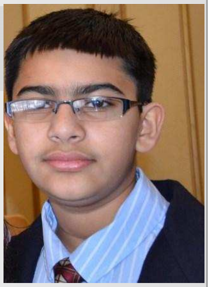

मेरा नाम ईशान मसंद है। मैं छठवीं कक्षा का छात्र हूँ और वुडरो विल्सन मध्य विद्यालय में पढ़ता हूँ। मैं हिंदी पाठशाला के उच्चस्तर-१ में हूँ।

शुक्रवार को हिंदी पाठशाला जाना मेरी साप्ताहिक दिनचर्या का हिस्सा है। हिन्दी पाठशाला ७ बजे आरंभ होती है और ८:३० बजे समाप्त होती है। मेरे शिक्षक सुशील अग्रवाल जी हैं। वे एक बहुत अच्छे शिक्षक हैं। हिंदी पाठशाला में मेरे बहुत सारे मित्र हैं। हम आपस में हिंदी में बात करते हैं। मैं हिंदी पाठशाला, हिंदी पढ़ने, लिखने, बोलने एवं भारत की संस्कृति सीखने के लिए जाता हूँ। हमें भारतीय त्योहारों के बारे में भी सीखने को मिलता है। दीवाली पर हमें स्वादिष्ट मिठाइयाँ मिलती हैं। समय-समय पर प्रतियोगिताएँ भी आयोजित की जाती हैं, जैसे कविता प्रतियोगिता, हिंदी महोत्सव, कर्मभूमि लेख प्रतियोगिता इत्यादि। हिंदी पाठशाला एक बहुत अच्छा मंच है जहाँ हम हिंदी भाषा सीखते हैं और भारत देश और उसकी संस्कृति के बारे में भी सीख सकते हैं।

मेरा अनुभव

मेरा नाम मीमांसा वर्मा हैं। मैं बारह वर्ष की हूँ और पिस्कैटवे के श्चोर मिडल (schor middle) में सातवीं कक्षा की छात्रा हूँ। मुझे संगीत, कथक नृत्य तथा भारतीय भोजन बुहत पसंद हैं।

मेरा हिन्दी सीखने का अनुभव बहुत अच्छा रहा है। मेरी हिन्दी सीखने की यात्रा हिन्दी यू.एस.ए. के साथ आज से चार वर्ष पूर्व शुरू हुई। हमें अमेरिका आए करीब एक वर्ष होने आया था। सही इंग्लिश सीखने की होड़ में हम अपनी मातृ भाषा भूलते जा रहे थे। मेरे माता-पिता के लिए यह एक बड़ी चिंता का विषय था। माँ समय निकाल कर मुझे और मेरे छोटे भाई को हिन्दी पढ़ाती पर वह नियम से न हो पाता था। तभी हमारे एक पारिवारिक मित्र ने हमें हिन्दी यू.एस.ए. की हिन्दी पाठशाला की जानकारी दी। तभी मेरे माता-पिता जी ने मेरे और मेरे छोटे भाई का दाखिला इस संस्था में करवा दिया। अब मैं हर शुक्रवार हिन्दी कक्षा जाती हूँ।

हम सब बच्चे जो भारत के अलग-अलग प्रांतों से आए, भिन्न-भिन्न बोली वाले हैं, लेकिन जब हम सब एक जुट होकर अपनी राष्ट्रभाषा हिन्दी में कविता गाते हैं, तो मुझे बहुत अच्छा लगता है। अब मैं हिन्दी बड़ी सरलता से बोलने और लिखने लगी हूँ। हिन्दी कथा कहानियों की पुस्तकें पढ़कर मैं भारतीय संस्कृति को और अच्छे से समझ रही हूँ। हिन्दी का ज्ञान मुझे कथक नृत्य सीखने में भी बहुत काम आ रहा है। जहाँ मेरी नृत्य शाला के सभी सहपाठी अंग्रेज़ी में या रोमन हिन्दी में कथक के बोल लिखते है मैं बड़ी आसानी से हिन्दी में लिख लेती हूँ। यह देखकर मेरे गुरु जी बहुत हर्षित होती हैं।

अब तक का मेरा हिन्दी का अनुभव बहुत अच्छा रहा। मैं अपने जीवन काल में सदा हिन्दी से जुड़ी रहूँगी।

अंत में मैं बस सभी हिन्दी यू.एस.ए. की शिक्षक और शिक्षिकाओं को धन्यवाद देना चाहती हूँ ...

"पानी के प्यासे को तक़दीर ने जैसे जी भर के अमृत पिलाया, ऐसा ही सुख मेरे मन को मिला जब से शरण तेरी आया"

हमारी हिंदी शिक्षार्जन की यात्रा

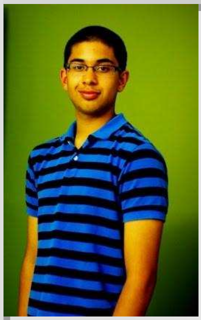

मेरा नाम सिद्धार्थ जैन है और मैं उच्चस्तर-२ का विद्यार्थी हूँ। यह निबंध मेरी शिक्षार्जन की यात्रा के बारे में है। मैंने छह साल पहले हिंदी पाठशाला जाना शुरू किया था। इन छह सालों में मैंने ख़ुशी और थोड़ी निराशा का अनुभव किया।

जब मैंने कक्षा जाना शुरू किया था, मुझे हिंदी बोलनी आती थी। मैं घर में थोड़ी हिंदी बोलता था। और मैं अपने नाना-नानी के साथ, जो भारत में रहते हैं, बात करता था लेकिन मैं लिख नहीं पाता था। इसलिये मुझे हिंदी लिखना सीखना था। धीरे-धीरे मैंने लिखना सीख लिया। शुरु में कक्षा बहुत आसान लगती थी और पहले साल मेरे बहुत दोस्त बने थे। लेकिन धीरे-धीरे मेरे दोस्त कक्षा से निकल गये। हालाँकि मेरे दोस्त कक्षा में नहीं थे, फिर भी मुझे बहुत लाभ हुआ।

हिंदी के कारण अब मुझे एक और भाषा में लिखना-पढ़ना आने लगा है। मुझे बहुत सारे शब्द भी मालूम हैं जो पहले नहीं मालूम थे। मैं मेरे रिश्तेदारों के साथ अच्छी तरह से बात कर सकता हूँ। पिछले साल मैंने मेरे नाना-नानी को चिट्ठी लिखी थी। पढ़कर उनको बहुत ख़ुशी हुई थी, मेरी चिट्ठी उन्होंने बार-बार पढ़ी और मेरी ममेरी बहन को भी पढ़ाई।

पिछले साल भारत यात्रा में पहली बार मैं दुकानदार से बात कर सका और खुद के लिये चॉकलेट खरीद पाया और मुझे बहुत खुशी हुई।

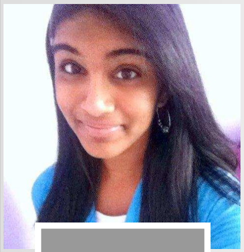

रुचिका मोटूरी

सब कुछ एक कलम के साथ शुरू हुआ। मैं हिंदी सीखना चाहती थी, ताकी कागज पर साइन करूँ, और पहले दिन के बाद से मैं कम से कम एक नई बात सीख रही थी। अब पाँच साल बीत चुके हैं। मैं गर्व से कह सकती हूँ कि मैं हिंदी समझती हूँ और पढ़-लिख सकती हूँ। मैं फिल्मों का अर्थ जानती हूँ और गानों का मतलब पता है। मैं लगभग अपने सभी रिश्तेदारों को एक पत्र लिख सकती हूँ।

हिंदी यू.एस.ए. में मुझे हिंदी महोत्सव बहुत पसंद है। मुझे नृत्य करना बहुत अच्छा लगा। मुझे क्लास के खेलों में भी बहुत आनंद मिलता था। प्रत्येक शुक्रवार बहुत मजाक होता था क्लास में। मेरी अध्यापिकाएँ थीं, चेतना जी, रीमा जी, मनीषा जी, सुनीता जी और वंदना जी। वे सदैव मेरी मदद करती थीं। हिंदी क्यों आवश्यक है? क्योंकि यह हमारे भारत की भाषा है। मैं एक भारतीय हूँ, तो हिंदी जानना मेरा कर्तव्य है।

हमारी हिंदी शिक्षार्जन की यात्रा

मेरा नाम नताशा कलवचवाला है। मैं लॉरेंसविल्ल की हिंदी यू.एस.ए. पाठशाला में पढ़ती हूँ। मेरी हिंदी की यात्रा अगस्त दो हज़ार आठ में शुरू हुई थी। मैं बड़ी खुश हो गयी थी जब मेरी मम्मी ने मुझे बताया था कि मैं हिंदी पढ़ने जाऊँगी। मैं फूली न समायी कि मैं भारत की राष्ट्र भाषा सीखने वाली थी, जो मेरे मम्मी और पापा भारत में बोलते थे। मुझे पहले थोड़ी सी घबराहट हुई लेकिन जब मेरी मम्मी भी हिंदी पाठशाला में पढ़ाने लगीं तो मैं बड़ी खुश हो गयी। हम दोनों साथ-साथ हिंदी पाठशाला जाते, और फिर उसके दूसरे साल से मेरा छोटा भाई, श्यामक भी साथ चल पड़ा। तो मेरी यह यात्रा मेरे पूरे परिवार की यात्रा बन गयी।

पिछले पाँच सालों से मैं हर शुक्रवार हिंदी पाठशाला जाती हूँ, और मैंने बहुत कुछ सीख भी लिया है। जानवरों के नाम, फूलों के नाम, रंगों के नाम इत्यादि के साथ-साथ भारतीय संस्कृति के बारे में भी बहुत जानकारी हासिल की। हिंदी कक्षा में बहुत नयी-नयी सहेलियाँ और नये-नये अध्यापक तथा अध्यापिकाओं से भी जान पहचान हुई। हिंदी यू.एस.ए. के वार्षिक कार्यक्रम के द्वारा मैंने हिंदी में नृत्य करना और गीत गाना भी सीखा। बहुत सारी भारतीय पोशाकें भी पहनने को मिलीं।

हिंदी बोलना सीखने से मुझे बहुत फायदा हुआ है। मैं अब मेरे नाना-नानी जी के साथ हिंदी में बात कर सकती हूँ। मम्मी-पापा के साथ हिंदी फ़िल्में देख सकती हूँ। जब छुट्टियों में भारत जाते हैं तो हमारे नाना-नानी और दादा-दादी अपने पड़ोसियों को बड़े गर्व से बताते हैं कि मैं और मेरा भाई हिंदी बोल सकते हैं। हम दोनों को ही बहुत अच्छा लगता है।

यह साल मेरा अंतिम साल है और मैं बहुत मन लगा कर पढ़ना चाहती हूँ। हो सके तो मैं अगले साल से मेरी मम्मी के साथ उन्हें उनकी कक्षा को पढ़ाने में मदद करना चाहूँगी।

मेरा नाम अनुशा अग्रवाल है। मैंने हिन्दी कक्षा २००७ में शुरू की, और मैंने अपने शिक्षकों की मदद के साथ बहुत अच्छी चीजें अनुभव कीं। मैंने हर साल हिन्दी महोत्सव में भाग लिया। मैंने हर साल कविता प्रतियोगिता में भी भाग लिया। हिन्दी कक्षा में मैंने लिखना और पढ़ना सीखा। अब मैं अपनी दादी जी, नानाजी और नानीजी से हिन्दी में बात कर सकती हूँ। अब मैं हिन्दी की किताबें पढ़ सकती हूँ। मैं अपने माता और पिता को धन्यवाद देना चाहती हूँ।

सहज स्वभाव की मोक्षा सेठ १४ वर्ष की हैं और नौवीं कक्षा में पढ़ती हैं। मोक्षा को पढ़ाई के अलावा संगीत में बहुत रुचि है। हिंदी यू.एस.ए. द्वारा आयोजित कविता पाठ प्रतियोगिता में बहुत ही उत्साह से सफल विजेता के रूप में भाग लेती आई हैं। वुडब्रिज हिंदी पाठशाला में पढ़ती हैं व अधिकतर कर्मभूमि पत्रिका में अपनी छोटी सी लेखनी से लिखे लेख भेजती हैं।

प्रतिवर्ष मैं हिंदी यू.एस.ए. के सभी सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भाग लेती हूँ, जैसे दिवाली पर्वोत्सव, कविता प्रतियोगिता और हिंदी महोत्सव इत्यादि। पिछले चार वर्षों से मैं कविता प्रतियोगिता में भाग लेती आ रही हूँ और प्रतिवर्ष फाईनल चक्र में पहुँचती हूँ। मुझे हिंदी कविताएँ बहुत अच्छी लगती हैं। कवि बहुत ही अच्छी-अच्छी कविताएँ लिखते हैं।

पिछले वर्ष मैंने कुमार विश्वास जी की कविता “है नमन उनको” गाई थी। यह कविता भारत के सैनिक, जो कारगिल युद्ध में शहीद हो गए थे, उनके बारे में थी। इसमें कहा गया है कि जब कोई देश के लिए शहीद होता है तो पूरा देश उसके बलिदान को याद करता है व उनके सम्मान में नतमस्तक रहता है। एक वर्ष मैंने सुभद्रा कुमारी चौहान जी की “मेरा नया बचपन” गाई थी। उस कविता में बचपन की मधुर यादों के बारे में बताया है। चाहे हमारी उम्र कितनी भी हो जाए हम अपने बचपन को नहीं भूल सकते। इस साल मैंने मनोज कुमार जी की “भारत की पावनतम माटी” गाई। यह कविता मन को छू ले ऐसी है। यह कविता सुनकर हम भावुक हो जाते हैं। हम समझ लेते हैं कि भारत बहुत सुन्दर और महान है। हमें हमारे भारत पर गर्व होना चाहिए। प्रतिवर्ष जब मैं कविता याद करती हूँ तो भारत के बारे में नई-नई जानकारी व विशेषताएँ सीखने को मिलती हैं। मैं जैसे भारत से और ज्यादा जुड़ जाती हूँ।

मुझे कविताएँ सीखने से एक और फायदा हुआ है। मेरी छोटी बहन भी कविताओं में रुचि लेती है। जब मैं कविता सीखती हूँ तो मेरी बहन भी याद कर लेती है। जैसे मैं अपने घर के बड़े लोगों से सीखती हूँ वैसे ही मैं अपनी छोटी बहन को सिखाती हूँ। इस वर्ष मेरी बहन ने सुभद्रा कुमारी चौहान जी की “मेरा नया बचपन” गाई थी, मैंने उसे कविता गाना व एक्शन करना सिखाया। मुझे बहुत अच्छा लगा। जो कविता 2 वर्ष पहले मैंने गाई, इस वर्ष मेरी बहन ने गाई। उसने मेरे से ही सीखा।

मैं सभी बड़े बहन-भाई से निवेदन करती हूँ कि वे अपने छोटे बहन-भाई के लिए एक उदाहरण बनें। हम जैसा करेंगे हमारे छोटे बहन-भाई वैसा ही करेंगे। अभी मैंने सोचा है, अगले वर्ष उच्च स्तर की कक्षा उत्तीर्ण करते ही मैं अपनी ही वुडब्रिज हिंदी पाठशाला में हिंदी पढ़ाने में सहायता करूँगी। इससे मेरी बहन को भी हिंदी सीखने में रुचि बनी रहेगी व मैं भी हिंदी बोलने में और सक्षम हो जाऊँगी।

हम घर में भी अपने बहन-भाई व माता-पिता के साथ हिंदी में ही बात करें, ऐसा मैंने सोचा है, तभी मैं अपनी बहन को अच्छे से हिंदी सिखा पाऊँगी। आप भी अपने छोटे बहन-भाई के साथ हिंदी में बात करें व सभी अच्छे काम करें, ताकि वो भी आपसे अच्छा ही सीख पाएँ। धन्यवाद

अनुभव वातल छठी कक्षा में पढ़ते हैं। हिंदी यू.एस.ए. की वुडब्रिज पाठशाला में उच्च स्तर-२ के विद्यार्थी हैं। अनुभव को पुस्तकें पढ़ना, टैनिस खेलना व कम्प्यूटर पर काम करने में बहुत रुचि है। गणित की विशेष कक्षा में भी जाते हैं व अपने छोटे भाई का बहुत अच्छे से ध्यान रखते हैं।

पढ़ाई का प्रबंध - भारत या अमेरिका?

मैंने भारत और अमेरिका का पढ़ाई के प्रबंध को अनुभव किया है, इसीलिए मैं यह अनुच्छेद लिख रहा हूँ। मुझे लगता है कि भारत का पढ़ाई का प्रबंध अमेरिका से अधिक विकसित है। मुझे ऐसा लगता है क्योंकि -

अमेरिका का "ओनर्स" पाठ्यक्रम और भारत का सामान्य पाठ्यक्रम एक सा है।

- भारत में आप और सीख सकते हैं। यह इसलिए है क्योंकि वहाँ और अधिक प्रसंग होते हैं।
- भारत में बहुत भाषाएँ बोली जाती हैं। इस से आप बहुत भाषाएँ पढ़ और सीख पाएँगे।
- भारत में बच्चों के ऊपर दबाव होता है इसलिए वे बहुत प्रतियोगी होते हैं।
- मैंने भारत में चौथी कक्षा तक पढ़ाई की। इन उदाहरणों को मैंने अनुभव किया और इसीलिए मुझे लगता है कि भारत की पढ़ाई का प्रबंध अमेरिका से और अच्छा है।
- भारत में गृहकार्य कम होता है, इसलिए बच्चे अपने नोट्स वापिस एक बार देख सकते हैं।
- भारत से आप बहुत कुछ सीख सकते हैं, क्योंकि भारत का बहुत बड़ा, रुचिपूर्ण और अच्छा इतिहास है।

भारत की पढ़ाई के प्रबंध में कुछ कमियाँ भी हैं, जैसे -

- भारत में शिक्षक व शिक्षिका कठोर होते हैं।
- अगर आप अमेरिका से आ रहे हैं तो भारत की पढ़ाई आपको कठिन लगेगी।
- भारत में ४५% बच्चों को ट्यूशन के पैसे देने पड़ते हैं।

इन बातों को पढ़कर आपको क्या लगता है, भारत की पढ़ाई या अमेरिका की?

अक्षय खन्ना छठवीं कक्षा में एडिसन की पाठशाला में पढ़ते हैं व वुडब्रिज हिन्दी पाठशाला में उच्च स्तर-२ में हिन्दी सीखते हैं। अक्षय बचपन से ही घर में अपने परिवार के साथ हिन्दी में बात करते हैं। इन्हें भारतीय इतिहास के बारे में पुस्तकें पढ़ने में विशेष रुचि है। गणित व विज्ञान इनके प्रिय विषय हैं।

भारतीय संस्कृति - एक गौरवांवित संस्कृति

हमारी भारतीय संस्कृति व सभ्यता हजारों वर्ष पुरानी है। भारत का इतिहास बहुत ही अद्भुत है। भारत को सोने की चिड़िया कहा जाता था। इसकी महिमा दूर-दूर तक प्रसिद्ध थी। भारत न केवल धन-धान्य में समृद्ध था, अपितु विज्ञान और संस्कृति में भी आगे था। भारत की ओर अनेक विदेशी साम्राज्य आकर्षित हुए। भारत को बहुत सालों तक मुगल, ब्रिटिश, परशियन आदि अनेक साम्राज्यों के आधीन रहना पड़ा, फिर भी इस सब के बाद भी भारत का गौरव कभी कम नहीं हुआ।

भारत की प्राचीन सभ्यता सिंधु घाटी सभ्यता (Indus valley), मैसोपोटामिया और मिस्र जैसी प्राचीन सभ्यताओं के समान मानी जाती है। यह सभ्यता बहुत ही आधुनिक और उन्नत थी। इस सभ्यता की कला, इमारतों और स्नानघर की बनावट, जल निकास की व्यवस्था, उपज के तरीके इत्यादि अपने आप में एक उदाहरण थे। आज के युग के नए शहर इस सभ्यता से प्रेरित हैं।

भारत ने विश्व को केवल प्रसिद्ध सभ्यता ही नहीं योग-विज्ञान और ध्यान की अनोखी सम्पत्ति दी है। गणित में शून्य और दशमलव (decimal) की देन भी भारत की है। हमारे वेद और पुराण ज्ञान के भंडार हैं जिनसे पूरा विश्व लाभ ले सकता है।

मुझे अपने भारतीय होने पर गर्व होता है। भारत की युवा पीढ़ी को अपनी इस उज्ज्वल संस्कृति व संस्कारों से जुड़े रहना चाहिए व इसे बनाए रखना चाहिए।

हिंदी यू.एस.ए. की चेरी हिल पाठशाला के कनिष्ठ-१ के विद्यार्थियों ने अपने अध्ययन से संबन्धित साँप, हाथी, फूल, पेड़ और दीपावली के दीपकों जैसे कई कलाकृतियाँ बनाईं। इन्हीं में से एक कलाकृति इस चित्र में दर्शाई गई है।

नीलम रस्तोगी (अध्यापिका)

स्वामी विवेकानन्द

मेरा नाम मोनल गर्ग है। मैं नौवीं कक्षा में पढ़ती हूँ। हिंदी पाठशाला में मैं उच्च स्तर-१ की छात्रा हूँ। पढ़ाई के साथ-साथ मुझे चित्र बनाना, ओरिगामी बनाना, नृत्य करना और संगीत सुनने का शौक है। सत्र २०१३, स्वामी विवेकानन्द जी की १५०वीं जयंती के रूप में मनाया जा रहा है। स्वामी विवेकानन्द हिन्दू सन्यासी थे, जिन्होंने वेदांत और योग से पश्चिमी संस्कृति को अवगत करवाया। उन्होंने बताया कि हिन्दू संस्कृति की आधार शिला आध्यात्मिक है और इसका प्रचार देश-विदेश में किया। स्वामी विवेकानन्द जी के विचार नवयुवकों में जोश पैदा करने वाले और उनको कर्म के मार्ग पर चलते रहने की शिक्षा देते हैं। भारत में स्वामी विवेकानन्द का जन्म दिन राष्ट्रीय नवयुवक दिवस के रूप में मनाया जाता है। इस अवसर पर मैंने स्वामी विवेकानन्द का चित्र बनाया है और मैं चाहती हूँ कि और बच्चे भी इस महान संत के बारे में पढ़ें। - धन्यवाद

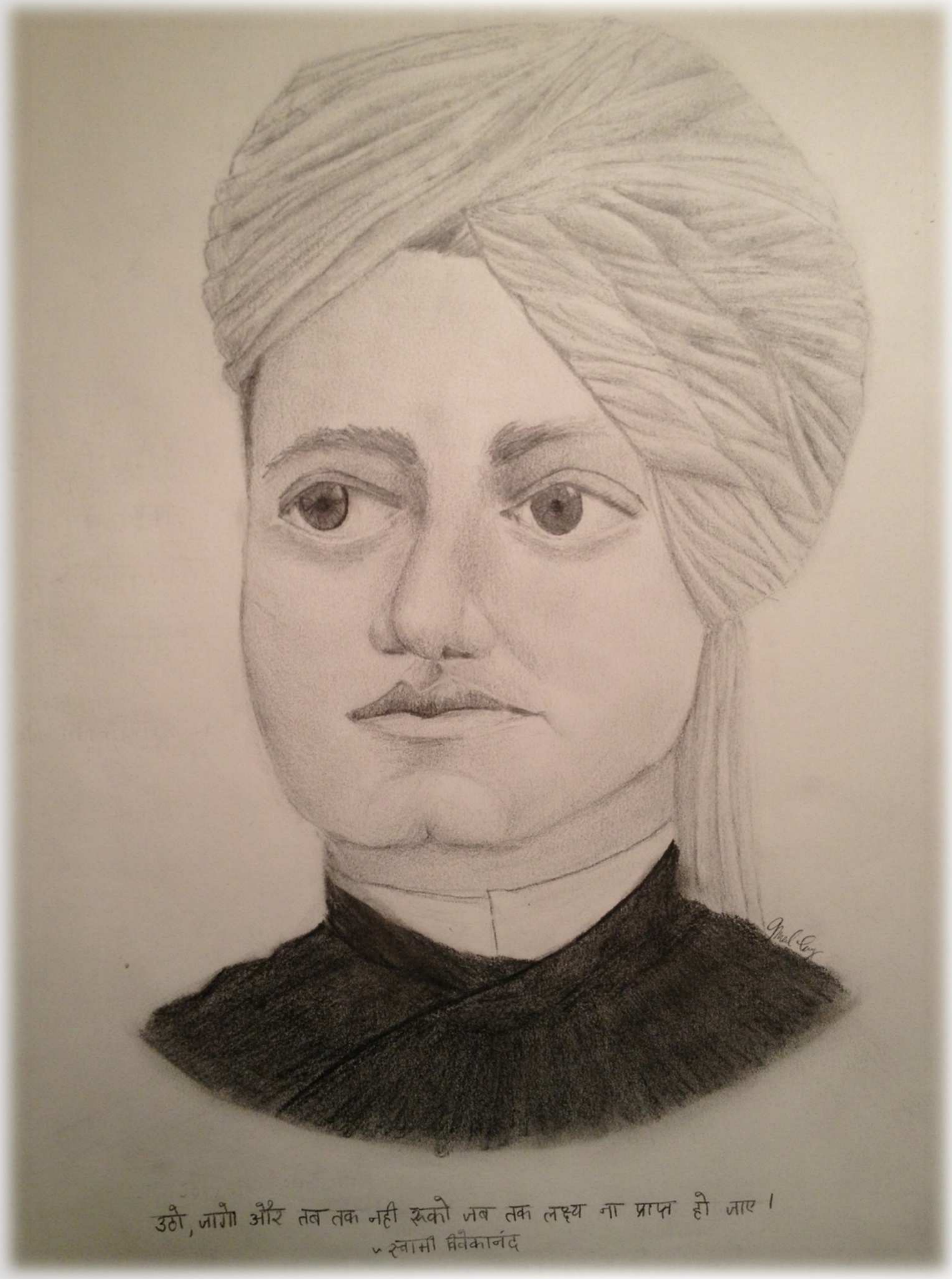

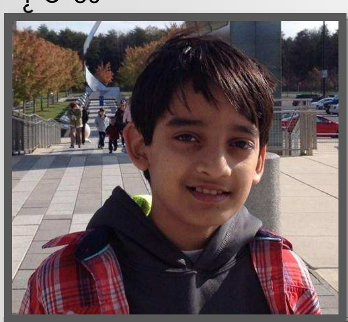

मेरा नाम सुनय दुबे है। मैं ग्यारह वर्ष का हूँ। मेरा जन्म अमेरिका में हुआ है, पर मुझे भारत जाना बहुत अच्छा लगता है। मैं पिछले चार साल से हिंदी सीख रहा हूँ। लेकिन इस कहानी में मैंने तीन पात्रों की कल्पना की है जो भारत जाते हैं। मगर वे हिंदी नहीं जानते हैं। उनके साथ क्या हुआ, आशा है आपको पसंद आयेगा। हिंदी सीखने का यह एक और लाभ है।

नीम हकीम खतरा ए जान

एक बार तीन व्यक्ति भारत आए। उनको हिंदी या अंग्रेजी नहीं आती थी। जब वे होटल में थे, तो उन्होंने अलग-अलग कार्यक्रम देखे।

पहला आदमी दूरदर्शन पर नाटक देख रहा था। उसे सिर्फ "मैं मैं मैं मैं मैं !" समझ आया।

दूसरा व्यक्ति दूसरे दूरदर्शन पर समाचार देख रहा था, और विज्ञापन चल रहे थे। "छुरी! काँटा! छुरी! काँटा! छुरी! काँटा!"

तीसरा पुरुष एक और दूरदर्शन पर मुक्केबाजी देख रहा था। "मैं तेरे दाँत तोड़ डालूँगा!"

फिर वे सैर के लिए चले गए। रास्ते में एक अपराध का दृश्य था।

एक पुलिस वाले ने बोला, "इस आदमी को किसने मारा होगा?"

पहला व्यक्ति पुलिस वाले को नमस्कार करना चाहता था। वह बोला, "मैं मैं मैं मैं मैं!"

पुलिस वाले का ध्यान उसकी तरफ गया। "और तुमने कैसे मारा?"

दूसरे व्यक्ति ने समझा कि वह बोला "आप कैसे हो?" वह बोला, "छुरी! काँटा! छुरी! काँटा! छुरी! कांटा!"

पुलिस वाला बोला,"हम आप को गिरफ्तार करते हैं।"

'तीसरे आदमी ने सोचा कि "गिरफ्तार " का मतलब "अच्छा " है। वह हंस कर बोला, "मैं तेरे दांत तोड़ डालूँगा!"

पुलिस ने तीनों को गिरफ्तार कर लिया।

इसे कहते हैं "नीम हकीम खतरा ए जान" अर्थात "आधा अधूरा ज्ञान हानिकारक" होता है।

प्रथमा-२ में बच्चे २,३ और ४ अक्षर वाले बिना मात्रा के शब्द और मौखिक शब्दावली तथा वार्तालाप के शब्द सीखते हैं। कक्षा के बच्चों ने, इन्हीं मौखिक शब्दावली की सहायता से घर के सामानों पर एक प्रोजेक्ट तैयार किया है जो आपके सामने प्रस्तुत है।

प्रिया मेनोन - साउथ ब्रंस्विक हिन्दी पाठशाला

कमल, हमारा राष्ट्रीय फूल

मेरा नाम यश जैन है। मैं उच्च स्तर-१ में पढ़ता हूँ और चौथी कक्षा का छात्र हूँ। मुझे हिंदी यू.एस.ए की हिंदी पाठशाला में आना बहुत अच्छा लगता है।

मैंने कमल, हमारे राष्ट्रीय फूल का चित्र बनाया है। भगवान ब्रह्मा, देवी लक्ष्मी और देवी सरस्वती इस पर विराजमान होते हैं।

मैं हर साल हिंदी महोत्सव और कविता प्रतियोगिता में भी भाग लेता हूँ। महोत्सव में हम सदैव नाटक करते हैं। मुझे नाटक करना बहुत अच्छा लगता है क्योंकि नाटक करते-करते हम भारत के बारे में बहुत सी जानकारी प्राप्त करते हैं। कविता प्रतियोगिता में भी मैं सदा भारत से सम्बन्धित कविताएँ सीखता हूँ। मेरी मम्मी भी हिंदी यू.एस.ए. की पाठशाला में पढ़ाती हैं और मैं भी उच्च स्तर-२ की पढ़ाई करने के बाद अपनी माँ के साथ हिंदी पढ़ाने में सहायता करूँगा। मुझे चित्रकारी करना बहुत पसन्द है। खाली समय में मैं पुस्तकें पढ़ता हूँ और चित्रकारी करता हूँ।

मेरी भारत यात्रा

नीत्या कलपटपू

मेरा नाम नीत्या कलपटपू है। मैं हिंदी यू.एस.ए. लॉरेंसविल्ल की उच्चस्तर-१ की छात्रा हूँ। मेरा यह लेख अपनी भारत यात्रा के बारे में हैं, आशा करती हूँ आप सब को पसंद आयेगा।

पिछली शीत ऋतु, २०११ में अपने माताजी-पिताजी और बुआ के साथ मैंने भारत की एक यात्रा की, जिसमें कुछ दक्षिण राज्यों और शहरों को देखा। सबसे पहले हम दिल्ली से मदुरै में उतरे, फिर रेलगाड़ी से रामेश्वरम पहुँचे। वहाँ मेरे परिवार ने पवित्र सागर में स्नान किया और हम कन्याकुमारी की ओर चले जहाँ हमने विवेकानंद रॉक मेमोरियल और सुचिन्द्रम मंदिर देखा। कन्याकुमारी में सूर्योदय और सूर्यास्त का दृश्य अद्भुत था।

केरल हमारा अगला गंतव्य था। उधर दो दिन के लिए हम एक नाव घर में रहे। नाव वाला हमें आयुर्वेदिक मालिश सेंटर भी ले कर गया। मुन्नार शहर में चाय के बागानों को देखा, घुड़सवारी की, नौका विहार का आनंद लिया और अन्य पर्यटन बिन्दु देख कर हम गाड़ी में जंगल पार करते हुए वापिस मदुरै चले गए।

मदुरै में मीनाक्षी मंदिर और त्रिची में रॉक फोर्ट, गणेश मंदिर तथा श्री रंगनाथ स्वामी मंदिर के दर्शन किए।

तंजावुर में बृहदीश्वर मंदिर और कर्नाटक संगीत के महान विद्वान् श्री त्यागराजाजी का निवास स्थान देखा।

उसके बाद हम तिरुवन्नमलै मंदिर और रमन महर्षि के आश्रम गए। फिर हम कांचीपुरम पहुँचे जहाँ माँ कामाक्षी के दर्शन कर पांडिचेरी निकल पड़े। वहाँ समुद्र तट बहुत ही सुन्दर था। बड़ी-बड़ी लहरें पत्थरों से टकरा रही थीं। श्री ऑर्बिन्दो आश्रम में कुछ पुस्तकें खरीद कर हम बंगलौर आ गए और वहाँ से न्यू जर्सी लौट आये। यह थी मेरी दक्षिण भारत के कुछ शहरों की यात्रा। मुझे बहुत मजा आया।

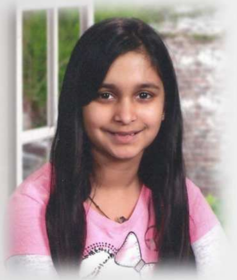

रिया नौ साल की है। वह हिंदी यू.एस.ए. की मध्यमा-२ कक्षा में और वूरहीस की ओसेज पाठशाला की चौथी कक्षा में पढ़ती है। रिया को संगीत में ख़ास दिलचस्पी है और वह पियानो सीखती है।

भारत की रानी

रिया चतुर्वेदी

जो आई घोड़े पे सवार लड़ लड़ के भारत को आज़ादी दी
वो है हमारी झाँसी की रानी।
जिसने अपनी जान को खतरे में डाला हमारे भारत के लिए,
वो है हमारी झाँसी की रानी।
जिसने अपने नन्हे बेटे को पीठ पर बाँध कर युद्ध किया,
वो है हमारी झाँसी की रानी।
जिसने भारत की नारियों को अपने हक़ के लिए लड़ना सिखाया,
वो है हमारी झाँसी की रानी।

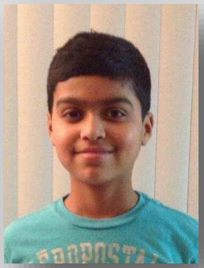

शिवाजी

मेरा नाम सिद्धांत पाठक है। मैं सातवीं कक्षा में पढ़ता हूँ और एडिसन हिंदी पाठशाला में उच्च स्तर-१ का छात्र हूँ। मुझे अपने देश से बहुत प्रेम है। मुझे खेलना और पढ़ना अच्छा लगता है।

जब मैं सात साल का था तब मैंने छत्रपति शिवाजी के बारे में सुना था। उनकी वीरता की कहानियों को सुनकर और पढ़ने के बाद मुझे उनसे बहुत प्रेरणा मिली। इसलिए मैंने सोचा कि मैं, कर्मभूमि के इस अंक के लिए, शिवाजी महाराज के बारे में लिखूँ।

छत्रपति शिवाजी का जन्म सन सोलह सौ अस्सी में शिवनेरी में हुआ था। उनका जन्म एक ऐसे समय पर हुआ जब भारत पर मुगलों का राज था। उस समय उनके पिताजी महाराष्ट्र के राज्यपाल थे। शिवाजी को भारत पर मुगलों का कब्जा एक अन्याय के समान लगा। उन्होंने अपने मित्रों के साथ एक वचन लिया कि वे अपनी मातृभूमि को किसी भी तरीके से मुगलों से छुड़ाकर अपने हाथों में लाएँगे। शिवाजी की मुगलों पर विजय का राज उनकी माताजी जीजाबाई थीं। छत्रपति शिवाजी अपनी माँ का बहुत आदर करते थे। जब वे किसी भी नए प्रयास का आरम्भ करते जीजाबाई उनकी सहायता करतीं। शिवाजी उनके आशीर्वाद के बिना किसी भी सैन्य अभियान का प्रारम्भ नहीं करते।

मैं भी अपने जीवन में शिवाजी महाराज के संस्कारों का उपयोग करता हूँ। वे मेरे लिए एक आशा की किरण थी और हमेशा रहेंगे।

प्रणय जग्गी (उम्र ९ वर्ष)

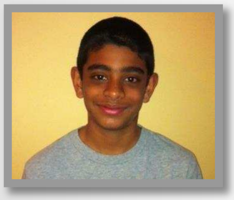

नीरव जैक्सनविल हिंदी पाठशाला में मध्यमा-१ के छात्र हैं और पाँचवी कक्षा में पढ़ते हैं। उन्हें हिंदी पढ़ना और चित्र बनाना बहुत अच्छा लगता है।

मेरी हिन्दी यात्रा

मेरे परदादा अन्य कई भारतीयों के साथ बीसवीं सदी के प्रारम्भ में भारत से फिजी "गिरमिट सिस्टम" के अंतर्गत अंग्रेजों द्वारा ले जाये गए थे। वे विभिन्न भारतीय बोलियाँ बोलते थे। फिजी में अन्य कई भाषाएँ बोलने वाले लोग भी रहते थे। भारतीयों ने वहाँ अपनी भाषा, संस्कृति और धर्म की पहचान बनाए रखने का विशेष प्रयास किया।

मेरे माता-पिता १९९९ में अमेरिका आए और यहाँ मेरा जन्म हुआ। मुझे हिंदी सीखने में बहुत रुचि है जिससे मैं अपने पूर्वजों की धरोहर को आगे बढ़ा सकूँ। मैंने अपने माता-पिता से हिंदी बोलना सीखा और हिंदी पाठशाला में प्रवेश लिया जहाँ मैं हिंदी पढ़ना और लिखना सीख रहा हूँ।

मैं बाल विहार भी जाता हूँ और हिंदी आने के कारण मुझे वहाँ भजन, मंत्र और कहानियाँ अच्छे से समझ में जाते हैं। जब मैं फिजी जाता हूँ तो अपने परिवार के साथ हिन्दी में बातचीत कर पाता हूँ। मुझे बहुत प्रसन्नता है कि मैं वह भाषा सीख रहा हूँ जो मेरे पूर्वजों ने प्रयोग की और संभाल कर रखी।

दस वर्षीय कार्तिक पाँचवीं कक्षा में हैं और जैक्सनविल हिन्दी पाठशाला के मध्यमा-१ स्तर के छात्र हैं। पुस्तकें पढ़ने में रुचि रखने वाले कार्तिक हिन्दी बहुत चाव से सीखते हैं। उनका कहना है कि यदि वे भारत वापस जाते हैं तो हिन्दी भाषा का ज्ञान उनके लिए बहुत उपयोगी होगा।

मेरी सैन फ्रांसिस्को यात्रा

मैं जनवरी महीने में सैन फ्रांसिस्को गया था। मेरे माता-पिता और भैया मेरे साथ गये थे। हमारा होटल पेसिफिक ओशन के पास था। हम यूनियन स्क्वेयर और Fisherman's Wharf गए थे। सैन फ्रांसिस्को क्षेत्र बहुत पहाड़ी है। वहाँ जाने पर पता चला कि गोल्डन् गेट ब्रिज सुनहरा नहीं, बल्कि लाल है। हमने आल्काट्रेज भी देखी। बहुत साल पहले आल्काट्रेज एक जेल थी। हमने दो राष्ट्रीय पार्क में बहुत पेड़ देखे। राष्ट्रीय पार्कों के नाम मूयर वुड और बिग बेसिन हैं। पार्क में हम ने बहुत सारे Redwood पेड़ देखे। सबसे पुराना पेड़ २००० साल का है। सबसे ऊँचा पेड़ ३३० फीट का है। मैं वृक्षों को देखकर बहुत प्रभावित हुआ।

हमें सैन फ्रांसिस्को में बहुत मजा आया। काश मैं सैन फ्रांसिस्को में रह पाता......

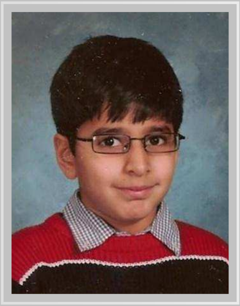

मैं प्रणय जग्गी (उम्र ९ वर्ष) वूरहीस के क्रेस्सेन एलेमेन्टरी विद्यालय में पाँचवी कक्षा में पढ़ता हूँ। मेरे सबसे प्रिय विषय गणित और विज्ञान हैं। ये दोनों विषय मुझे बहुत रोचक लगते हैं। मुझे व्यायाम करना भी बहुत अच्छा लगता है क्योंकि व्यायाम करने से शरीर चुस्त और फुर्तीला रहता है। मुझे अपने मित्रों के साथ सभी तरह के बाहर के खेल खेलना पसंद हैं। खाली समय में मुझे कहानियाँ पढ़ना और चित्र बनाना अच्छा लगता है।

होली

होली हिन्दुओं का प्रमुख त्योहार है। होली चैत्र के महीने में मनाई जाती है। इस दिन लोग एक दूसरे पर गुलाल या गीला रंग लगाते हैं। रंग लगाने के बाद लोग एक दूसरे के गले मिलते हैं। गले लगने से आपस में प्रेम और भाईचारा बढ़ता है।

होली क्यों मनाई जाती है?

इसके पीछे बहुत सी कहानियाँ हैं परन्तु सबसे बहुचर्चित यह कहानी है।

हजारों साल पहले एक राक्षस राजा हिरण्यकश्यप पूरी धरती पर राज्य करता था। इस कारण उसमें बहुत घमंड आ गया और वह अपने को भगवान समझने लगा। उसने अपने राज्य के लोगों को आज्ञा दी कि वह किसी भी भगवान की पूजा न करें और सिर्फ उसकी पूजा करें। डर के मारे लोगों ने उसकी पूजा करनी शुरू कर दी। इससे राजा का घमंड और भी बढ़ गया। हिरण्यकश्यप का एक बेटा था जिसका नाम प्रह्लाद था। प्रह्लाद भगवान विष्णु का भक्त था। उसने अपने पिता को भगवान मानने से मना कर दिया। हिरण्यकश्यप ने हर प्रकार से कोशिश की कि प्रह्लाद भी बाकी लोगों की तरह उसे भगवान माने परन्तु प्रह्लाद टस से मस नहीं हुआ और भगवान विष्णु की ही पूजा करता रहा। हिरण्यकश्यप ने तो अपने बेटे को मरवाने की भी कोशिश की पर हर बार प्रह्लाद बच गया। अंत में हार कर हिरण्यकश्यप ने अपनी बहन होलिका की मदद ली। होलिका के पास एक ओढ़नी थी जिसे आग नहीं लगती थी। हिरण्यकश्यप ने होलिका से कहा की वह ओढ़नी अपने सिर पर ओढ़ ले और प्रह्लाद को गोद में ले कर आग में बैठ जाए। ऐसा करने से होलिका तो नहीं जलेगी पर प्रह्लाद जल कर मर जाएगा। होलिका ने अपने भाई की आज्ञा मानी और प्रह्लाद को गोद में ले कर आग में बैठ गयी। एक हवा के झोंके से ओढ़नी होलिका पर से उड़ कर प्रह्लाद के सिर पर आ गयी। होलिका जल कर मर गयी और प्रह्लाद बच गया।

खेलने वाली होली से एक दिन पहले होली जलाई भी जाती है। होली वाले दिन बहुत तरह की मिठाइयाँ बनती हैं पर सबसे मज़ा गुजिया खाने में आता है। यहाँ अमेरिका में भी मैं अपने दोस्तों के साथ होली खेलता हूँ और बहुत गुजिया खाता हूँ।

९ वर्ष के चैतन्य गर्ग, साऊथ स्कूल न्यू कैन्न में चौथी कक्षा में पढ़ते हैं। चैतन्य को भारतीय होने पर गर्व है और भगवान कृष्ण के भक्त हैं। वे मार्शल आर्ट्स, हिंदी और संस्कृत भाषा सीखना चाहते हैं। चैतन्य को पंजाबी खाना, बेसबॉल और स्कायलैंडर खेलना पसंद है।

मैं हूँ वहाँ से

मैं हूँ वहाँ से,
जहाँ पे सड़कों पे शोर ट्रैफिक का ज़ोर।
मैं हूँ वहाँ से,
जहाँ मिलता है तेज मसालों का भोज।
मैं हूँ वहाँ से,
जहाँ भगवान कृष्ण ने दिखाई लीला।
मैं हूँ गंगा के देश से,
जिसका जल है पवित्र कृष्ण के रंग सा नीला।
मैं हूँ हिमालय से,
जो दुनिया की है ऊँचाई।
मैं हूँ ताजमहल से,
जिसे सब देखने आए।
मैं हूँ आर्यों की संतान,
जो दुनिया का है इतिहास।
मैं हूँ भारत से,
जो दुनिया की है शान।

चैतन्य गर्ग
उम्र नौ साल

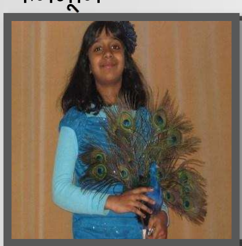

मोर

नमस्ते, मेरा नाम कपिला माने है, और मैं ईस्ट ब्रंस्विक हिंदी पाठशाला के मध्यमा-१ स्तर में पढ़ती हूँ। हर साल बड़ी ख़ुशी से मेरा छोटा भाई और मैं कविता प्रतियोगिता और हिन्दी महोत्सव में भाग लेते आये हैं। मेरी माँ भी इस पाठशाला में पढ़ाती हैं।

पिछले साल जब हिंदी कविता प्रतियोगिता हुई थी तब मैंने "झाँसी की रानी" के लिए कुछ पंक्तियाँ कही थीं। सब को वे बहुत पसंद आयी थीं। जजेज (निर्णायकों) ने भी मेरी बहुत प्रशंसा की थी। तब मुझ में बहुत आत्मविश्वास आया। ऐसा लगा कि मैं भी अपनी मातृभाषा से अलग भाषा में कुछ कर सकती हूँ। मैंने अपने मन में अगले साल खुद कविता लिखकर कहने की ठान ली। मेरी माँ ने भी बड़ी ख़ुशी से हर तरह से सहायता करने की अनुमति दर्शाई।

इस साल जब "सैंडी" ने सब जगह परेशानी की थी तब मेरी पाठशाला से लेकर सारे क्लासेस बंद थे। यहाँ तक कि घर में बिजली भी नहीं थी। तब मोमबत्ती की लाइट में बैठ कर मैंने "मोर" कविता लिखनी शुरू की। मोर के लिए जो विचार मेरे मन में आये वे कविता के रूप में मैंने लिखने की कोशिश की। शब्दों की बड़ी कठिनाई थी। जितना ढूँढ सकी उतना माँ की सहायता से किया। जब रोशनी आई तब गूगल और विकिपीडिया पर जाकर बाकी शब्द ढूँढे, और मेरी कविता पूर्ण हो गयी। सारे शब्द मैंने ढूँढे थे तो कविता कथन के लिए मुझे ज्यादा परेशानी उठानी नहीं पड़ी।

अब इस साल मैं अपनी खुद की कविता स्टेज पर कहूँगी। इसकी रचनाकार मैं हूँ कहते हुए बड़ा गर्व महसूस होगा। आशा है कि आप को भी मेरी कविता अच्छी लगेगी।

धन्यवाद,

घुंघराले बादल जमे जब,
निकलोगे बाहर तुम तब।
पुकार के सबको, फैलाके पंख पिसारा,
दिखाओगे अपना नाच का नजारा।
मनभावन लगती बारिश जितनी,
उतनी सुंदर बिजली की झनकार।
कार्तिकेय का बने हो वाहन,
प्यारा है तुझे मौसम सावन।
मोर पंखी पंखों में तेरे है रंगों की झलक निराली,
इसीलिए है किशन ने तारी माथे पर जगह तुम्हारी।
देख के तुम्हें सवाल आते हैं मन में बहुत।

क्या है तेरी सुन्दरता का राज?
यह तेरे खुद के सिर पर है ताज।
घर बनाते हो जमीन के अन्दर
पर सोओगे पेड़ों पर?
खा के फूलों की पत्तियाँ बुझाओगे साँप की बत्तिया।
जितना सुन्दर तन है तेरा, मन भी होगा उतना सुन्दर।
"राष्ट्रीय पक्षी" का मान दिया है तुझे भारत ने।
सम्मान मिला है तुझे सारे पक्षियों में।

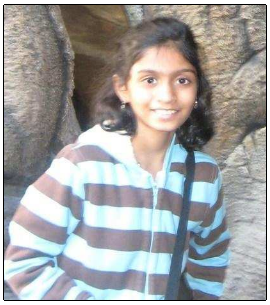

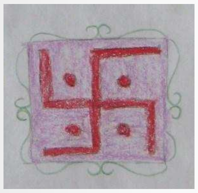

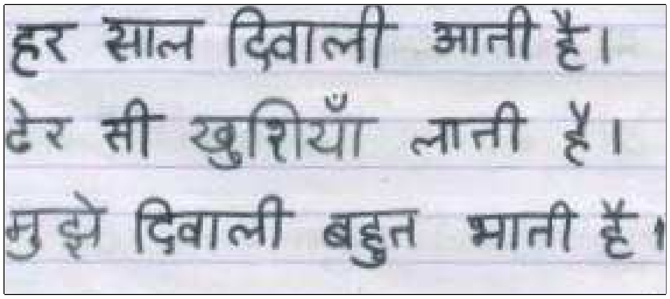

हर साल दिवाली आती है।
ढेर सी खुशियाँ लाती है।
मुझे दिवाली बहुत भाती है।

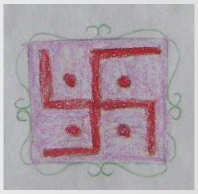

अबोली महाजन
कक्षा: ५

पाठशाला: सम्सेल अप्पर एलीमेंट्री स्कूल, सेयरविल्ल, न्यू जर्सी
हिंदी पाठशाला: मध्यमा-१ ईस्ट ब्रुन्सविक
रुचियाँ: पढ़ना, रेखाचित्र बनाना और रंग भरना

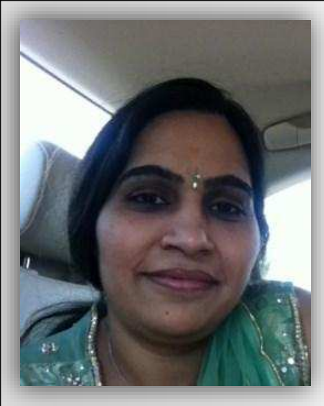

मैं उषा मिश्रा हिन्दी यू.एस.ए., मोनरो में मध्यमा-२ की अध्यापिका हूँ। इस बार मैंने अपने विद्यार्थियों को भारतीय स्वतंत्रता सेनानियों के बारे में लिखकर लाने के लिए कहा। उन्होंने अपने माता-पिता की सहायता से अपने कार्य को बहुत ही सुन्दर तरीके से पूरा किया। इसके पश्चात् हमने भारतीय स्वतंत्रता सेनानियों के बारे में चर्चा की जिससे बच्चों ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के बारे में जानकारी प्राप्त की।

भगत सिंह

प्रणव रेड्डी, मोनरो हिन्दी पाठशाला, मध्यमा - २

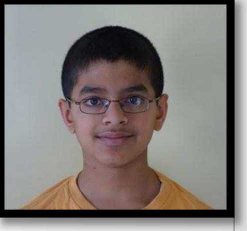

भगत सिंह एक महत्वपूर्ण पंजाबी स्वतंत्रता सेनानी थे। उन्हें लोग शहीद भगत सिंह के नाम से भी जानते हैं। भगत सिंह का जन्म २८ सितम्बर १९०७ के दिन लायलपुर पंजाब में हुआ था। उनकी जिंदगी छोटी ही थी, पर उन्होंने देश के लिए बहुत कुछ किया। वे गाँधीजी से अलग, ताकत से अंग्रेजों को देश से निकालना चाहते थे।

भगत सिंह ने ज़िन्दगी में बहुत सारे आंदोलनों और बहिष्कारों में भाग लिया। ऐसे ही एक आंदोलन में उनके गुरु, लाला लाजपत राय को एक अंग्रेजी अफसर ने जान से मार दिया। भगत सिंह इसका बदला लेने के लिए तड़प रहे थे। थोड़े दिन बाद उन्होंने अफसर जॉन साण्डर्स को गोली से मार दिया। इसके बाद उन्होंने अपने केश और दाढ़ी कटवा ली और अंग्रेजी कब्ज़े से दूर रहे। उनका सबसे बड़ा कार्य अंग्रेजी विधान सभा में बम फेंकना था। उस सभा में "डिफेंस ऑफ़ इंडिया एक्ट" की चर्चा हो रही थी। वहाँ पर भगत सिंह जी ने अपने आपको गिरफ्तार होने दिया और आजीवन कारावास पाया। मार्च २३, १९३१ के दिन, शाम सात बजे, उनको फाँसी पर लटका दिया गया। भगत सिंह एक सच्चे सेनानी थे। उनके जीवन से हम सब बहुत कुछ सीखते हैं।

वीर सावरकर

महाराष्ट्र मे नासिक जिले के एक गाँव भगूर मे पंडित दामोदर पंत रहते थे। उनके माता का नाम राधाबाई था। २८ मई, सन १८८३ को राधाबाई ने एक बालक को जन्म दिया। राधाबाई अपने बेटे को विनायक बुलाती थी। घर के कुछ लोग उन्हें तात्या भी बुलाते थे।

सावरकर एक कवी और लेखक थे। उन्होंने जातिपाती नष्ट करने की कोशिष की। वह एक आदर्श क्रांतीकारी और स्वतंत्रा सेनानी थे। उन्होंने हिंदू महासभा और अभिनव भारत सोसायटी की स्थापना की।

उनकी विद्रोही क्रांतीकारी गतिविधियो के कारण अंग्रेजोने उन्हे कालापानीकी सजा के लिये अंदमान निकोबार की जेलमे भेज दिया था।

उनकी मृत्यु - फरवरी २६ १९६६ मुंबई में हुयी थी।

- माही पचगाडे
मोनरो स्कूल, मध्यमा दो

गोरल पारीख जी साऊथ ब्रंस्विक हिंदी पाठशाला में कनिष्ठ-१ की शिक्षिका हैं। व्यवसाय से आप आप एकाऊंटेंट हैं। आप अमेरिका में भारतीय पोशाकों का व्यापार भी करती हैं। भारतीय संस्कृति व हिंदी भाषा के प्रचार व प्रसार में सदैव तत्पर रहती हैं।

बाज़ार - एक प्रयास

हमारी कनिष्ठ-१ की कक्षा के बच्चे हिंदी बहुत रुचि से सीख रहे हैं। हमारे पाठ्यक्रम की एक किताब "छुट्टी का दिन" बच्चों को अलग-अलग शब्दों से परिचित कराती है। हमने जब बच्चों को बाज़ार और दुकानों के बारे में सिखाना आरम्भ किया, तब लगा कि बच्चों को समझने में शायद थोड़ी दिक्कत हो रही है। इसके साथ ही उत्पन्न हुआ एक नया विचार। हमें लगा कि केवल पुस्तक में से चित्र दिखाने की बजाए अगर हम उन्हें प्रत्यक्ष इसी वातावरण का भी अनुभव कराएँ, तो बच्चों के लिए ये आसान रहेगा। बच्चे आनंद के साथ इस वातावरण को समझ पाएँगे। इस प्रयोग को साकार करने के लिए हमने अपनी ही कक्षा में एक छोटा सा बाज़ार बनाया। इस बाज़ार में मिष्ठान, आभूषण, खिलौने, सब्जी, फल, औषधालय और पशुपालन घर जैसी दुकानें शामिल थी। हमने घर में से ही सारी चीज़ों का प्रबंध किया था, जैसे सब्जी के लिए आलू, टमाटर, धनिया, बैंगन, फल के लिए नारंगी, केला इत्यादि।

बच्चों के कक्षा में आने के बाद हमने उन्हें बताया कि आज हम बाज़ार देखने जायेंगे। वहाँ अलग-अलग वस्तुएँ मिलती हैं जिसे हम खरीद सकते हैं, व जिसे दुकानदार बेचते हैं। हम उन्हें एक के बाद एक सभी दुकानों पर ले गए और सब चीज़ों के बारे में बताया। बाज़ार देखने के बाद बच्चों ने आसानी से जाना कि ऐसी जगह पर तो वे अधिकतर जाया करते हैं।

पहली दुकान थी पशुपालन घर अर्थात् पेट स्टोर, उन्होंने अलग-अलग पशुओं के नाम बोले, उनके रंग पहचाने। फिर बारी आई आभूषणों की, माला, बुँदे, और चूड़ी जैसे शब्द उनके लिए बिलकुल ही नए थे। एक बच्चे ने तो इसे देख कर मुझे बताया कि मैंने बुँदे पहन रखे हैं। खिलौने उनकी मन पसंद दुकान थी, उनकी अपनी दुनिया। बहुत ही अच्छे से उन्होंने समझा कि बड़ा क्या, छोटा क्या, नरम क्या और सख्त क्या। फल और सब्जी के नाम उन्हें कुछ जाने पहचाने से लग रहे थे। एक ने तो आलू और बैंगन की अपनी कविता भी सुना दी। रंग, आकार और गिनती करते हुए हम पहुँचे औषधालय। हमने दवाओं के बारे में खूब बातें की, और बच्चों को समझाया कि पौष्टिक खाना खाने से हम दवाई से दूर रह सकते हैं।

हमारा यह प्रयोग बहुत सफल रहा तथा बच्चों ने बाज़ार का खूब आनंद भी लिया। गर्व होता है जब हमारे थोड़े से परिश्रम से बहुत ही कम समय में बच्चों ने इतना सब सीख लिया। हमारी भाषा, संस्कृति और सभ्यता को जीवित रखने के लिए हमारा ये अविरत प्रयास ऐसे ही आगे बढ़ता रहे, यह हमारी कामना है।

प्रथमा-दो की यात्रा

मुंबई में जन्मी सरिता नेमाणी साउथ ब्रंस्विक हिंदी पाठशाला में प्रथमा-दो स्तर की शिक्षिका हैं। आप पिछले तीन वर्षों से हिंदी यू. एस. ए. से जुड़ी हैं। आपने यूनिवर्सिटी ऑफ़ मुंबई से एम. एससी, आई. आई. टी. मुंबई से एम. फ़िल., यूनिवर्सिटी ऑफ़ न्यू ब्रन्सविक, कैनेडा से पी. एच. डी. की है। जोर्जियन कोर्ट यूनिवर्सिटी, न्यू जर्सी मे गणित की प्रोफ़ेसर हैं। Anubhuti-hindi.org में प्रकाशित कुछ कविताएँ: उसकी खामोशी, कैसा आतंक तथा साथ।

हमारी हिंदी यू.एस.ए. की प्रथमा-दो की इस प्यारी मनोरंजक यात्रा में आप सब का स्वागत है। इस यात्रा को कुछ ही पन्नों में तय करना थोड़ा कठिन है तो हम सब स्थानक (स्टेशन) पर रुकने के बजाय कुछ मुख्य आकर्षक स्टेशनों के दर्शन करेंगे। आओ, सबसे पहले हम यात्रा की शुरुआत पहले दिन से करें। पहला दिन इस कक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि इस दिन छात्र अपनी अध्यापिका एवम् अध्यापिका अपने छात्रों को जानने का अवसर प्राप्त करते हैं। बच्चों को चार समूहों में बाँटा जाता है। अपने समूह में बच्चे एक दूसरे को अपने बारे में तीन वाक्य बतलाते हैं। जब वो टूटी-फूटी हिंदी में बोलने की कोशिश करते हैं तो सुनने में बहुत आनंद आता है। आखिर उनका ये प्रयास ही तो हमें हिंदी भाषा के सुनहरे भविष्य को दर्शाता है। उनके काम की कुछ झलकियाँ यहाँ पर प्रस्तुत की गयी हैं। आशा है आपको पसंद आएँगी।

बच्चों को कागज़ की एक पट्टी पर अपना नाम लिख कर उसे सजाने में बहुत मजा आता है।

जो हर कक्षा में बच्चों को अपनी मेज पर रखने के लिए कहा जाता है। हर कक्षा में तरह-तरह के खेल खेले जाते हैं। सबसे पहला नियम यही है कि खेल में वह बच्चा ही शामिल होगा जिसने अपना नाम अपनी मेज पर रखा हो। इसके दो फायदे हैं- एक यह कि मुझे बच्चों के नाम याद करने में आसानी हो जाती है, दूसरा यह कि बच्चों को अपना नाम हिंदी में लिखने और पढ़ने का अभ्यास हो जाता है। जब वे रोज अपनी मेज पर अपने समूहसाथी का नाम देखते हैं तो उन्हें दूसरे नाम भी पढ़ने की जिज्ञासा जागृत होती है।

हमारा अगला मुख्य स्टेशन है गाँधी जयंती का समारोह। इस दिन को बच्चे श्वेत वस्त्र पहन कर "शांति दिवस" के रूप में मनाते हैं। हर कक्षा के आरम्भ में बच्चे अपने समूह के साथ अपने द्वारा बनाए हुए पोस्टर का विवरण देते हैं। बाद में वे कक्षा के बाहर की दीवार पर लगाये जाते हैं ताकि हमारा हिंदी यू.एस.ए. परिवार भी

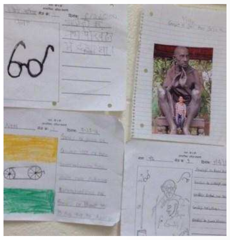

उसका आनंद ले सके। जब सब उनके काम की प्रशंसा करते हैं तब बच्चे गर्व से फूले नहीं समाते। फिर उनकी तस्वीरें ईमेल के द्वारा माता-पिता को भेजी जाती हैं ताकि वे अपने परिचितों के साथ अपने बच्चों का कार्य बाँट कर गर्व महसूस कर सकें।

हमारा अगला मुख्य स्टेशन है नवरात्रि, दशहरा

और गोलू। बच्चे इन तीनों में से किसी भी एक विषय पर पोस्टर का कार्यक्रम करते हैं। कक्षा में कोई गाना गाता है तो कोई गरबा या डांडिया नृत्य दर्शाता है। कोई छात्र रामलीला के किस्से सुनाता है तो कोई गोलू में खिलौनों की सजावट के बारे में बताता है।

हमारा अगला मनोरंजक स्टेशन है दीवाली। इस दिन बच्चे पोस्टर की सहायता से रंगोली की चित्रकला को तो दर्शाते ही हैं साथ ही में कागज से कंदीले बना कर अपने हस्तकार्य की नुमाइश भी करते हैं। कक्षा को देख कर यह तो जाहिर ही है कि त्यौहारों का असली मतलब तो एक दूसरे के साथ हँसी और मिठाई बाँटना है।

हिंदी यू.एस.ए. केवल हिंदी सीखने का माध्यम नहीं है यह भारत की संस्कृतियों को सीखने के साथ-साथ एक मिलनसार समाज का निर्माण करने का माध्यम भी है। इसका सबूत न जाने कितनी बार देखने में आया होगा। जब सैंडी जैसा तूफान आया तो सब विद्यार्थियों के माता-पिता एक दूसरे की मदद करने सदा तैयार थे। जब कोई त्यौहार मनाने के लिए सहायता की आवश्यकता हो तो भी सभी एक होकर आगे बढ़ते हैं।

चलें, इस यात्रा को आगे बढ़ाएँ। जी हाँ! हमारी यात्रा में क्रिसमस भी शामिल है। इसे मनाने के लिए बच्चे अपने परिवार के लिए अभिनंदन कार्ड बनाते हैं और नूतन वर्ष की रात कैसे बितायी उसका वर्णन

करते हैं। कक्षा में एक दूसरे को नूतन वर्ष की शुभकामनाएँ देते हैं। बच्चों के हिंदी वार्तालाप की पहले दिन के साथ तुलना करो तो दिल बाग़-बाग़ हो जाता है।

फिर बारी आती है संक्रांति की। बच्चे संक्रांति, पोंगल या लोहड़ी के बारे में पोस्टर बनाते हैं। सभी एक दूसरे को मिठाई, तिल गुड़ देते हैं और कागज की पतंगें भी बनाते हैं। जब वो हाथ में अपनी पतंगें लेकर पाठशाला में यहाँ से वहाँ दौड़ते हैं, तब सच भारत की याद ताजा हो जाती है।

कक्षा में बच्चे गणतंत्र दिवस भारत का झंडा बनाकर मनाते हैं। अपने समूह साथी को हर कोई

भारत के एक वीर के बारे में बताता है। बच्चों को इंटरनेट पर इस विषय में खोज करने में बड़ा मजा आता हैं। एक सप्ताह पहले ही यह तय कर लेते हैं कि कौन सफ़ेद, हरा और नारंगी रंग पहनेगा। फिर २६ जनवरी के समारोह में भारत के झंडे का रूप देकर अपनी तस्वीरें खिंचवाने के लिए तैयार हो जाते हैं।

हाँ भाई, हम होली को नहीं भूले हैं। इस दिन

बच्चे रंग-बिरंगे कपड़े पहन कर एक दूसरे को होली की बधाइयाँ देते हैं। बच्चों को प्रहलाद की कहानी सुनने में बड़ा मजा आता है। कक्षा में मिठाइयाँ बँटती हैं। कोई इस त्यौहार की तुलना अमेरिका के हैलोविन से करता है तो कोई इसे पानी की बंदूक से खेलने वाला खेल समझता है। इनकी ये कल्पनाएँ ही हैं जो इस अध्ययन से भरी यात्रा को सफल बनाती हैं।

हम कविता-पाठ प्रतियोगिता में भी भाग लेते हैं। हिंदी महोत्सव की तो बात ही मत पूछो। चाहे वह भजन हो या कोई भी मनोरंजक कार्यक्रम। बच्चे बहुत उत्साहित हो जाते हैं। जैसे कि पिछले साल जब कक्षा में बच्चों ने लकड़हारे की कहानी सुनी तो उससे इतने प्रभावित हुए कि पूरी कक्षा ने मिलकर एक नाटक

बना दिया। सभी मंच पर तो नहीं जा सकते थे, लेकिन सबने इसमें अपना योगदान दिया। सबने समूह बनाकर कहानी के हर भाग को एक नए अंदाज से लिखा। उसे एक आधुनिक दुनिया का रूप दिया मगर कहानी के मुख्य उद्‌देश्य को नहीं बदला। सचमुच उनका उत्साह और काम देख कर लगता है कि इससे अच्छी गुरु-दक्षिणा और क्या होगी?

यह है हमारी प्रथमा-दो की यात्रा। आशा है कि आपका यह अनुभव मनोरंजक और सुखदायी हुआ होगा। फिर मुलाकात होगी अगली यात्रा में।

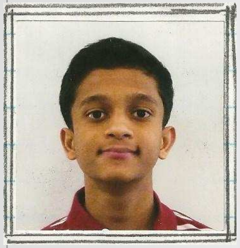

चिरायु गुप्ता

मोनरो हिन्दी पाठशाला

मध्यमा–१

— मेरी हिन्दी यात्रा —

मैं चिरायु गुप्ता पिछले तीन साल से हिन्दी (यू.एस.ए) में हिन्दी लिखना बोलना व पढ़ना सीख रहा हूँ। मैं हर शुक्रवार को डेढ़ घन्टा हिन्दी सीखने जाता हूँ। जिनका प्रयोग मैं अपने बोलचाल में रोज करता हूँ। हिन्दी (यू.एस.ए) में मैंने बहुत सारे नये त्योहारों के बारे में सीखा है। अभी मैं थोड़ा-थोड़ा हिन्दी पढ़ने भी लगा हूँ। भारत से आये पत्र जो मेरी-नानी दादी लिखती हैं उन्हें मैं खुद पढ़ सकता हूँ।

मैं अपने सारे टीचर को धन्यवाद देता हूँ। जिनके कारण मुझे हिन्दी से प्यार हुआ और मैंने हिन्दी का प्रयोग करना शुरू किया। हिन्दी भाषा के साथ मैंने भारतीय संस्कृति को भी जाना है। मैं ये सोचता हूँ कि यू.एस.ए में सब भारतीयों को हिन्दी सीखनी चाहिये।

"मुझे हिन्दी यू.एस.ए पर गर्व है"

मेरा नाम श्रेया भारद्वाज है। मैं ईस्ट ब्रंस्विक हिंदी पाठशाला में मध्यमा-१ स्तर की छात्रा हूँ। मैंने यह कविता अपने माता-पिता की सहायता से लिखी है। यह कविता मेरे अपने हिंदी कक्षा के अनुभव पर आधारित है। आशा करती हूँ कि आपको मेरी कविता पसंद आएगी।

सीखी हिन्दी

सीखी गिनती, अक्षर, मात्रा
सीखी हिंदी में बात-चीत
हिंदी यू.एस.ए. आकर मैंने सीखी बहुत सी चीज़

करी बहुत नए मित्रों से जान-पहचान
खेले कई नए खेल, हिंदी क्लास में एक साथ
सीखे कई नए शब्द, पढ़ी कई नयी किताब

आकर मैंने यहाँ मनाये बहुत सारे त्यौहार
दिवाली, होली पर गाये अनेक गीत-संगीत
सबको बताया कैसे मनाते हम हर पर्व एक साथ

चाहूँ के हर-रोज़, मैं हिंदी स्कूल आ पाऊँ
और इसी तरह हिंदी भाषा का ज्ञान बढ़ाऊँ

मेरा नाम जैसमिन जुल्का है। मैं दस वर्ष की हूँ। मैं चौथी कक्षा में पढ़ती हूँ। मैं चेरी हिल हिन्दी पाठशाला में मध्यमा-२ की विद्यार्थी हूँ। एक अच्छी विद्यार्थी होने के साथ-साथ, मैं चित्रकारी, लिखने, नाचने, फुटबॉल खेलने और प्रतियोगिताओं में भाग लेने में रुचि रखती हूँ।

होली का त्यौहार

आई है होली इक रंग बिरंगा त्यौहार
जब सब नाचते और खेलते हैं रंगों के साथ
मारते हैं पिचकारियाँ और फेंकते हैं गुलाल
और लाते हैं इक दूसरे के जीवन में बहार
खाते हैं मिठाइयाँ अपने मित्रों के साथ
बर्फी, लड्डू, गुलाब जामुन और बहुत सारे बढ़िया पकवान
बनाते हैं रंगोलियाँ सुन्दर रंगों के साथ
मलते हैं लाल,पीला, नीला, और हरा गुलाल
इसलिये सब को होली पसंद है
क्योंकि यह है सब का प्यारा रंग बिरंगा त्यौहार

मेरा नाम चारु चतुर्वेदी है। मैं ग्यारह वर्ष की हूँ और पाँचवी कक्षा की विद्यार्थी हूँ। मुझे भारत और हिंदी से बहुत प्रेम है। मैं तीन वर्ष की उम्र से हिंदी सीख रही हूँ और अब जैक्सनविल हिंदी पाठशाला की स्वयंसेविका हूँ।

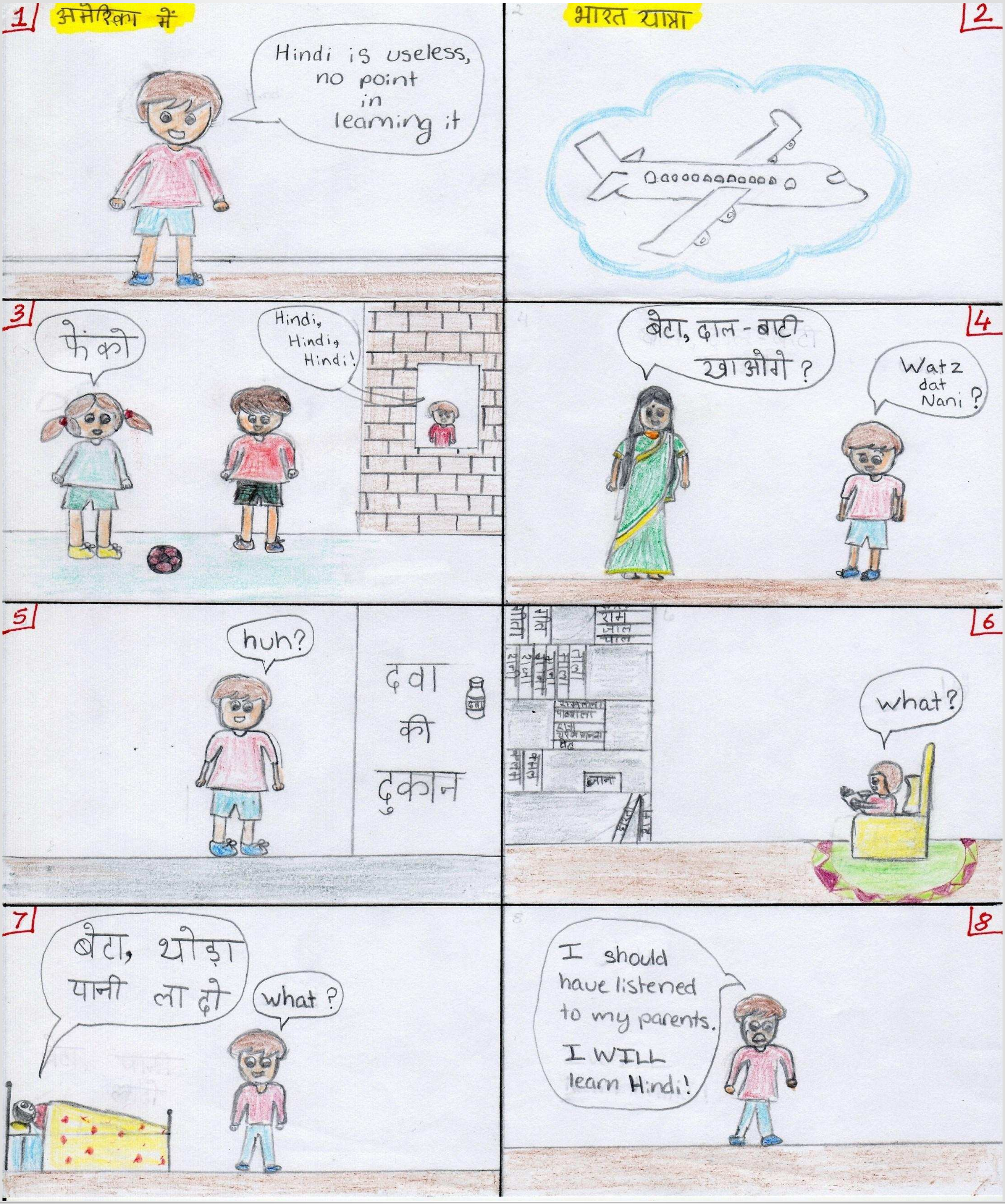

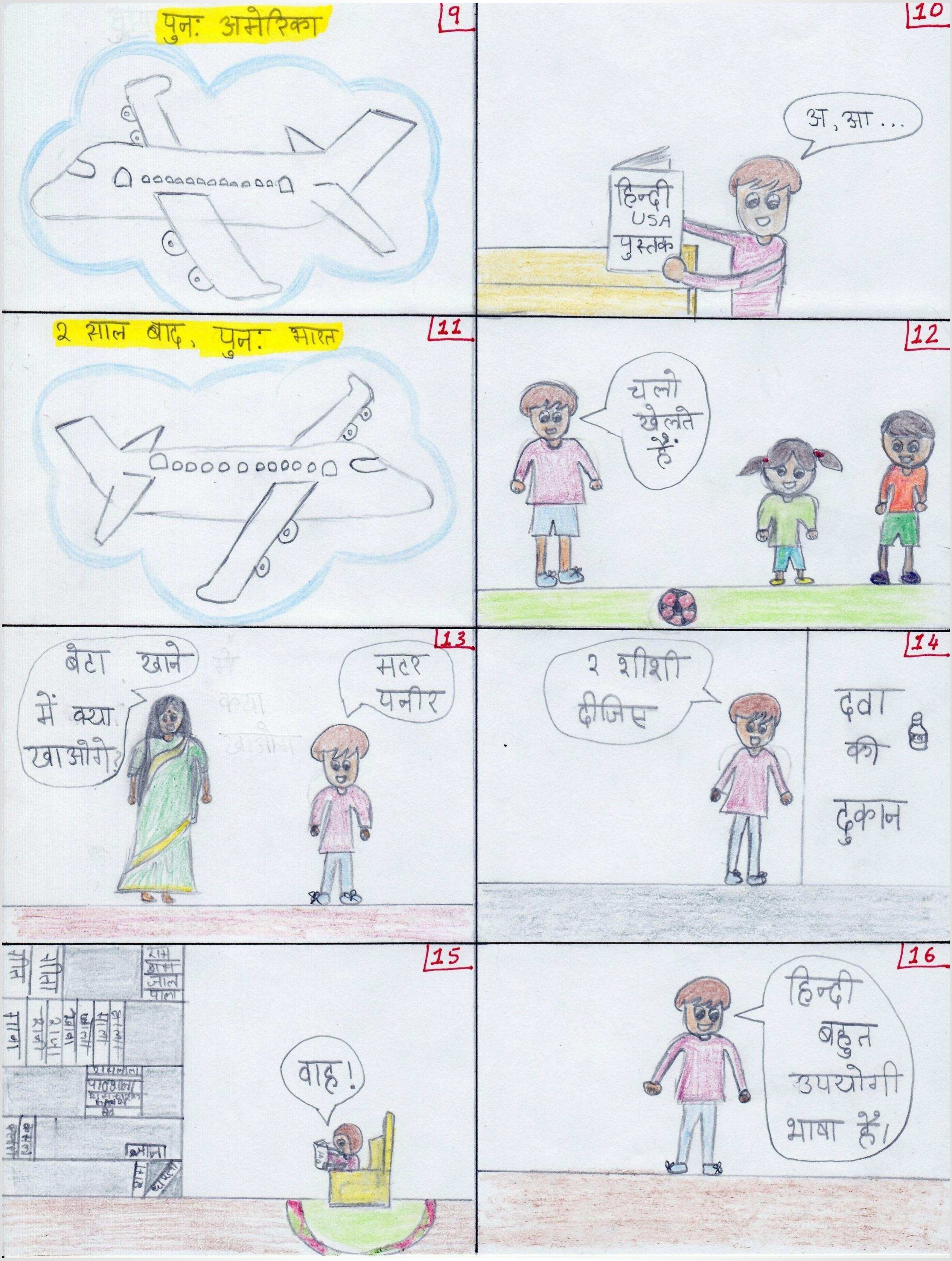
9
पुन: अमेरिका
10
अ, आ ...
हिन्दी USA पुस्तक
11
2 साल बाद, पुन: भारत
12
चलो खेलते हैं
13
बेटा खाने में क्या खाओगे?
मटर पनीर
14
2 शीशी दीजिए
दवा की दुकान
15
वाह!
16
हिन्दी बहुत उपयोगी भाषा है।

हर्षिनी रामन
उच्च स्तर -1

समाज में कंप्यूटर का बढ़ता उपयोग

कंप्यूटर एक बहुत अच्छा साधन है। वह कई कामों के लिए उपयोगी है। उससे हम अत्यधिक जानकारी प्राप्त कर सकते हैं और वह मनोरंजन का साधन भी है। आजकल कार्यालयों में भी इसका उपयोग जारी है। आज के जीवन में यह एक मुख्य चीज़ है। इसके कई रूप भी हैं, जैसे डेस्कटॉप लैपटॉप, टैब्लैट और स्मार्टफोन। ये कंप्यूटर एक ही समय में कई काम कर सकते हैं। आजकल बच्चे किसी विषय पर जानकारी प्राप्त करने के लिए कंप्यूटर का इस्तेमाल करते हैं इसके अलावा वे उस पर खेल खेलने और सोशल नेटवर्किंग साइट पर घंटे बिताते हैं। यह उनके स्वास्थ्य के लिए अच्छा नहीं है तथा इससे उनकी पढ़ाई पर भी असर पड़ता है।

कंप्यूटर के सामने घंटे बिताने से आँख कमज़ोर हो जाता है और पीठ में दर्द आ जाती है। बच्चे खेल-कूद में रुचि लेना बंद कर देते हैं। कंप्यूटर को सोच समझकर इस्तेमाल करना चाहिए ताकि हम उससे सिर्फ लाभ उठाएँ।

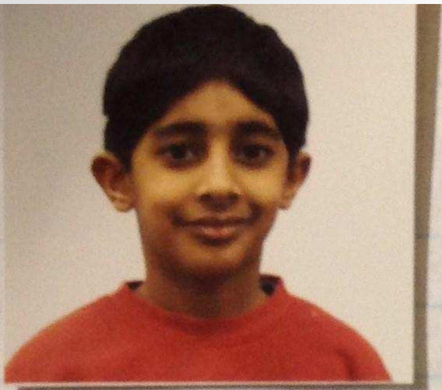

मेला
(रघुनंदन रामन मध्यमा-1)

दुनिया के हर जगह मे अलग अलग तरह के मेले लगते हैं।

मैं NEW JERSEY का INDO-AMERICAN मेला देखने गया था। इस मेले मे भारत की कला के विषय में बहुत जानकारी मिलती है। यहाँ तरह तरह के भारतीय कपड़े और चीज़े मिलती है। इस मेले मे बहुत खाने पीने के चीज़ भी मिलती हैं।

मेरी बेहन एक नाच में थी जो भारतीय गानो पे था। मुझे नाच गाने देखने में बहुत मजा आता है। साथ ही भारतीय खाना भी खाने को मिलता है।

मुझे इस मेले में जाके बहुत कुछ सीखने को मिला और बहुत मज़ा आया। मै हर साल इस मेले को देखना चाहता हूँ।

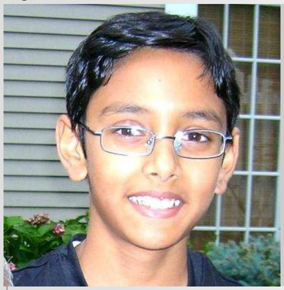

मेरे जीवन में हिन्दी का महत्व

सक्षम कुलश्रेष्ठ हिंदी यू.एस.ए. की प्लेन्सबोरो पाठशाला में उच्च स्तर-१ के विद्यार्थी हैं। इन्हें हिन्दी चलचित्र देखने का शौक है और ये आपने विद्यालय की “रोबोटिक्स टीम” के सदस्य हैं।

मैं हिन्दी के द्वारा भारत में रह रहे अपने परिजनों से मिला। अपने दादा दादी के प्यार को समझ सका। नानाजी की सुनाई कविता का अर्थ समझ सका। हिन्दी जानने की वजह से उनकी बातें मैं समझ सका और अपनी भावनाएँ उन्हें बता सका। जब मैं फोन पर हिन्दी में बात करता हूँ तब सभी बहुत खुश होते हैं।

हिन्दी पढ़ने की वजह से मैं अपने देश की सभ्यता और संस्कृति के बारे में जान सका और अब अपने जीवन में उसको ढालने की कोशिश कर रहा हूँ।

मुझे कविसम्मेलन में जाकर, अलग-अलग कविताओं को सुनकर और समझकर बहुत आनंद आता है।

मैं पिछले साल अपने माता पिता तथा दीदी के साथ भारत गया था। वहाँ मुझे एक अनाथालय जाकर, वहाँ रह रहे बच्चों से मिलने का अवसर मिला। मैं हिन्दी की वजह से उनके दर्द को जान सका और मेरे मन में उनके लिये कुछ काम करने की इच्छा जागी।

इसी तरह से कई बार, मुझे एहसास हुआ है कि मेरे मातापिता ने मुझे हिन्दी यू.एस.ए में पढ़वा कर बहुत अच्छा निर्णय लिया है।

मेरा नाम शिद्धी गोहेल है। मैं एडिसन हिंदी पाठशाला के मध्यमा-२ स्तर में पढ़ती हूँ। यह कहानी मेरे शिक्षिका सुमन दाहिया-शाह जी के जीवन की एक सच्ची घटना से प्रेरित है।

मुंडेर की कहानी

मैं सुबह उठी और मैंने अपना शयन कक्ष साफ किया। फिर मैं शौचालय में गयी। उसके बाद मैं स्नान घर में गयी पर स्नान घर का नल टूटा हुआ था। तो मैंने बाहर से पानी की बाल्टी मे पानी लेकर स्नान किया। फिर मैं रसोई में गयी जहाँ मेरी माँ बिजली के चूल्हे पर खाना पका रही थी। माँ ने मुझे भोज कक्ष में जाने के लिए कहा। माँ ने मुझे कहा कि खाना जल्दी खत्म करदो क्योंकी माँ को सारे बर्तन, बर्तन धोने की मशीन मे डालने थे। खाना खाने के बाद मैंने खिड़की से बाहर देखा अगर आज का मौसम अच्छा था या नहीं। मौसम बाहर बहुत अच्छा था। मैं दरवाजे के पास गई और चिटकनी खोल के

बाहर गई। हमारे घर का उपवन बहुत ही सुंदर है। मैं वहाँ झूले पर खेली। उसके बाद मैंने हमारे आँगन और मैदान मे जो पौधे थे उनको पानी से सींचा। फिर मैंने सोचा कि मैं अपने भैय्या के साथ खेलूंगी। मैंने भैय्या को पिछवाड़े में ढूंडा पर वो वहाँ नही थे। मैं घर के अंदर गयी। हमारा फर्श गीला था इस लिए मैं फिसल गयी। मैंने अपने भाई को अतिथि कक्ष मे ढूंडा पर वो उसमें से कहीं भी नहीं थे। मैं बैठक मैं तो ढूंडना भूल गयी थी। मेरे भैय्या बैठक मैं थे। वो मुझे छत पर ले गयी। हम वहाँ पकड़म पकड़ाई का खेल खेलने लगे। पता नही कब मेरा ध्यान गया और मैं मुंडेर के उपर से गिर गयी। एक औरत नीचे टोकरी अपने सिर के उपर रख कर जा रही थी। तब मैं उनकी टोकरी के अंदर गिर गयी। मेरे भैय्या जल्दी नीचे आये और मुझे लिया और उस औरत को बहुत धन्यवाद किया।

दस वर्षीय कार्तिक शंकर साउथ ब्रंस्विक पाठशाला में मध्यमा एक के छात्र हैं। कार्तिक को पढ़ना, वायलिन बजाना एवं कंप्यूटर प्रोग्रामिंग करना अच्छा लगता है। नीचे प्रस्तुत हैं कार्तिक द्वारा लिखित दो कविताएं।

जब मैं बड़ा हो जाऊँगा

जब मैं बड़ा हो जाऊँगा
बड़ी नाव में बैठकर
समुन्दर पार कराऊँगा।
जब मैं बड़ा हो जाऊँगा
हवाई जहाज को उड़ाकर
दुनिया की सैर कराऊँगा।
जब मैं बड़ा हो जाऊँगा
गगन को चूमने वाले
ऊँचे भवन बनाऊँगा।
जब मैं बड़ा हो जाऊँगा
अपने आविष्कारों से
सबका मन बहलाऊँगा।
जब मैं बड़ा हो जाऊँगा
अच्छा गायक बनकर
मधुर गीत सुनाऊँगा।
जब मैं बड़ा हो जाऊँगा
चाहे जो भी बनूँ मैं
नेक इंसान बन जाऊँगा।

यही सच है

हर घर में देखो तो एक इंसान है।
हर इंसान में तो एक भगवान है।
यही सच है, यही सच है, यही सच है।
हर तन में झाँको तो एक मन है।
हर मन में ताको तो एक अरमान है।
यही सच है, यही सच है, यही सच है।
हर अलमारी खोलो तो कई बर्तन हैं।
हर प्याली में तो अद्भुत ईंधन है।
यही सच है, यही सच है, यही सच है।
हर बस्ते में ढूँढ़ो तो एक कलम है।
हर कलम में बहुत बड़ी शक्ति है।
यही सच है, यही सच है, यही सच है।
हर सपने में कोई संजोया चित्र है।
हर चित्र में कोई अपना मित्र है।
यही सच है, यही सच है, यही सच है।
हर मेज पर सजाने के लिए फूल है।
हर फूल कड़ी मेहनत का फल है।
यही सच है, यही सच है, यही सच है।
हर जुबान पर तरह-तरह की बोली है।
बोली में हिंदी मिश्री जैसी घोली है।
यही सच है, यही सच है।
जी हाँ! यही सच है।

क्रिकेट पहेली

ध्रुव अग्रवाल

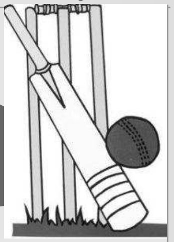

मेरा नाम ध्रुव अग्रवाल है। मैं चौदह वर्ष का हूँ। मैं नौवीं कक्षा में पढ़ता हूँ। मुझे हिन्दी लिखना, पढ़ना व बोलना बहुत अच्छा लगता है। जब सभी मेरी हिन्दी की प्रशंसा करते हैं तो मुझे बहुत गर्व होता है। मुझे हवाईजहाज बहुत पसन्द है। मुझे क्रिकेट का खेल बहुत पसन्द है इसीलिए मैंने ये पहेली बनाई है। इसमें भारतीय क्रिकेट के खिलाड़ियों के नाम छुपे हैं जिन्होंने 2011 में विश्व कप जीता था।

ए	टं	द	क	अ	स	सा	श्रा	ह	तु	च	अ	ग	ब	व	क	पी	ए
क	ब	क़	फ	ग्र	स	त	हि	र	व	प	न	ठा	प	फ	सु	यू	ग
ह	र	क़	प	वि	चि	ट	व	वी	मा	ग	ए	फू	लि	ए	दं	ष	ह
र	र	वि	चं	द्र	न	अ	श्वि	न	ए	ब	द	म	ओ	लो	ने	चा	इ
ए	मा	प	थ	द्र	तें	ए	स्म	ब	मा	क	ह	आ	ज	ना	ड़	व	ज
फ	कु	टे	म	ग्र	दु	ली	श	म	रि	सा	ज़े	बू	शी	रै	व	ला	ल
टी	ण	ल	ल	श्र	ल	ज्स	दे	द	मा	म	फ़्क	वी	व	श	त्क	ग	वे
यो	वी	र	द	म	क	ए	को	ल	स्ज	हैं	रें	यो	ल	रे	ने	व	ठ
श्री	प्र	क	ल	दो	द	लो	श	अ	ली	द्र	ज़	प	व	सु	लो	ह	रा
सं	कु	ह	न	ह	दु	ओ	को	ह	स	सिं	य	क्स	ए	ज़्व	त्र	ज़्स	रा
त	ध्रु	व	सिं	ल	ह	ह	को	ह	लो	ह	फ	ग	प	फ	त	द	ल
सं	रा	अ	व	ज	क़	ट	वा	प	बे	धो	मि	र्व	ओ	श्र	सि	एर	टे
क	सा	ग्र	ल	ओ	रा	ग	वा	प्ल	अ	नी	पो	वे	बे	अ	ग	ग्र	प
वे	क़	ज़	ल	वि	ल	व	स	अ	द्	व	ठ	प	न	फ	मं	ब्र	फ
पो	म	य	क	ट्ब	व	ब्ये	यु	ग	क़	धो	र	खा	बे	लो	लो	स	ना
र	म्ने	ब	क्य	भी	प	म्न	रे	ए	क़	ह	र	भ	ज	न	सिं	ह	मु
गौ	त	म	गं	भी	र	गा	को	हठ	क्ज	ही	अ	ए	गी	म	दं	अ	वे
प	ए	ब	लो	ह्ज	दो	दा	य्ब	एस	ज	नो	फ़्क	र	श्र	त	द	अ	ब

शब्द पहेलियाँ

अर्चना कुमार

निम्नलिखित प्रकार की पहेलियाँ हिन्दी यू. एस. ए. के विद्यार्थी, मध्यमा - २ की कक्षाओं में करते हैं।

मध्यमा - २ शब्द पहेली - १

कक्षा का कमरा और विषयों तथा पढ़ाई सम्बंधी नाम

1.	2.				3.		4.		5.
			6.					7.	
	8.				9.				
10.									11.
		12.					13.		
					14.				
15.								16.	
17.				18.		19.			

संकेत शब्द

बाएँ से दाएँ

1. Paper **4.** Book **7.** Bag **8.** Pencil **9.** Science **12.** Chemistry **13.** Gym (physical education) **14.** Male Student **17.** Mathematics **19.** Exam **18.** Book Bag

ऊपर से नीचे

2. Calculator **3.** Biology **5.** Art **6.** Schedule / Time Table **10.** Chair **11.** Blackboard **12.** Eraser **14.** Female Student **15.** Color **16.** Class

मध्यमा - २ शब्द पहेली - २

घर का सामान

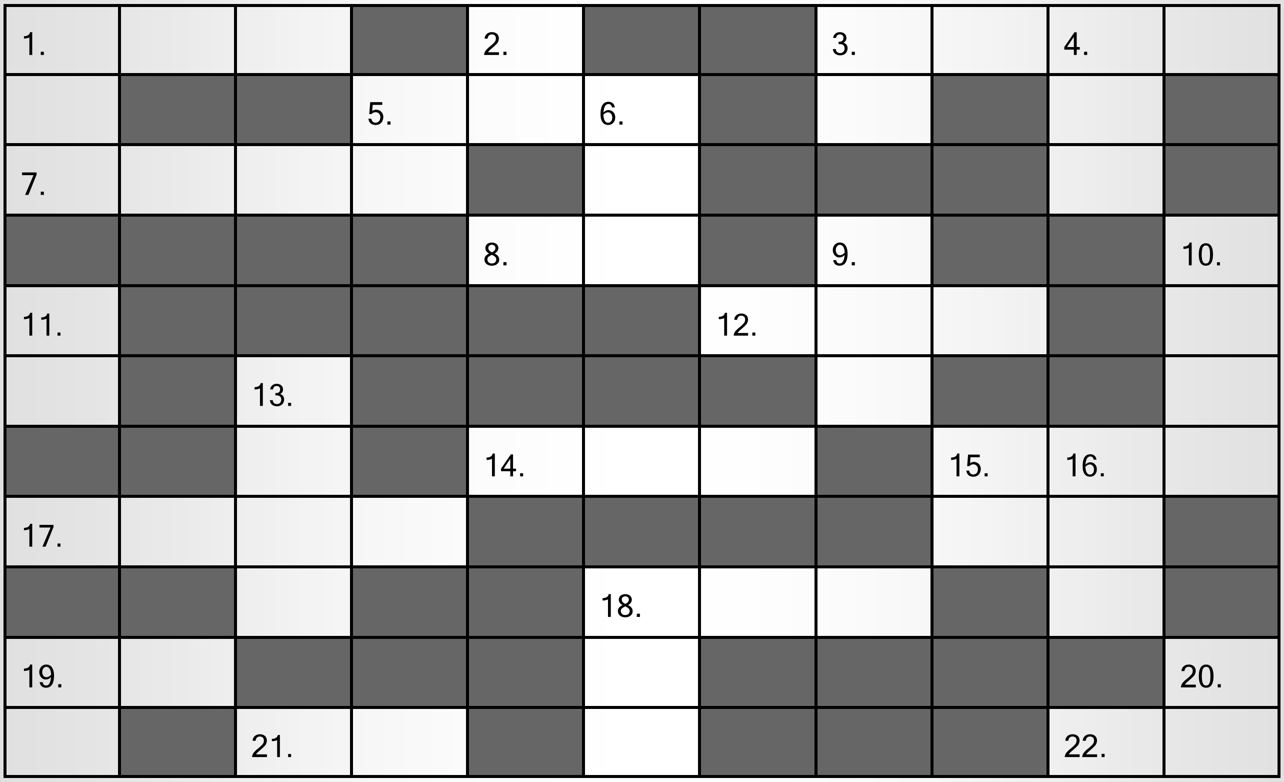

सांकेतिक शब्द

बाएँ से दाएँ

1. Bed 3. Utensils/Dishes 5. Bed Sheet/Sheet 7. Carpet 8. Needle 12. Towel 14. Clothes 15. Basket 17. Doormat 18. Sandals, Flip-Flops 19. Clock, Watch 21. Picture 22. Trunk, Suitcase

ऊपर से नीचे

1. Magazine 2. Glue 3. Light 4. Pillow 6. Comforter 9. Basket 10. Wardrobe 11. Shoes 13. Flower Pot/Vase 16. Blanket 18. Rug/Mat 19. House 20. Hook

2/3/13 Name - जैन्या मैंदीरत्ता

I-1A
एडिसन पाठशाला

मेरा मनपसंद रंग - निबन्ध

मेरा मनपसंद रंग गुलाबी रंग है। यह मेरा मनपसंद रंग इसलिए है, क्योंकि यह एक बहुत ही शांत और शीतल रंग है। यह रंग मुझे बहुत सारी खूब सूरत चीजों की याद दिलाता है, जैसे कि- सूर्यास्त, सुंदर फूल, बार्बी गुड़िया और मेरा मनपसंद फल तरबूज। गुलाबी रंग खुशी, कोमलता, दोस्ती, और प्रेम का प्रतीक माना जाता है।

कुछ लोगों का यह भी मानना है कि गुलाबी रंग क्रोध को काबू करने में सहायक होता है। लेकिन मेरे लिए सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि, इस रंग को देख कर मेरे चेहरे पर मुस्कान आ जाती है और मैं और मेरी माँ गुलाबी रंग के कपड़ों में बहुत सुंदर लगते हैं।

मेरा नाम विदुषी वशिष्ठ है। मैं साउथ ब्रंस्विक पाठशाला में उच्चतर स्तर की छात्रा हूँ। मुझे हिन्दी पढ़ना और लिखना अच्छा लगता है। हमारे स्तर पर हिन्दी में कविता लिखना सिखाया जाता है, जो मुझे बहुत प्रिय है।

आइये अब मैं आपको अपनी लिखी कविता दिखाती हूँ।

मेरा परिवार

एक दुसरे से करते है हम प्यार,
हाँ यह है मेरा परिवार।
मिलकर मनाते है हर त्योहार,
हाँ यह है मेरा परिवार।
एक दुसरे की मदद के लिये हम तैयार,
हाँ यह है मेरा परिवार।
मेहनत के लिये कभी ना इन्कार,
हाँ यह है मेरा परिवार।

मौत के बाद कौन सी चीज कितनी देर जिंदा रह सकती है।

हृदय :- १० मिनट

मस्तिष्क :- २० मिनट

आँखे :- ५ घंटे

त्वचा :- ५ दिन

हड्डियाँ :- ३० दिन

कर्म :- जन्मों जन्म तक

आरव जोशी Level - I।

मेरा मनपसंद रंग

मेरा मनपसंद रंग नारंगी है।
नारंगी सूर्य का रंग है और मुझे सूर्य पसंद है। मेरे नाम का अर्थ सूर्य की पहली किरण है।

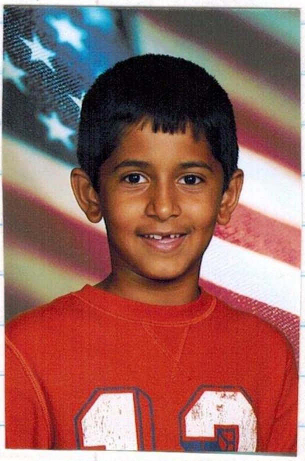

Shreyes Varde

मेरा मनपसंद खेल ~~श्रेयस~~

3/8/13

मेरा मनपसंद खेल है बास्केटबॉल। बास्केटबॉल कोर्ट पर दोनों टीमों से ५,५ खिलाड़ी मिलजुल कर खेलते हैं। ये खेल पूरे जग मे खेला जाता है। अमेरीका में लोग इस खेल को बहुत पसंद करते हैं। इस खेल की रचना डॉ जेम्स नेस्मित ने की है। मैं बास्केटबॉल का अच्छा खिलाड़ी हूँ और मैं एडिसन लीग में खेलता हूँ। मेरा मनपसंद टीम है हीट और मनपसंद खिलाड़ी है लेब्रोन जेम्स।

श्रेयस वर्दे

I-IA

एडिसन पाठशाला

ईशान कालरा I-1A
एडिसन पाठशाला

समुद्र मंथन

समुद्रमंथन एक पुरानी कथा है। सुरों को अजय करने के लिये अमृत रस की ज़रूरत थी जो केवल समुद्र मंथन से मिल सकता था। लेकिन इस काम मे काफी बल की जरूरत थी। अतः विष्णु भगवान ने असुरों को भी इस काम मे योगदान देने को कहा। अमृत रस पाने की इच्छा से असुर इस काम के लिये मान गये। सुरों और असुरों ने मिलकर समुद्र मंथन किया। इस मथन में काफी चीजे निकली जैसे कामधेनु गाय, ऐरावत हाथी, हलाहल आदि। सारी चीजे असुरों और सुरो मे बराबर-बराबर बाँट दी।

समुद्र मंथन

हलाहल एक बलशाली जहर था जिस को नष्ट करना जरूरी था। इस काम मे शिव जी ने मदद की। शिव भगवान ने इस हलाहल को पी लिया और अपने गले मे रखा जिस कारण उनका नाम नील कंठ पड़ गया। अंत मे समुद्र मंथन मे से अमृत रस निकला। विष्णु भगवान ने चाल चल कर सारा रस सुरों मे बांट दिया जिस से वह अमर हो गए।

इस कहानी से हमे दो शिक्षाएँ मिलती हैं। पहली शिक्षा है कि अच्छाई की हमेशा बुराई पर जीत होती है। दूसरी शिक्षा है कि जीवन मे मंजिल पाने से पहले बहुत मेहनत करनी पड़ती है और कभी-कभी जहर का सामना करना पड़ता है। लेकिन जहर के समय भगवान हमारी मदद करते हैं और हमें मंजिल तक पहुँचा देते हैं।

मोनरो हिन्दी पाठशाला कनिष्ठ-२ (२०१२-२०१३) कक्षा की सामूहिक परियोजना

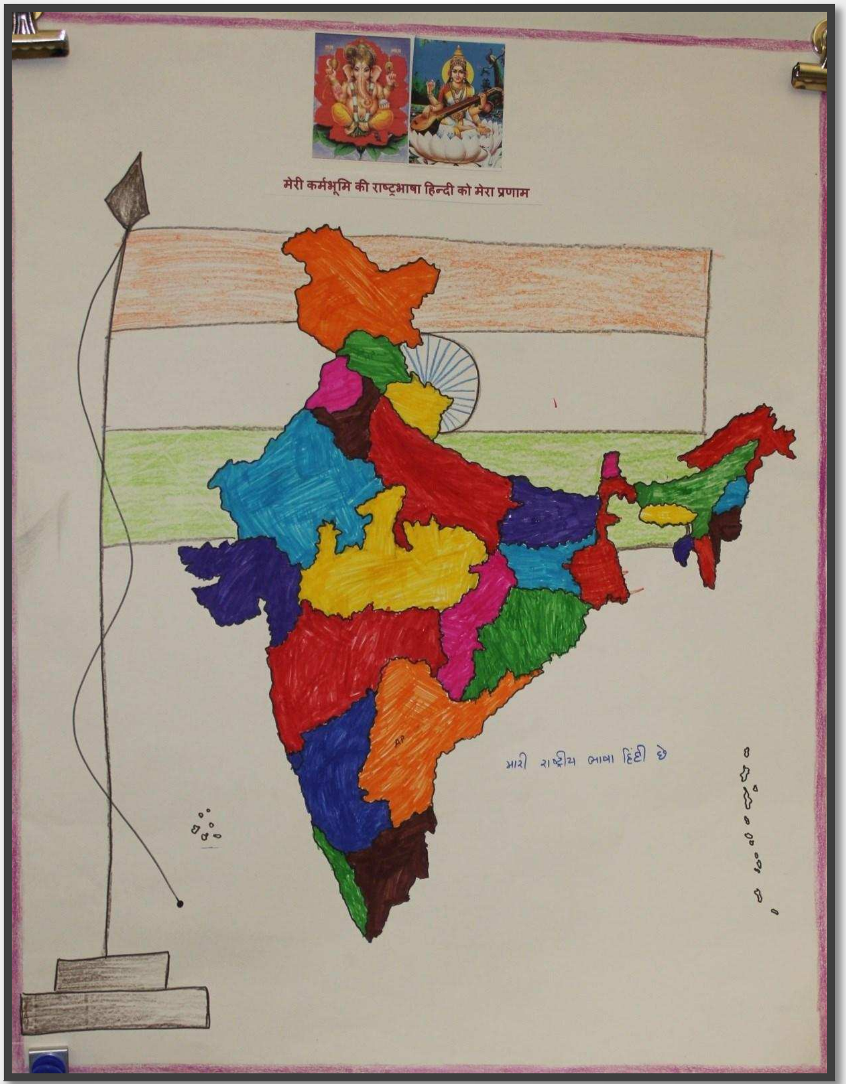

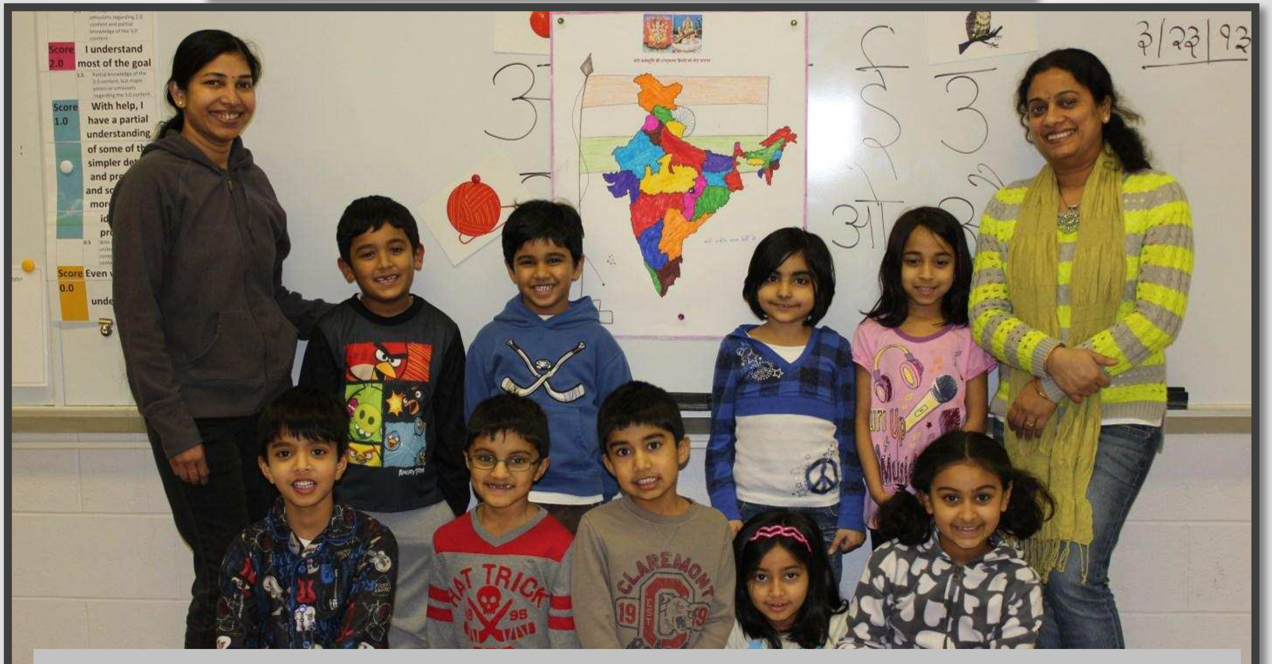

छात्रों ने भारत के २८ राज्य और ७ केन्द्र शासित प्रदेशों की पहचान कर उसमें रंग भरे।

भारतीय संस्कृति के तथ्य

धीरज बंसल

आज हम आपके साथ हमारे बच्चों की कलम से लिखे हुए कुछ भारतीय संस्कृति के तथ्य बाँटना चाहते हैं, शायद यह पढ़ने में आपको मामूली लगे पर विश्वास कीजिये की जिस स्तर की पढ़ाई ये कर रहे हैं उस स्तर पर इतना लिखना प्रशंसनीय है, और आज यह आपके साथ बाँटने में मुझे गर्व की अनुभूति हो रही है।

रूचि सुभेदार

साउथ ब्रंस्विक मध्यमा -१ बी

सैनिक

सैनिक अपने देश से बहुत प्यार करता है और मुश्किलों में देश की रक्षा करता है। सैनिक में बहुत साहस होता है। - **अनिरुद्ध मंडोवरा**

मोर

भारत का राष्ट्रीय पक्षी मोर है, मोर बहुत खूबसूरत है।

- **सुभेदार आन्या**

अतिथि

हमारे हिंदू धर्म में बताया गया है कि हर इंसान में भगवान बसते हैं, इसीलिये घर में आए अतिथि को भगवान रूप मानकर स्वागत करना चाहिए। जैसे श्री कृष्ण जी ने घर आए सुदामा का स्वागत किया था, वैसे ही हमें भी बिना अमीर-गरीब देखे, घर आए अतिथि का स्वागत करना चाहिए। - **समर्थ भारद्वाज**

रेलगाड़ी

रेलगाड़ी बहुत तेज चलती है। रेलगाड़ी हमें एक जगह से दूसरी जगह ले जाती है, रेलगाड़ी को हम लोहपथगामिनी भी कहते हैं। - **शैली गरोडिया**

सूरज

सूरज की किरणों से हमें रोशनी और ऊर्जा प्राप्त होती है। सूरज को जल चढ़ा कर सूर्य नमस्कार करना चाहिए। - **सिद्धि चंद**

होली

होली रंगों का त्यौहार है। होली फागुन मास के महीने में मनायी जाती है। होली के दिन होलिका जलाई जाती है और दूसरे दिन हम अपने मित्रों और रिश्तेदारों पर रंग लगाकर और मिठाई खिलाकर होली मनाते हैं। हर साल होली पर मैं अपने परिवार और मित्रों के साथ द्वारकाधीश मंदिर जाता हूँ। हम वहाँ पर होलिका दहन करके एक दूसरे पर रंग लगाते हैं और खूब होली खेलते हैं। होली पर मेरी मम्मी अच्छे-अच्छे पकवान बनाती है। मुझे होली का त्यौहार बहुत पसंद है। - **श्रेय जैन**

तिलक

तिलक रोली से लगाया जाता है। मैं राखी पर अपने भाई को तिलक करती हूँ।

- **इशिका माहेश्वरी**

दिवाली

दिवाली के शुभ अवसर पर आप सब को शुभकामनाएँ। दिवाली दीपकों और खुशियों का त्यौहार है। घरों में माँ लक्ष्मी की पूजा होती है। इस दिन श्री राम जी चौदह वर्ष के वनवास के बाद अपने घर लौटे थे। इस खुशी में सबने अपने घरों में दिए जलाये। आज भी हम इस पर्व को दिए जलाकर मानते हैं। इस दिन घरों में कई तरह की मिठाई और पकवान बनते हैं। रात को पूजा करने के बाद पटाखे छोड़ते हैं। इस दिन कुछ लोग अपने दोस्तों और परिवार से मिलने जाते हैं। चारों तरफ ख़ुशी का माहौल रहता है। - **प्रोनोय नंदी**

गुण

अच्छे गुण हमारे जीवन में बहुत जरूरी हैं। वे हमें सही और गलत की पहचान करवाते हैं। - **रुशिल मल्लारापूस**

गाय

भारत में गाय को माँ माना जाता है। हम गाय की पूजा करते हैं।

- **रेचल रेबेलो**

तुलसी

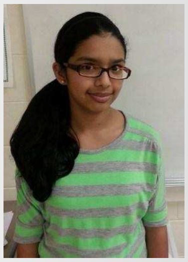

तुलसी एक महत्त्वपूर्ण पावन पौधा है। भारत में तुलसी को घर के आँगन में लगाने की प्रथा हज़ारों साल पुरानी है। इसमें औषधीय गुण पाए जाते हैं जिसकी वजह से यह स्वास्थ्य के लिए बहुत उपयोगी होती है। तुलसी की पूजा करने से घर में सुख -समृद्धि और धन की कोई कमी नहीं होती। - **खुशी प्रसाद**

खीर

खीर बहुत मीठी होती है, खीर का रंग सफ़ेद होता है। सफ़ेद रंग शांति और पवित्रता का प्रतीक है। भगवान को प्रसाद में खीर चढ़ाते हैं। मेरी माँ मेरे जन्मदिन पर खीर बनाती है। - **अनिका मेनन**

रोटी

भारतीय भोजन में रोटी का मुख्य स्थान है। रोटी के बिना भारतीय भोजन अधूरा मन जाता है। रोटी गेहूँ के आटे से बनती है। गेहूँ की सबसे ज्यादा उपज भारत में होती है। - **शेली सिंघवी**

कपूर

मंदिरों में कपूर से आरती की जाती है। कपूर की खुशबू जलने से पहले और जलने के बाद दोनों ही सुगंधमय होती है। कपूर को जलाने से घर शुद्ध हो जाता है। - **तनिका सुरेश**

चावल

चावल को सभी अनाजों में सबसे अधिक पवित्र माना गया है। इसे अक्षत भी कहा जाता है। भगवान की पूजा चावल के बिना अधूरी है। - **वीनीला नाग्माला**

हार

हार के बिना पूजा और अर्चना दोनों ही अधूरे हैं। हार के बिना श्रृंगार भी अधूरा है।

- तन्वी भोले

नॉर्थ ब्रंस्विक हिन्दी पाठशाला

बच्चों के विचार

शिक्षकों और अभिभावकों की लेखनी द्वारा

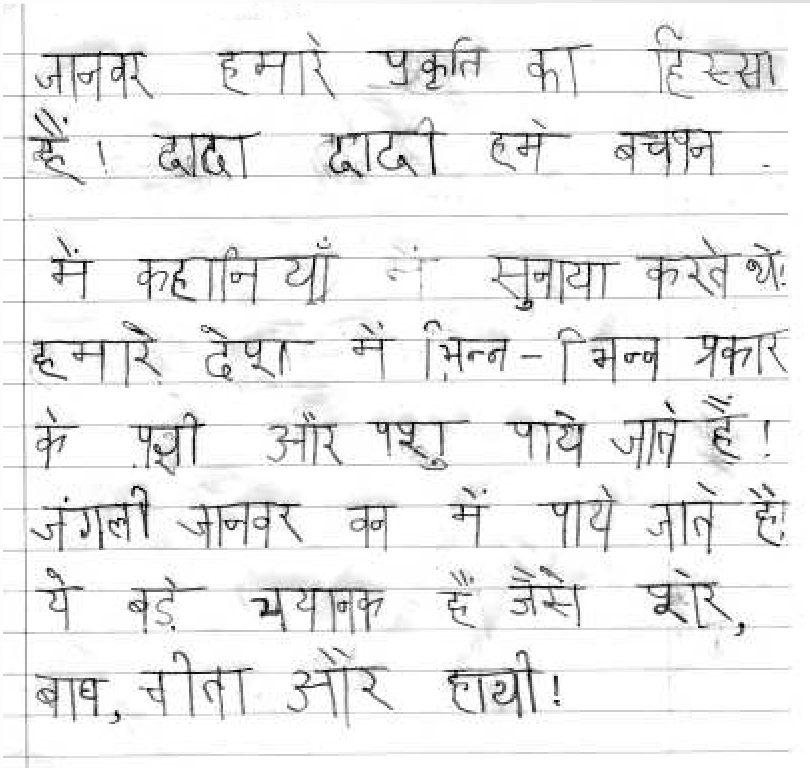

जानवर हमारे प्रकृति का हिस्सा हैं। दादा दादी हमें बचपन में कहानियाँ सुनाया करते थे। हमारे देश में भिन्न-भिन्न प्रकार के पक्षी और पशु पाये जाते हैं! जंगली जानवर वन में पाये जाते हैं। ये बड़े भयानक हैं जैसे शेर, बाघ, चीता और हाथी!

मेरा नाम पनुन रैना है। मैं हिन्दी यू.एस.ए. में प्रथमा-१ का छात्र हूँ। भारत की मातृ भाषा हिन्दी और भारत में पाये जाने वाले कुछ जानवरों के चित्र और उनका वर्णन किया है। दूसरा प्रोजेक्ट भारत की राष्ट्र भाषा के विषय में है। हिन्दी बहुत प्यारी और मीठी भाषा है।

मेरा नाम आर्य बलानी है। मेरे प्रोजेक्ट में मेरे देश भारत का नक्शा दिखाया गया है। इस नक्शे पर भारत के सभी प्रांत अलग-अलग रंगों में दिखाये गए हैं। मैंने सभी प्रान्तों के पहले अक्षर को हिन्दी भाषा में दिखाने की कोशिश की है। भारत में २७ प्रांत हैं, सभी प्रान्तों की भाषा, खान-पान, पहनावा अलग है। इनमें भिन्नता होते हुए भी बहुत समानता और एकता है। इसकी राष्ट्र भाषा हिन्दी है जो सभी को एक सूत्र में पिरोये और बांधे हुए है। इसके सभी प्रान्तों में से सबसे बड़ा प्रांत मध्य-प्रदेश है। मेरा जन्म पुणे में हुआ, जो कि महाराष्ट्र प्रांत का हिस्सा है।

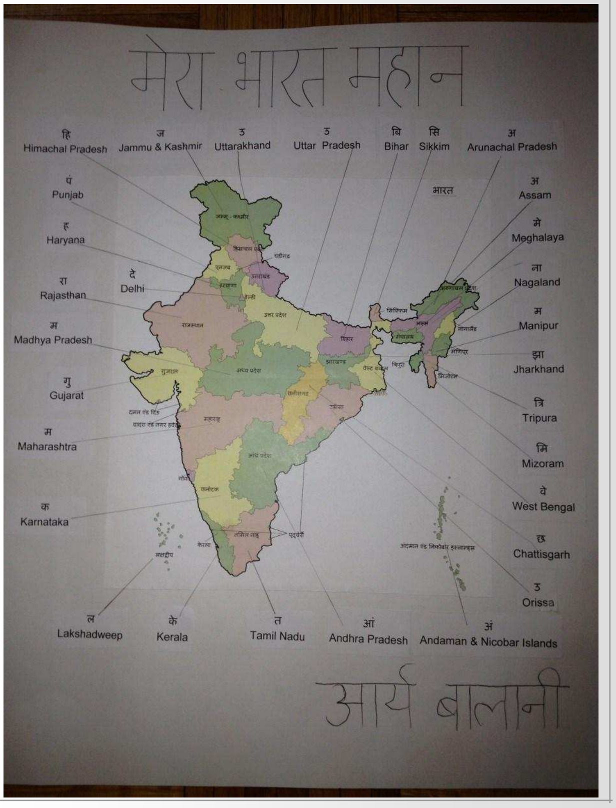

हमारा त्योहार दीपावली

मेरा नाम आर्यन है और यह मेरा छोटा भाई अशविन है। हम दोनों भाई हिन्दी यू.एस.ए में कनिष्ठ-१ कक्षा में पढ़ते हैं। हम दोनों ने मिलकर यह दीपावली के चित्र बनाये हैं। हमें हिन्दी कक्षा में बहुत अच्छा लगता है। हमने हिन्दी स्कूल में दीपावली मनाई थी। हमारी कक्षा ने मिलकर गुब्बारों के साथ नृत्य किया था। मेरी बड़ी बहन ने हमारी तस्वीर खींची और मेरे मम्मी-पापा ने भी हम सबकी बहुत तस्वीरें खींची। हमें बहुत मज़ा आया। हम हर साल ऐसे ही दिवाली मनायेंगे।

मेरा नाम अनन्या है। मैं हिन्दी यू.एस.ए. में कनिष्ठ-२ कक्षा में पढ़ती हूँ। मुझे हिन्दी पढ़ना, भारतीय त्यौहार मनाना और भारतीय परिधान पहनना बहुत पसंद है।

दीपावली प्रस्तुति

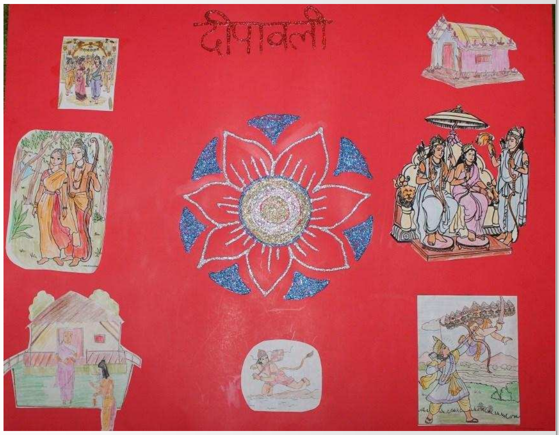

भारत में दीपावली बड़े हर्ष और उल्लास के साथ मनायी जाती है। माना जाता है कि दीपावली की शुरुवात अयोध्या में हुई थी, जब राम और सीता वनवास से वापस लौट कर आये थे। यहाँ चित्रों के द्वारा रामायण की कथा प्रस्तुत की गई है और रंगोली बनायी है जो कि दीपावली का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है।

अनेकता में एकता की झलकियाँ

दुनिया में शायद भारत ही अकेला ऐसा देश होगा जहाँ इतनी सारी पौशाकें और भाषाएँ हैं। अलग-अलग होते हुए भी इनमें समानता झलकती है जो हमारी सांस्कृतिक एकता को प्रदर्शित करती है। यहाँ हमने भिन्न-भिन्न प्रांतों की पोशाकें पेश की हैं।

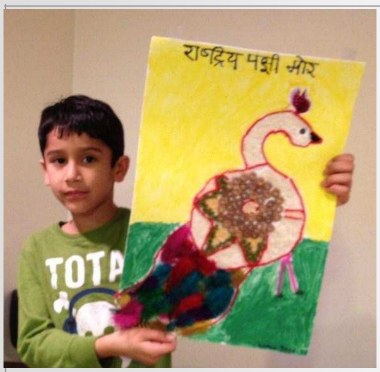

मेरा नाम आदित्य है। मैं हिन्दी यू.एस.ए. की नॉर्थ ब्रंस्विक पाठशाला में कनिष्ठ-२ का विद्यार्थी हूँ। मुझे मेरी कक्षा में बहुत मज़ा आता है। मैं हिन्दी बोल सकता हूँ और अब लिखना-पढ़ना भी सीख रहा हूँ।

मोर

मोर भारत का राष्ट्रीय पक्षी है। मोर भारत के सभी राज्यों में नहीं पाये जाते हैं। इन्हें भारत के राजस्थान में बहुत आसानी से देखा जा सकता है। मोर के पंख बहुत ही रंग-बिरंगे और लंबे होते हैं। जब बारिश में यह खुश होकर पंख फैलाकर नाचता है तब बहुत ही सुंदर लगता है। मोर दुनिया का सबसे सुंदर पक्षी है। मुझे भी मोर के पंख और इसका नाच बहुत पसंद है। मैंने यह मोर का चित्र अपने हाथों से बनाया है। इसमें मैंने दालों, चावल, रंगों एवं पंखों का प्रयोग किया है। भगवान कृष्ण अपने मुकुट में मोर पंख पहनते थे।

◆ ◆

भारत यात्रा : एक रोमांचक अनुभव

मेरा नाम काव्या और मेरे भाई का नाम विविन अग्रवाल है। हम दोनों बहन-भाई नॉर्थ ब्रंस्विक हिन्दी यू.एस.ए. पाठशाला में हिन्दी सीखने जाते हैं। हम कनिष्ठ-२ के छात्र हैं। यहाँ हम अपने भारत भ्रमण के कुछ अनुभव प्रस्तुत कर रहे हैं।

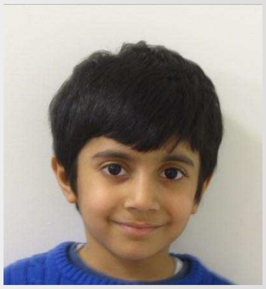

पिछले वर्ष हम दिवाली का त्यौहार अपने परिवार के साथ मनाने भारत गए। हमारे परिवार में दादा-दादी, चाचा-चाची, चचरे भाई और बाकी रिश्तेदार हैं। दीपावली पर हमने दीये जलाए और लक्ष्मी पूजन किया। पूजन के बाद हमने पटाखे फोड़े और ढेर सारी मिठाई खाई। दिवाली के बाद हम गुजरात में स्थित गिर राष्ट्रीय वन घूमने गए। यहाँ पर ४११ एशियाई शेर रहते हैं। ऐसा माना जाता है कि पूरी दुनिया में एशियाई शेरों का यहाँ एकमात्र वास है। हमने और भी बहुत सारे जानवर जैसे चीता, लंगूर, बंदर, भालू और हिरण देखे। हमने दो बार सफारी का दौरा भी किया। पहले दिन हमने शेर को पानी पीते देखा और दूसरे दिन दो शेरनियों को गाय का शिकार करते देखा। यह बहुत ही अनोखा अनुभव था।

इसके बाद हम नाना-नानी के घर गये। वहाँ पर हम अपने मौसा-मौसी, मामा-मामी और मौसेरे-ममेरे भाई-बहनों से मिले। हम सबने मिलकर बहुत मस्ती की। तीन सप्ताह की मजेदार छुट्टी बिताकर हम अमेरीका वापिस आ गये, इस उम्मीद के साथ कि हम फिर जल्दी ही भारत घूमने जाएँगे, अपने परिवार के साथ समय बिताएँगे और किसी दूसरी जगह का अनुभव करेंगे।

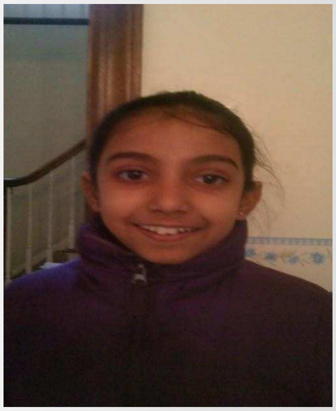

मेरा नाम अरीया मेहरा है। मैं हिंदी सीख रही हूँ जो भारत की राष्ट्रीय भाषा है। इसीलिए मैं भारत के बारे में जानना चाहती थी। हर देश का अपना झंडा, पशु, पक्षी, फल, फूल और पहनावा होता है, जो दूसरे देशों से अलग होता है। मैं जानना चाहती थी कि भारत में यह सब कैसा है। मैंने जाना कि भारत के झंडे का रंग नारंगी, सफ़ेद और हरा है। सफ़ेद हिस्से में अशोक चक्र है जिस में २४ रेखाएँ हैं। यह हमें सिखाती है कि हमें अपने देश के लिए दिन में २४ घंटे सोचना चाहिए। बाघ, मोर, आम और कमल भारत के राष्ट्रीय चिन्ह हैं। भारत का ताजमहल सारी दुनिया को प्यार का सन्देश देता है। राष्ट्र पिता महात्मा गांधीजी ने भारत को आज़ादी सत्य और अहिंसा से दिलाई। यह भी सब को सिखाता है की सत्य और प्रेम से सब को जीता जा सकता है। भारत का अपना एक पहनावा है जो बहुत अलग है। वहाँ लड़कियाँ साड़ी पहनती हैं और लड़के कुर्ता-पजामा बड़े शौक से पहनते हैं। वहाँ लोग बहुत सारे त्यौहार बड़े उत्साह से मानते हैं। जैसे होली, दिवाली, ईद, नाताल और दशहरा। होली में रंग होते हैं, दिवाली में दिये, ईद का चाँद, नाताल में जगमगाता तारा और दशहरा पर जलता है रावण। हर त्यौहार की अपनी एक अलग निशानी और हर त्यौहार अच्छाई का स्वागत और बुराई की हार दिखाता है। मैं ये सारी बातें अभी हिंदी में नहीं बोल या लिख सकती हूँ। मैंने यह सब इंग्लिश में लिखा और जो शब्द मुझे आते हैं वे मैंने हिंदी में कहे, फिर मेरी मम्मी ने उसका अनुवाद किया।

साऊथ ब्रंस्विक हिन्दी पाठशाला

पुनिता वोहरा सोनाली राव

निम्नलिखित लेखों में साऊथ ब्रंस्विक हिंदी पाठशाला, मध्यमा - २ के विद्यार्थियों ने ग्रहण किए गए शब्द-कोश के ज्ञान को संक्षिप्त में प्रस्तुत किया है। बच्चों ने मिठाइयों, फलों तथा जानवरों के बारे में अपने विचार प्रस्तुत किए हैं।

जब मैं भारत जाती हूँ, मैं बहुत मिठाई खाती हूँ। मीठे खाने में कुछ जलेबी, गुलाब जामुन, और लड्डू है मेरी मनपसंद मिठाई जलेबी है। मैं दिवाली पर, बहुत मिठाई खाती हूँ।

नित्याश्री बालाजी

खीर

मनीशा और उसके भाई ने खीर खायी। दोनों को खीर बहुत पसंद आई। उस दिन दिवाली थी, तो खाने के बाद दोनों ने पटाखे जलाए। दिवाली के दिन, हम लक्ष्मी पूजा भी करते हैं।

-Nandika Bathula

दिवाला की मिठाई

एक दिन भारत में, मैं दुकान पर गयी। मैंने दुकानदार को नमस्ते किया। फिर मैंने तीन लड्डू और चमचम लिये। मैंने धन्यवाद किया और घर की तरफ चलना शुरू किया।

ईशा थापर

दिवाली पर बहुत लोग बालूशाही, खीर, इमरती, चमचम और गुलाब जामुन खाते हैं। अच्छे दिन पर लोग पार्टी में मिठाईया और पेय पदार्थ रखते हैं। मिठाईया अच्छी हैं।

श्रीनिधी गडुला

आम:

भारत आमों का देश है। मुझे आम बहुत पसंद है। मेरी माँ आम की लस्सी बनाती है। ताजे आम की लस्सी बहुत स्वादिष्ट होती है।

मनीषा कंनन

मिठाइयाँ बहुत रंग और आकार की होती हैं। बर्फी का रंग भूरा है। लड्डू का रंग नारंगी है। चमचम का रंग गुलाबी और सफेद है। कलाकंद का रंग पीला है और आकार गोल।

आभा थापर

साऊथ ब्रंस्विक हिन्दी पाठशाला - मध्यमा २

मेरी माँ ने तीन लड्डू बनाए और कहा की कल खाना। लेकिन मेरी बहन सुनती नहीं हैं और उसने लड्डू खाया। माँ बहुत नाराज होगयी और उन्होंने और एक लड्डू बनाया।

- आकाश महेश

भारत

मैंने भारत में बहुत यात्रा की। मैं ताज महल को देखने के लिए गयी थी। ताज महल बहुत सुंदर है। बाहर मैं अपने परिवार के साथ एक हाथी पर बैठी। मैंने बहुत मजा किया।

- स्मिरल भगत

गुलाब जामुन 1/25/13

Gulab Jamun By: Ambar Gautam

गुलाब जामुन बहुत सवाद है। हम गुलाब जामुन दिवाली पर खाते है। गुलाब जामुन का रंग भूरा है। मैं दिवाली पे बहुत सारी गुलाब जामुन खाती हूँ।

दिवाली के दिन मेरी माँ बहुत सारी मिठाई बनाती हैं। गुलाब जामुन मालपुआ, लड्डू, हलवा, गुझिया, चमचम, काजू कतली और जलेबी मुझे बहुत पसन्द हैं।

रश्मि अनंत

मेरा नाम नारंगी है। मेरे पापा का नाम सेब है। मेरी मा का नाम केला है। मेरी त्वचा का रंग नारंगी है, मेरे पापा की त्वचा दो रंग की है, लाल और हरी। मेरा नाम नारंगी है, और मेरे परिवार को सबने खा लिया। अब मैं अनाथ हूँ।

-ऐशवर्या रामासामी

केला का रंग पीला है। मेरा मन पसंद फल सेब है। मंदिर मे हमे प्रसाद देते है। प्रसाद मे बादम, काजू, अखरोट, किशमिश है। हिन्दी मे Dry Fruits को मेवे। Fruits को फल कहते है

अतितेज भारद्वाज

बिल्ली और चूहा भागते थे। चूहा अपने घर मे गया। चूहे ने एक तरकीब बनाई। चूहा अपने जैसा चूहा खिलौना लाया। चूहे ने खिलौने को चलाया। बिल्ली ने खिलौने का पीछा किया। बिल्ली दरवाजे से बाहर चली गई। - परम शाह

आर्यित श्याडम

सेब लाल रंग का है।
लाल सेब बहुत मीठा और हरा सेब खट्टा होता है।
रोज एक सेब खाओ, डाक्टर को दूर भगाओ
सेब मे बहुत सारे विटामिन्स है, जो सेहत के लिए अच्छे है।

मोनरो हिन्दी पाठशाला

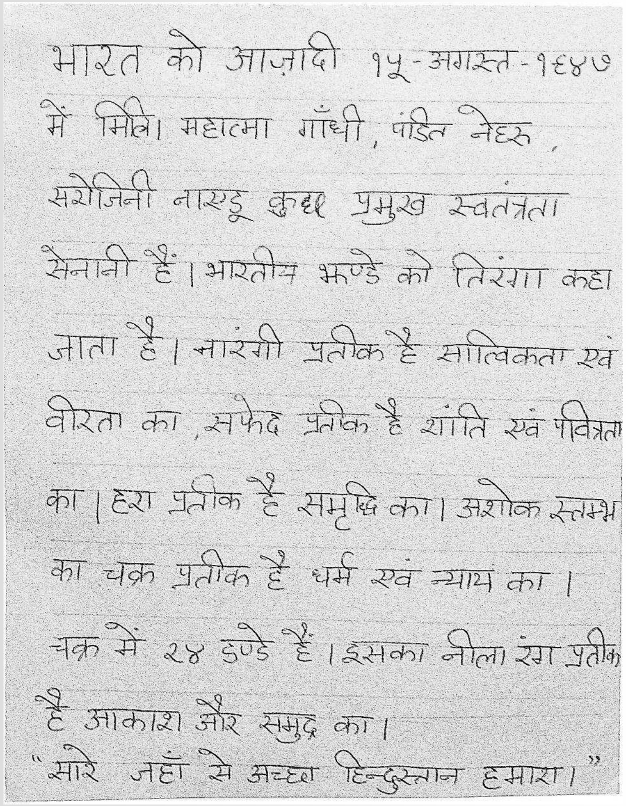
भारत को आज़ादी १५-अगस्त-१९४७ में मिलि। महात्मा गाँधी, पंडित नेहरू, सरोजिनी नाय्डु कुछ प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी हैं। भारतीय झण्डे को तिरंगा कहा जाता है। नारंगी प्रतीक है सात्विकता एवं वीरता का, सफेद प्रतीक है शांति एवं पवित्रता का। हरा प्रतीक है समृद्धि का। अशोक स्तम्भ का चक्र प्रतीक है धर्म एवं न्याय का। चक्र में २४ डण्डे हैं। इसका नीला रंग प्रतीक है आकाश और समुद्र का।
"सारे जहाँ से अच्छा हिन्दुस्तान हमारा।"

प्रथमा एक के विद्यार्थियों ने भारतीय स्वतंत्रता दिवस पर चर्चा करी। उन्होंने कुछ प्रमुख स्वतंत्रता सेनानियों के नाम जाने। हमारी स्वतंत्रता का प्रतीक हमारा तिरंगा झंडा है। उन्होंने इसके रंगों का अर्थ एवं चक्र का महत्व सीखा। हमारी विद्यार्थी रश्मि कापसे ने इस विषय में एक निबन्ध भी लिखा। सभी ने मिलकर झंडे में रंग भरे और कुछ पंक्तियाँ भी लिखी। हमने उनका अनुवाद करके लिखा।

विद्यार्थी: रश्मि कापसे, अनघा मुसाले, अनुषा गुप्ता, सौन्या हर्जानी, काव्या भट्ट, अवनि पचगढ़े, रेने रेड्डी, श्रेया ढिल्लों, कृष सक्सेना, प्रियंका रंगनाथ, संहिता ठेला, क्लोई कथूरिया, कृतिका वसिरेड्डी, अचल मुक्केपेटी, अनिरुद्ध सतीश

अध्यापिकाएँ: नीलम गुप्ता, वन्दना ढिल्लों

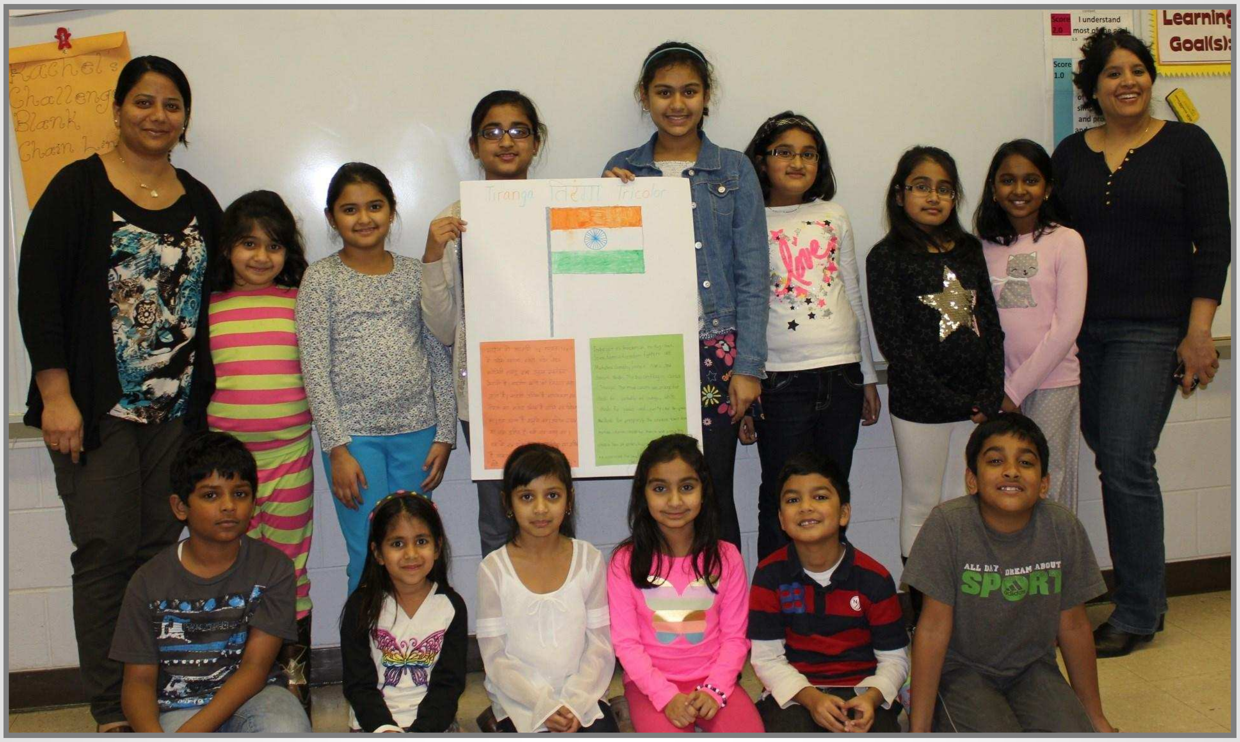

वुडब्रिज कनिष्ठा-२ की कक्षा

वीनस जैन

हिंदी यू.एस.ए. संस्था की वुडब्रिज हिन्दी पाठशाला से मैं एक अभिभावक के रूप में जुड़ी थी। उसके अगले ही साल मैंने कनिष्ठ-१ स्तर के बच्चों को पढ़ाना आरम्भ किया और अब तीन साल से पढ़ा रही हूँ। प्रतिवर्ष मेरा अनुभव अलग, अच्छा और जोशीला रहा है। बच्चों का उत्साह देखते ही बनता है। इस बार हमने दिसम्बर प्रोजेक्ट के लिए फल, जानवर और भारत का झंडा बनाने का निश्चय किया, तो बच्चों ने अपने आप ही झंडा बनाया, रंग भरे और अपना नाम भी लिखा। बच्चों की जिज्ञासा को देखते हुए हमें भी हर बार नए-नए तरीके से पढ़ाने की प्रेरणा मिलती है, और हर शुक्रवार की प्रतीक्षा रहती है। मुझे गर्व है कि मैं वुडब्रिज हिन्दी पाठशाला की एक शिक्षिका हूँ। मेरा बेटा भी अभी से चाहता है कि उच्च स्तर-२ की शिक्षा के बाद वह भी मेरी सहायता करेगा। यह बहुत ही गर्व की बात है कि हम अपनी भाषा व संस्कृति को आने वाली पीढ़ी तक सहजता से पहुँचा पा रहे हैं। शिक्षक को सबसे अधिक प्रसन्नता तब होती है जब उसके विद्यार्थी कक्षा में आने के लिए तत्पर तो रहते हैं, परंतु कक्षा समाप्त होने के बाद भी कहें कि बस!! हमें तो और पढ़ना है। ऐसा ही हर शुक्रवार हमारे साथ होता है। समय का पता ही नहीं चलता कि एक घंटा कैसे बीत गया। बच्चे अच्छे से व रुचि से हिन्दी सीख लें, इसी में हमारी सफलता है। मैं यहाँ मेरे एक विद्यार्थी द्वारा लिखी कुछ पंक्तियाँ भी भेज रही हूँ। मेरे लिए बहुत ही गर्व की बात है कि बच्चे बहुत उत्साह से हिन्दी पढ़ने आते हैं।

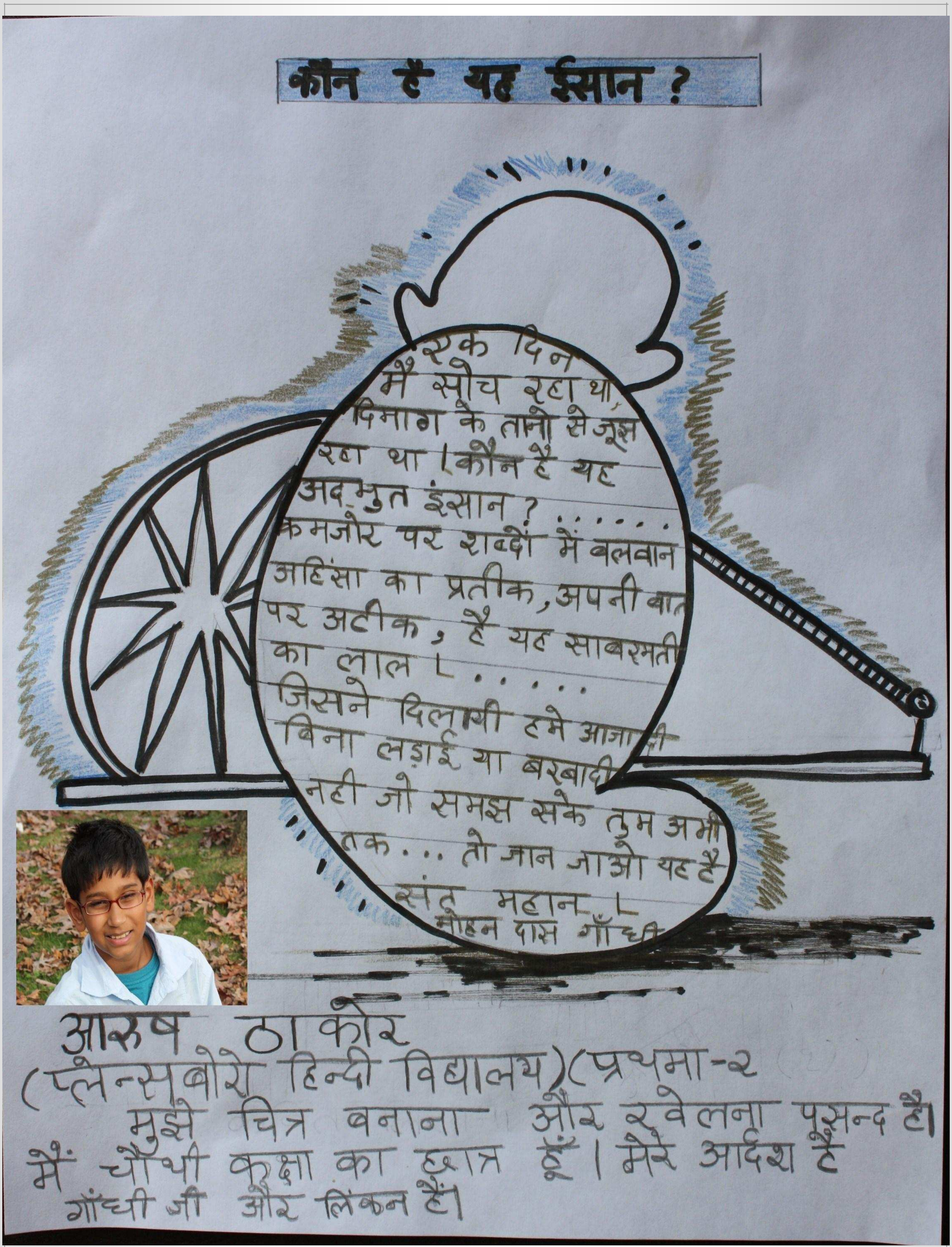
कौन है यह इंसान ?
एक दिन
मैं सोच रहा था,
दिमाग के तारों से जूझ
रहा था। कौन है यह
अद्भुत इंसान? ......
कमजोर पर शब्दों में बलवान
अहिंसा का प्रतीक, अपनी बात
पर अटीक, है यह साबरमती
का लाल। .....
जिसने दिलाई हमे आजादी
बिना लड़ाई या बरबादी
नहीं जो समझ सके तुम अभी
तक... तो जान जाओ यह है
संत महान।
मोहन दास गाँधी
आरुष ठाकोर
(प्लेन्सबोरो हिन्दी विद्यालय)(प्रथमा-२
मुझे चित्र बनाना और खेलना पसन्द है।
मैं चौथी कक्षा का छात्र हूँ। मेरे आर्दश है
गाँधी जी और लिंकन हैं।

पहेलियों के उत्तर

क्रिकेट पहेली

																पी	
					स						न	ठा	प	फ	सु	यू	
					चि											ष	
	र	वि	चं	द्र	न	अ	श्वि	न								चा	
	मा				तें							आ		ना		व	
	कु				दु								शी	रै		ला	
	ण				ल					म		वी		श			
	वी				क					हें	रें			रे	ने		
श्री	प्र				र				ली	द्र				सु		ह	
सं		ह						ह	स	सिं							रा
त			सिं				को	ह		ह							ल
				ज		ट	वा			धो							टे
					रा	ग				नी							प
				वि		व							न				फ
							यु					खा					ना
										ह	र	भ	ज	न	सिं	ह	मु
गौ	त	म	गं	भी	र					ही							
									ज								

मध्यमा - २ शब्द पहेली १

1. का	2.ग	ज			3.जी		4.पु	स्त	5.क
	ण		6.स		व			7.थै	ला
	8.क	ल	म		9.वि	ज्ञा	न		
10.कु			य		ज्ञा				11.श्या
र्सी		12.र	सा	य	न		13.व्या	या	म
		ब	र						प
		ड़	णी		14.छा	त्र			ट
15.रं					त्रा			16.क	
17.ग	णि	त		18.ब		19.प	री	क्षा	
				स्ता					

मध्यमा - २ शब्द पहेली २

1.प	लं	ग		2. गों			3. ब	र	4. त	न
त्रि			5. चा	द	6. र		ती		कि	
7. का	ली	न	बी		जा				या	
				8. सु	ई		9. ड			10. अ
11. जू						12. तौ	लि	या		ल
ते		13. फू					या			मा
		ल		14. क	प	ड़े		15. टो	16. क	री
17. पा	य	दा	न					पी	म्ब	
		न			18. च	प्प	ल		ल	
19. घ	ड़ी				टा					20.खूँ
र		21.चि	त्र		ई				22. पे	टी

Law Firm of Sabina Dhillon, LLC

Where doing the best for our client, is the motto by which we practice law.

Admitted to New Jersey & New York State Bars. Over 15 years of domestic legal experience, with additional experience and standing to practice in India.

Areas of Practice:

Real Estate Transactions (Residential and Commercial)

Wills, Trusts & Estate Planning

Contract Law

Commercial Law

Corporate Law

Civil Litigation

Bankruptcy

Criminal Defense

Immigration

Sabina Dhillon, Esq.
Phone: 609-232-2623
Fax: 609-232-8563
Email: sabina.dhillon@gmail.com

Offices Located at:
103 Carnegie Center, Suite 300
Princeton, NJ 08540
www.dhillonlawyer.com

WE COULDN'T BE MORE EXCITED ABOUT THIS MESSAGE

Yes, WE ARE GROWING

Yes, WE ARE HIRING

Even in this economy

To Find Out How You Can Bring Your Career to **LIFE** Contact me Today

Thevan Theivakumar, CLF®

Sr. PARTNER, New Jersey Sales Office

(732) 744-3763

ntheivakuma@ft.newyorklife.com

www.ThevanTheivakumar.com

EOE.M/F/D/V

WE STAND STRONG

JOIN OUR TEAM

NEW YORK LIFE

454352 CV 8/19/2013

The Company You Keep®

New York Life Insurance Company 399 Thornall Street, 7th Floor Edison, NJ 08837